الدلائل والبينات على حكم مكبر الاصوات

मशीनी नमाज़

www.jannatikaun.com

लौडिस्पीकर पर इक़्तेदा-ए-नमाज़
के ना जाइज़ होने का सुबूत

اَلدَّلَائِل وَالْبَیِّنَات عَلٰی حُکْمِ مُکَبِّرِ الْاَصْوَات

अद्दलाइलो व बय्यीनात अला हुक्मे मुकब्बिरिल असवात

المعروف بہ

मशीनी नमाज़

:: मसन्निफ़ (लेखक) ::

मुहम्मद फ़ारुक़ ख़ाँ रज़वी

:: हस्बे हुक्म ::

हज़रत अल्लामा फख़रुद्दीन अहमद क़ादरी मिस्बाही

:: हस्बे फ़रमाईश ::

अब्दुल मतीन रज़वी

नाम किताब : मशीनी नमाज़
मुसन्निफ़ : मुहम्मद फ़ारूक ख़ाँ रज़वी
नाशिर : अंजुमने गौसिया रज़विया,
भालदारपूरा, नागपूर.

तक़रीज़े जलील

ख़ातेमुल अकाबिर, उम्दतुल मोहक़्क़ेक़ीन, बदरुल ओलमा, शम्सुल फ़ुक़हा, ख़लीफ़ा-ए-हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द, मुफ़्ती-ए-आज़म महाराष्ट्र

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती **गुलाम मुहम्मद खॉं** साहब रहमतुल्लाह अलैह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ تَعَالٰى وَنُصَلِّىْ وَنُسَلِّمُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

मोहिब्बुल इज़्ज़ जनाब मुहम्मद फ़ारूक़ खॉं साहब रज़वी नागपूरी حَفِظَهُ اللّٰهُ الْمَوْلٰى الْقَوِىُّ عَنِ الشَّرِّ الْجَلِىِّ وَالْخَفِىِّ का येह मुबारक रिसाला "अदलाइलो व बय्यीनात अला हुक्मे मुकब्बिरिल असवात" अलमअ़रूफ़ बेही "मशीनी नमाज़" ग़ौर से देखा । मौसूफ़ ने हैरत अंगेज़ तौर पर किसी दीनी फ़ाज़िल मोहक़्क़िक़ की तरह दलाइले मन्क़ूला व मअ़कूला से सेहत के साथ तहक़ीक़ की है और साबित किया है कि लौडिस्पीकर की आवाज़ पर नमाज़ में इक़्तिदा ना जाइज़ बिदअ़त यहाँ तक कि मुफ़सिदे नमाज़ (नमाज़ के न होने का सबब) है, और लौडिस्पीकर लगाने वालों के लिये हिले बहाने के तमाम रास्ते बन्द कर दिये हैं और कसीर (बड़ी) जमाअ़त की सूरत में किस तरह शरअ़न नमाज़ अदा की जाती है इसको वाज़ेह् (ज़ाहिर) कर दिया है ।

सही यही है कि लौडिस्पीकर पर इक़्तिदा से नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी और नमाज़ जूँ कि तूँ ज़िम्मे में रह जाएगी ।

अहबाबे अहलेसुन्नत से हमारी गुज़ारिश है कि वोह इस रिसाले का अच्छी तरह से मुताला करें । मौला तबारक व तआ़ला मुसन्निफ को इसकी जज़ा-ए-ख़ैर अ़ता फ़रमाए, और उनकी उम्र, इल्म व अ़मल में रोज़ फ़ुज़ू तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए । आमीन

गुलाम मुहम्मद खॉं غفرلہٗ

23, अक्तूबर 2001

नोट :: हुज़ूर मुफ़्ती साहब क़िब्ला का 28 मार्च 2003, को विसाल हुआ, हज़रत की बड़ी ख़्वाहिश थी कि येह किताब जल्द अज़ जल्द शाए हो जाए लेकिन अफ़सोस इस किताब की इशाअ़त हज़रत की हयाते ज़ाहिरी मे न हो सकी । अल्लाह तआ़ला हज़रत के फ़ुयूज़ व बरकात से हमें मुस्तफ़ीज़ फ़रमाता रहे । (फ़ारूक़ रज़वी)

तक़रीज़े जलील

कायदे अहलेसुन्नत, मुहाफ़िज़े मस्लके आलाहज़रत, उस्ताजुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा

सय्यद मुहम्मद हुसैनी अशरफ़ी मिस्बाही साहब دامت برکاتہم القدسیہ

(सज्जादानशीन आसतान-ए-आलिया शमसिया अशरफ़ीया, रायेचूर- व चीफ़ एडीटर "माहनामा सुन्नी आवाज़" नागपूर)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ

अज़ीज़म मुहम्मद फ़ारूक खाँ रज़वी सल्लमहु का ख़ानदान नागपूर में मअ़रूफ़ ख़ानदान है, इस ख़ानदान ने इस्लाम व सुन्नियत की बहुत ख़िदमत की है। इनके वालिदे माजिद जनाब गुलाब खाँ साहब मर्हूम एक बाकिरदार फ़आ़ल दीन का काम करने वाली शख़्सियत के मालिक थे। बदमज़हबों से नफ़रत व दूरी और सुन्नियत की तबलीग़, उनको अपने ख़ानदान से विर्से में मिली थी। नागपूर में जहाँ कोई वहाबी, देवबन्दी, ग़ैर मुक़ल्लिद वग़ैरा बद मज़हब का कोई मौलवी व मुक़र्रीर आ कर अक़ाइदे अहले सुन्नत व मरासिमे दीन व मज़हब और मस्लके आ़ला हज़रत पर हमला करता तो वोह तड़प जाते, फ़ौरन ओ़लमा-ए-अहले सुन्नत को बुलवा कर तरदीद करवाते और नागपूर में बड़े बड़े जलसे करवाते रहते थे। जनाब मर्हूम गुलाब खाँ साहब के तरबियतयाफ़ता व उनके आगोश में पले बड़े एक फ़आ़ल, क़ाबिल, बातिल का रद्द व इब्ताल करने में मसरूफ़ रहने वाली साहिबे ज़बान व क़लम शख़्सियत का नाम मुहम्मद फ़ारूक खाँ रज़वी है। जिनकी तहरीर से हक़ का इज़हार बातिल का रद्द साफ़ तौर पर नुमाया होता है। अब तक कई किताबें उन्होंने तहरीर की हैं, इनमें एक रिसाला "अद्दलाइलो व बय्यीनात अला हुक्मे मुकब्बिरिल असवात" अलमअ़रूफ़ बेही "मशीनी नमाज़" है जो नमाज़ में लौडिस्पीकर के ना जाइज़ व हराम होने पर है।

साहिबे किताब सल्लमहु ने अपना येह रिसाला मुझे पढ़ने के लिये दिया, मैं ने इसको पढ़ा तो अपने अकाबिर (पहले के बुज़ुर्ग ओ़लमा) की तहकीक़ व तदक़ीक़ (नज़रियात) का ख़ुलासा पाया। उन्हों ने बहुत आसान ज़बान में

नमाज़ में लौडिस्पीकर के ना जाइज़ व हराम होने को साबित किया है । और मअ़मूली पढ़े लिखे इन्साफ़ पसंद मुसलमान को भी मजबूर कर दिया है कि वोह पढ़ने के बाद कह उठे कि यक़ीनन नमाज़ में लौडिस्पीकर का इस्तेमाल ख़िलाफ़े सुन्नत और निहायत ही सख़्त बुरी बिदअ़त है । लेकिन रहे वोह लोग जिन्होंने न मानने की क़सम खा रखी हैं उनके लिये लाखों दलीलें भी न काफ़ी है ।

जनाब मुहम्मद फ़ारूक ख़ाँ रज़वी सल्लामहु ने मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब (अशरफ़ीया मुबारकपूर) की तसनीफ़ (लौडिस्पीकर का शरई हुक्म) से मुतअ़ल्लिक़ तबसेरा किया है वोह तबसेरा इस क़दर मुदल्लल (दलीलों से पुख़्ता) व पुर मग़्ज़ है कि आप पढ़कर हक़ व ना हक़ में ख़ूद ही इम्तियाज़ कर लेंगे ।

मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब अशरफ़ीया मुबारकपूर (यू.पी.) ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ के सिलसिले में अपनी जमाअ़त के अकाबिर ओ़लमा व दीनो मिल्लत के बुज़ुर्गों के इज्माई फ़ैसले के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया था, उनकी येह तस्नीफ़ (किताब) बहुत सी जगह आज भी फ़ितना व फ़साद बरपा किये हुए हैं । मगर अज़ीज़म मुहम्मद फ़ारूक ख़ाँ रज़वी ने मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की उस किताब के मुतअ़ल्लिक़ बेहतरीन तबसेरा क़लमबन्द किया है । नीज़ जो लोग लौडिस्पीकर पर नमाज़ के जाइज़ होने के दावेदार हैं उन सब का मुहासबा करके उन्हें भी ला जवाब कर दिया है । इसमें कोई मुबालग़ा नहीं कि मौसूफ़ की इस किताब ने अहलेसुन्नत व जमाअ़त के अकाबिर ओ़लमा व मशाइख़े उज़्ज़ाम की याद ताज़ा कर दी है । मौसूफ़ सल्लामहु की तहरीरों से मैं ख़ूब अच्छी तरह से वाक़िफ़ हूँ, मुझे उन का तर्ज़े इस्तेदलाल (दलीले बयान करने का अन्दाज़) और मुख़ालिफ़ की ईबारतों के रद्द व इब्ताल का तरीक़ा बहुत पसंद है । मौसूफ़ ने जहाँ एक तरफ़ अहले हक़ को राहत व सुकून का सामान मोहिय्या किया, तो दूसरी तरफ़ मुख़ालेफ़ीन के दिलों में घबराहट का इन्तेज़ाम कर दिया है । मौला तआ़ला मौसूफ़ सल्लामहु की उम्र में बरकत अ़ता फ़रमाए और उनसे दीन व मज़हब की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमात ले और इस किताब को दरज-ए-कुबूलियत अ़ता फ़रमाए । आमीन !!

फ़कत :- **सय्यद मुहम्मद हुसैनी अशरफ़ी मिस्बाही** غفرلہ

"सज्जादा नशीन आसतान-ए-आलिया अशरफ़ीया" रायेचूर.

व चीफ एडीटर "माहनामा सुन्नी आवाज़" नागपूर.

नज़रान-ए-अक़ीदत

चौदवी सदी हिजरी की

बिल इत्तेफ़ाक एक अज़ीम शख़्सियत, जिन्हें....

जामअ़े शरीअ़त, बहरे तरीक़त पासबाने अहलेसुन्नत, इमामे इश्क़ो मुहब्बत, क़ातअ़े बिदअ़त, क़ाएमे सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत,

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ رضی اللہ عنہ

—————— कहा जाता हैं ——————

नोके क़लम के बिख़रे हुए येह मोती उन्हीं की बारगाहे आलिया में नज़्र है ।

گر قبول افتد زہے عزّ و شرف

मौला तबारक व तआ़ला इस किताब का सवाब इमामे अहलेसुन्नत के सदके़ मेरे मोहसिन मर्हूम **गुलाब ख़ॉ साहब** क़िबला को पहुँचा और उनकी क़ब्र को अपनी रहमत व अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनवार की जलवागाह बना दे । आमीन ।

—— सगे रजा ——

मुहम्मद फ़ारूक ख़ॉ रज़वी

بسم الله الرحمن الرحيم

نحمده ونصلي على رسوله الكريم

किसी मस्अले के जाइज़ या ना जाइज़ होने पर अइम्मा-ए-दीन, फ़ुक़हा-ए-किराम, व मुस्तनद ओलमा-ए-दीन का इत्तेफ़ाक़ हो जाए तो उसे इज्मा-ए-उम्मत कहते हैं। इज्मा-ए-उम्मत पर अमल वाजिब है, इसके ख़िलाफ़ अमल गुमराही और उम्मते मुस्लिमा में फ़ितना व फ़साद बरपा करना है।

बेशक लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ना, पढ़ाना ना जाइज़ व हराम है। इस पर अकाबिर ओलामा (पहले के बुजुर्ग ओलमा) का इज्मा हो चुका है, अब इस के बावजूद नमाज़ में इसे लगाने की ज़िद उम्मत में फ़ितना पैदा करने के सिवा कुछ नहीं।

मौजूदा दौर में अकसर मस्जिदों में देखा गया है कि शुरू शुरू में मस्जिद में लौडिस्पीकर की बला नहीं होती है, वहाँ के नमाज़ी इतमीनान व सुकून से खुलूस व मुहब्बत के साथ मिलजुल कर बा जमाअत नमाज़े पंजगाना आदा करते हैं। लेकिन बुरा हो इब्लीस मरदूद का, कोई नया नया नीम मौलवी ख़तरा-ए-आमाल उस मस्जिद में आ धमकता है और नमाज़ में लौडिस्पीकर की बिदअत को दाख़िल करने पर ज़ोर देता है। फिर क्या! एक अच्छे ख़ासे पुरसुकून माहोल में इन्तिशार बरपा हो जाता है, अब उसी एक मोहल्ले के नमाज़ी जो आज तक भाई चारे के साथ मिलजुल कर अपने परवरदिगार की ईबादत अपने प्यारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ मुक़ब्बिर रख कर अदा कर रहे थे, अब आपस में लड़ते भीड़ते हैं और लौडिस्पीकर लगाने की ज़िद से मामला फ़ितना व फ़साद, सर फुटवल और ख़ून ख़राबे तक जा पहुँचता है। कुछ इसी तरह का माहौल आज से चन्द साल पहले सन 2000 ई. में हमारे मोहल्ले की एक मस्जिद में हुआ जो आज इस किताब के लिखने का सबब बन रहा है।

इस में कोई दो राहे नहीं कि लौडिस्पीकर फ़ितना व फ़साद का सबब है जिसे शैतान नमाज़ जैसी अहेम ईबादत में दाख़िल करवा के हमारी नमाज़ों को बरबाद करवा रहा है।

आयत अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त कुरआने पाक में इरशाद फरमाता है...

وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ط اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ٥

तर्जमा :- और शैतान के कदमों पर न चलो, बेशक वोह तुम्हारा खुला दुशमन है ।

(कुरआने करीम, पारा 2, सूरए बकर, आयत नं. 208)

लौडिस्पीकर सुन्नत को मिटा रहा है

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम की सुन्नते मुबारका येह है कि जब नमाज़ियों की तादाद ज़्यादा हो जाए और पीछे की सफ़ों में इमाम की आवाज़ सुनाई न दे तो मुकब्बिर रखे जाऐं ।

"मुकब्बिर" के मअ़नी येह हैं कि जब नमाज़ियों की तादाद ज़्यादा होतो कुछ सफ़ों के बाद ऐसे शख़्स को मुक़र्रर कर दिया जाए जो इमाम की तकबीरों को सुन कर ख़ूद भी बुलन्द आवाज़ से तकबीरें पुकारे ताकि पीछे की सफ़ों के वोह लोग जिन तक इमाम की तकबीरों की आवाज़ें नहीं पहुँच रही है वोह मुकब्बिर की तकबीरों की आवाज़ सुन कर रूकू व सुजूद करें

नमाज़ियों की तादाद ज़्यादा होने और इमाम की आवाज़ पीछे की सफ़ों तक न आने की सूरत में मुकब्बिर रखना नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, सहाबा-ए-किराम, ताबाईन, तबे ताबाईन की सुन्नत और फिर अइम्मा-ए-दीन से लेकर ओ़लमा-ए-किराम तक का इसपर अ़मल रहा है, ... चुनानचे बुख़ारी शरीफ़ में है ।

हदीस उम्मुलमोमेनीन हज़रत आएशा सिद्दीका़ रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि....................

امر رسول الله صلى الله عليه وسلم ابا بكر صديق رضى الله عنه ان يصلى بالناس فى مرضه فمن يصلى بهم قال عروة رضى الله عنه فوجد رسول الله من نفسه خفة فخرج فاذا ابوبكر يؤم

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपनी बीमारी की हालत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो को हुक्म दिया कि वोह लोगों को नमाज़ पढ़ाऐं और लोगों की इमामत करें, हज़रत अबू बकर

الناس فلما راه ابوبكر استاخر فاشا راليه ان كما انت فجلس رسول الله خذآء ابى بكر الى جنبه فكان ابوبكر يصلى بصلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم والناس يصلون بصلوة ابى بكر.

सिद्दीक़ जमाअ़त की इमामत कर रहे थे, हज़रत उरवाह रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो जो इस हदीस के रावी हैं वोह कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने हुजरहे अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए, जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने महसूस किया कि हुज़ूर तशरीफ़ ला रहे है तो आप पीछे हटने लगे, हुज़ूर ने इशारा फ़रमाया कि नमाज़ में ही रहो, फिर रसूलुल्लाह हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के बराबर उनके पहलू में खड़े हो गए और इमामत फ़रमाई तो हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नमाज़ के साथ नमाज़ अदा कर रहे थे और हुज़ूर की तकबीरों पर सिद्दीक़े अकबर तकबीरें पुकारते थे और सहाबा-ए-किराम हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ की तकबीरों को सुन कर नमाज़ अदा करते थे"।

(बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 1, बाब नं. 438, किताबुल अज़ान, सफ़ा नं. 94)

येह हदीस "सुनन इब्ने माजा" की जिल्द 1, हदीस नं. 1288, सफ़ा 353- और "सुनन नसाई" जिल्द 1, सफ़ा नं. 247-- पर और अहादीस की दीगर बहुत सी किताबों में भी मौजूद है ।

शरह हज़रत अ़ल्लामा इमाम बदरूद्दीन अ़येनी रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो इस हदीस की शरह (खुलासे) में अपनी किताब "उमदतुल क़ारी शरहे बुख़ारी" जिल्दे अव्वल में फ़रमाते हैं.......

فيه دلالة ان الائمة اذا كانوا بحيث لايراهم من ياتم بهم اجاز ان يركع المامون بركوع المكبر

"यानी इस हदीस में इस हुक्म की दलील है कि जब इमाम इतनी दूर हो कि उसके पीछे नमाज़ पढ़ने वाले उसे देख न सकें और न उस की आवाज़ सुन पाऐं तो मुकब्बिर रखें और पीछे के नमाज़ी मुकब्बिर की आवाज़ सुन कर रूकू व सुजूद करें"।

(उमदतुल क़ारी शरहे बुख़ारी, जिल्द 1)

शरह बुख़ारी शरीफ़ की इसी हदीस की शरह में हज़रत अ़ल्लामा इमाम कमालुद्दीन मुहम्मद इब्ने हेमाम रदीयल्लाहो अन्हो अपनी किताब "फ़तहुल

الناس يصلون بصلاة ابی بکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ یعنی انہ کان یسمع الناس تکبیر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ۔

क़दीर" में नक़्ल फ़रमाते हैं.......

"यानी लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदीयल्लाहो तआला अन्हो की नमाज़ के साथ नमाज़ पढ़ते, वोह इस तरह की हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ मुकब्बिर बन कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम की तकबीरों को सुन कर बुलन्द आवाज़ से तकबीर पुकार कर पीछे खड़े लोगों को तकबीर सुनाते थे"। (फ़तहुल क़दीर, जिल्द 1)

शरह बुख़ारी शरीफ़ की इसी हदीस के तहेत "किताबुद दराया" में है.

وبہ یعرف جواز رفع المؤذنین اصواتھم فی الجمعۃ والعیدین وغیرھم ۔

"यानी जुम्अ़ और ईदैन में मुअज़्ज़िनों का मुकब्बिर बन कर तकबीर पुकारना जाइज़ है"।

साबित हुआ कि जब बहुत बड़ी जमाअ़त हो, मसलन--जुम्अ़ व ईदैन वग़ैरा और इमाम की आवाज़ पीछे के मुक़तदियों (नमाज़ियों) को सुनाई न देती हो तो सफ़ों के दरमियान ज़रूरत के मुताबिक़ मुकब्बिर रखें जाएँ, जो इमाम की तकबीरों को सुन कर ख़ूद भी तकबीरें पुकारें ताकि पीछे के मुक़तदियों को उनकी आवाज़ पहुँचे और वोह इतमीनान से नमाज़ अदा करें। मुकब्बिर की आवाज़ इमाम की आवाज़ की नायब होगी और मुकब्बिर की आवाज़ सुन कर रूकू व सुजूद वग़ैरा करना अस्ल में इमाम की ही इक़्तेदा (पैरवी) है।

अभी आप बुख़ारी शरीफ़ की हदीस पढ़ चुके कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रदीयल्लाहो अन्हो को मुकब्बिर मुक़र्रर फ़रमाया, लिहाज़ा मुकब्बिर रखना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदीयल्लाहो तआला अन्हो की सुन्नत है और येह लॊडिस्पीकर इस मुकब्बिर की अज़ीम सुन्नत को मिटा रहा है। और जो काम सुन्नते रसूल को ख़त्म करे वोह यक़ीनन सख़्त ना जाइज़ व हराम है।

आयत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है..

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط

तर्जुमा : "ए महबूब आप फ़रमा दीजिये कि लोगों अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरे तरीक़े

पर अमल करो तो अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा"। (कुरआने करीम, पारा 3, सुरए आले इमरान, आयत 31)

बा खुदा ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम का तरीक़ा नमाज़ में ज़रूरत पड़ने पर मुकब्बिरीन मुक़र्रर करना है और इसी में अल्लाह की रज़ा है ।

हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं.....

عليكم بسنتى وسنة الخلفاء الراشيدين من بعدى .

"यानी तुम पर ज़रूरी है कि मेरी सुन्नत पर सख़्ती से अमल करो और मेरे बाद मेरे खुल्फ़ा-ए-राशेदीन (यानी हज़रत अबूबकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक, हज़रत ऊसमाने ग़नी, हज़रत अली रदीयल्लाहो अन्हम) की सुन्नत पर अमल करो"। (तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, इब्ने माजा, मिश्कात शरीफ, जिल्द 1, हदीस नं. 157, सफ़ा 56)

सहाबा-ए-किराम में सब से अफ़ज़ल खुल्फ़ा-ए-राशेदीन हैं और उन में सब से अफ़ज़ल हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रदीयल्लाहो तआला अन्हो है । नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से लेकर आज तक के तमाम मुसलमानों का इस पर इत्तेफ़ाक हैं कि अम्बिया-ए-किराम के बाद सब से अफ़ज़ल और सब से बड़ा मरतबा हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रदीयल्लाहो तआला अन्हो का हैं । अब अन्दाज़ा कीजिये कि हुज़ूर तो येह हुक्म फ़रमाएँ कि मेरी सुन्नत पर अमल करो फिर मेरे खुल्फ़ा की सुन्नत पर अमल करो, लेकिन हम अपने रसूल और उनके महबूब हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ की सुन्नत के ख़िलाफ़ लौडिस्पीकर की विदअत नमाज़ में दाख़िल करें ! फिर गुमराही किस चीज़ का नाम है !!

हदीस एक दूसरी हदीस में है........रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं....

انه من يعش منكم يرى اختلافا كثيرا واياكم ومحدثات الامور فانها ضلالة فمن ادرك ذلك منكم فعليه بسنتى وسنتى الخلفاء الراشيدين المهديين عضوا عليها بالنواجد

"बेशक तुम में जो शख़्स ज़िन्दा रहेगा वोह बहुत इख़्तिलाफ़ देखेगा (दीन में) नई नई बातों से बचते रहना क्योंकि येह गुमराही है तुम में जो शख़्स इख़्तिलाफ़ का ज़माना पाए उसे मेरी और मेरे हिदायत याफ़ता और हिदायत देने वाले खुल्फ़ा का तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिये, तुम्हें चाहिये कि (दीन में नई नई बातों को अपनाने की

बजाए) मेरी सुन्नत को दातों से मज़बूती से पकड़ लो"।

(तिर्मीज़ी शरीफ़, जिल्द 2, हदीस नं. 573, अबवबुल इल्म, बाब नं. 232, सफ़ा 240)

हम पूछते है.....क्या लौडिस्पीकर का नमाज़ में इस्तेमाल नई बात नहीं ? क्या लौडिस्पीकर रसूल और सहाबा की सुन्नत को बरबाद नहीं कर रहा है ? क्या लौडिस्पीकर बिदअ़ते सय्याह् नहीं है ?

हदीस "बरीक़हे महमूदिया शरहे महमूदिया" में हदीसे पाक है......

البدعة فی العبادة حرام۔

"यानी किसी बिदअ़त को ईबादत में दाख़िल करना हराम है"।

इसमें कोई शक नहीं कि ईमान के बाद सब से अफ़ज़ल नमाज़ है,

हदीस नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं..

الصلوة عماد الدین۔

"नमाज़ दीन का सुतून (बुनियाद) है"।

(मुस्नदे इमाम अहमद, तिर्मिज़ी शरीफ़, इब्ने माजा व दीगर कुतुबे अहादिस)

शरह इस हदीस की शरह में हज़रत अल्लामा मुनावी रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो किताब "तैसीर" में इरशाद फ़रमाते हैं......

فقوام الدین لیس الابھا کما ان البیت لا یقوم الاعلی عمودہ

"दीन नमाज़ के बग़ैर क़ायम नहीं रह सकता जैसा कि मकान बग़ैर सुतूनों के क़ायम नहीं रह सकता"।

जाने बिरादर ! नमाज़ दीन का सुतून (बुनियाद, Pillar) है, जिस तरह सुतून (Pillar) के बग़ैर मकान क़ायम नहीं रह सकता उसी तरह नमाज़ के बग़ैर दीन की ईमारत क़ायम नहीं रह सकती । ज़रा ग़ौर तो कीजिये...क्या कोई अक़्लमन्द इन्सान अपना मकान बनाते वक़्त मकान के सुतूनों में जानबूझ कर नक़्ली सिमेन्ट (Cement) लगा कर येह रिस्क लेता है कि भले ही मेरे मकान की छत मुझ पर गीर जाए, मैं उसमें दब कर मर ही क्यों न जाऊँ लेकिन सिमेन्ट नक़्ली ही इस्तेमाल करूँगा ताकि मेरे चन्द रूपये ज़रूर बच जाएँ !! हम समझते हैं कि कोई जाहिल से जाहिल आदमी भी कम अज़ कम इस मामले में तो किसी तरह का कोई ख़तरा मोल नहीं लेगा ! फिर वोह कितना कम अक़्ल इन्सान होगा जो दीन के सुतून को क़याम करते वक़्त लौडिस्पीकर का नक़्ली सिमेन्ट उसमें शामिल करें और अपने दीन की ईमारत

को कमज़ोर बना दे । आए बन्दा-ए-खुदा ! जब दीन के बड़े बड़े इन्जिनियरों (यानी अकाबिर ओलमा-ए-दीन) ने तुझे येह अच्छी तरह से बता दिया कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ क़ायम करेंगा तो दीन का सुतून क़ायम न होगा फिर क्यों तू नादानी करता है और अपनी बेजा ज़िद से अपने दीन की ईमारत को कमज़ोर और बरबाद हो जाने वाली बनाता है !

हदीस नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते है..

"नमाज़ इस तरह अदा करो जिस तरह मुझे अदा करते हुए देखते हो"। || صلوا كما رأيتموني اصلي

हम पहले हदीसों से येह साबित कर आए है कि पीछे की सफों में इमाम की आवाज़ सुनाई न देने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रदीयल्लाहो तआला अन्हो को मकब्बिर बनाया, गोया नबी-ए-पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म का अब मतलब येह हुआ कि नमाज़ इस तरह पढ़ो जैसे मैं पढ़ता हूँ कि पीछी की सफों तक जब इमाम की तकबीरों की आवाज़ न पहुँचे तो मुकब्बिर रखो जैसा कि मैं ने ज़रूरत के वक़्त अबू बकर सिद्दीक़ को मुकब्बिर रखा था ।

येह कोई साबित नहीं कर सकता कि रसूलुल्लाह ने अपनी उम्मत को येह इजाज़त दी हो कि मेरे बाद नमाज़ में तुम अपनी मर्ज़ी से ज़रूरत के मुताबिक़ कोई चीज़ घटा बड़ा लेना । और जब ऐसी कोई इजाज़त रसूलुल्लाह ने नहीं दी तो अब लौडिस्पीकर की बिदअ़त, जो नबी-ए-पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत को ख़त्म कर रही है उसे नमाज़ जैसी अफ़ज़ल ईबादत में अपनी मर्ज़ी से दाख़िल करने का किसे हक़ पहुँचता है !!

हदीस "मिश्कात शरीफ़" में "मुस्नदे इमाम अहमद" से और "तरीक़ा-ए-महमूदिया" में हदीसे पाक है कि...

"हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं...किसी उम्मत ने अपने नबी के बाद कोई बिदअ़त शुरू नहीं की मगर येह किया कि अपने नबी की सुन्नत को अपने हाथों मिटा दिया"। (मुस्नदे इमाम अहमद, मिश्कात शरीफ़, जिल्द 1, हदीस नं. 177, सफ़ा 60)

عن النبى صلى الله عليه وسلم
ما من امة بدعت بعد نبيها فى
دينها بدعة الا اضاعت مثلها

लौडिस्पीकर के तमाम शैदाईयों को हमारा चैलेन्ज (Challenge) है कि वोह किसी भी एक हदीस से या किसी इमाम के किसी एक क़ौल से ही येह साबित करके दिखाए कि नमाज़ में लौडिस्पीकर लगाना बिदअ़त नहीं, या येह कि लौडिस्पीकर मुकब्बिर की अज़ीम सुन्नत को बरबाद नहीं कर रहा है।

मस्अला हज़रत इमाम इब्ने आबेदीन शामी रदीयल्लाहो अन्हो "तम्बीहे ज़वील अफ़हाम" में नक़्ल फरमाते है....

ادخال ما ليس من الصلاة فى الصلاة يوجب فساد الصلاة.

"नमाज़ में ऐसी चीज़ को दाख़िल करना जो नमाज़ का हिस्सा नहीं, वोह नमाज़ को बरबाद करने का सबब है"।

सवाल :: यक़ीनन हज़रत इमाम इब्ने आबेदीन शामी रदीयल्लाहो अन्हो के इस फ़रमान की रौशनी में लौडिस्पीकर को नमाज़ का हिस्सा बनाना नमाज़ को बरबाद करने का सबब है। लौडिस्पीकर के तमाम शैदाईयों से हमारा सवाल है कि वोह बतायें ! लौडिस्पीकर का नमाज़ से कौनसा तअ़ल्लुक़ है ? लौडिस्पीकर नमाज़ में लगाना फर्ज़ है ! वाजिब है ! सुन्नत है! या मुस्तहब ? क्या लौडिस्पीकर के आशेक़ीन येह बताने की ज़हमत फ़रमाएगे कि लौडिस्पीकर से नमाज़ पढ़ने में कितना ज़्यादा सवाब है ? और बग़ैर लौडिस्पीकर के नामज़ पढ़ने में सवाब में कितने दरजे तक कमी होती है ?

लौडिस्पीकर की आवाज़ अस्ल आवाज़ नहीं !

लौडिस्पीकर से जो आवाज़ निकलती है वोह कहने वाले की अस्ल और पहली आवाज़ नहीं होती बल्कि कहने वाले की आवाज़ की नक़्ल (Duplicate) होती है जिस तरह पहाड़ों के बीच, या किसी गुम्बद में या उँची छत वाले मकान में या फिर तालाब के किनारे कुछ कहने पर आवाज़ की नक़्ल सुनाई देती है।

अगर आप किसी ख़ाली मकान में गुम्बद या पहाड़ों के बीच खड़े हो कर बुलन्द आवाज़ से एक मरतबा पुकारे तो आपकी येह आवाज़ कई बार गूंज बन कर सुनाई देती है। ज़ाहिर है आप ने कहा तो एक बार लेकिन

आपकी आवाज़ पहाड़ों से टकरा कर या फिर मकान की दीवारों से टकरा कर बार बार सुनाई देती हैं। मालूम हुआ कि आप की पहली आवाज़ अस्ल थी और वही आवाज़ मकान की दीवारों से या पहाड़ों से टकरा कर लौटी तो वोह दूसरी आवाज़ थी जो नक़्ली आवाज़ है या पहली आवाज़ का अक्स, उसका फोटो (Duplicate) है। इस दूसरी आवाज़ को अ़रबी में **"सदा"** कहते है, फ़ारसी में **"सदा-ए-बाज़गश्त"**, उर्दू में **"गूंज"** और इंगिलिश में "ECHO" कहा जाता है।

दलील फ़िक़्हा की मशहूर किताब "दस्तूरूल ओ़लमा" में इस सदा के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया...............

اعلم ان الهواء المتموج الحاصل للصوت اذا صادم جسما املس كجبل اوجدار رجع ذلك الهواء المصادم بهية القهقرى فحدث فى الهواء المصادم الراجع صوت شبيه بالاول وهو الصدى المسموع بعد الصوت الاول على تفاوت قرب الحسب قرب المقام وبعده.

"यानी हवा की मौज जब आवाज़ को लेकर किसी चीज़ जैसे पहाड़ या दीवार से टकरा कर पलट कर लौटती है तो टकरा कर लौटने वाली हवा में पहली आवाज़ से मिलती जुलती नक़्ली (Artificial) आवाज़ पैदा होती है, येह टकरा कर दोबारा सुनी जाने वाली आवाज़ "सदा" है जो पहली आवाज़ के बाद सुनी गई"।

सदा-ए-बाज़गश्त या गूंज को शरीअ़ते. इस्लामी में अस्ल आवाज़ नहीं माना गया है। सदा (यानी Artificial Sound) अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि अस्ल आवाज़ की नक़्ल है। इस सदा (यानी टकरा कर लौट कर दोबारा गूंज की सूरत में सुनाई देने वाली आवाज़) के मुतअ़ल्लिक़ हमारे फुक़ाह्-ए-किराम, अइम्मा-ए-दीन ने सदीयों पहले ही येह हुक्म बयान फ़रमा दिया कि......

मस्अला "किसी शख़्स ने कुरआन की आयते सज्दा गुम्बद में या पहाड़ों के बीच तिलावत की और वोह आवाज़ गूंज या सदा बन कर किसी दूसरे शख़्स के कानों तक पहुँची तो उस दूसरे शख़्स पर सज्दा-ए-तिलावत वाजिब न होगा, क्योंकि उसने आयते सज्दा पढ़ने वाले की अस्ल आवाज़ नहीं सुनी बल्कि उस आवाज़ की सदा जो किसी दिवार या पहाड़ या गुम्बद से टकरा

कर लौटी थी वोह सुनी, जो कि अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि अस्ल आवाज़ की गूंज उसकी नक़्ल है ।

दलील फ़िक़ाह् की मशहूर ज़माना किताब "फ़तावा-ए-आलमगीरी" में हैं-

السجدة واجبة على التالى والسامع صواء قصد سماع القران اولم يقصد وان سمعها من الصدىٰ لا تجب عليه ۔

"यानी सज्दा-ए-तिलावत वाजिब है तिलावत करने वाले पर और सुनने वाले पर चाहे इरादे से सुना हो या बग़ैर इरादा इत्तेफ़ाकन सुन लिया हो तब भी उस पर सज्दा वाजिब है, लेकिन अगर तिलावत की आवाज़ सदा से सुना तो सज्दा वाजिब न होगा"। (फ़तावे आलमगीरी, जिल्द 1, सफ़ा नं. 93)

दलील इसी तरह मशहूर किताब "दुर्रेमुख़्तार मअ़ शामी" और "मराक़िल फ़लाह" में है.........

لاتجب بسماعه من الصدىٰ وهوما يجيبك مثل صوتك فى الجبال والصحارى ونحوها ۔

"यानी सदा से आयते सज्दा सुनने वाले पर सज्दा-ए-तिलावत वाजिब न होगा, और सदा वोह है जो तेरी अस्ल आवाज़ की तरह दूसरी आवाज़ सुनाई दे पहाड़ों, जंगलों और उसी तरह की दूसरी जगहों पर"। (दुर्रेमुख़्तार, जिल्द 1, सफ़ा 509, मराक़िल फ़लाह, सफ़ा नं. 264)

दलील फ़िक़ाह् की मशहूर ज़माना किताब "फ़ताहुल क़दीर" में है.....

فى الخلاصة ان سمعها من الصدىٰ لا تجب ۔

"यानी जिस ने कुरआन की आयते सज्दा सदा से सुनी उस पर सज्दा-ए-तिलावत वाजिब नहीं होगा" (फ़ताहुल क़दीर, जिल्द 1, सफ़ा नं. 468)

दलील "तन्वीरूल अबसार दुर्रेमुख़्तार मअ़ फ़तावा-ए-शामी" में हैं...

لاتجب بسماعه من الصدىٰ ۔

"यानी आयते सज्दा सदा से सुनने पर सज्दा वाजिब नहीं होता"।

(तन्वीरूल अबसार दुर्रेमुख़्तार मअ़ फ़तावा-ए-शामी, जिल्द 1, सफ़ा नं. 517)

सदियों पहले के अइम्मा-ए-किराम की इन तमाम दलीलों से साबित हो चुका कि सदा अस्ल आवाज़ का हुक्म नहीं रखती बल्कि अस्ल आवाज़ की नक़्ल (Duplicate Sound) है और इस नक़्ली आवाज़ पर आयते सज्दा सुन कर सज्दा करना वाजिब नहीं । लौडिस्पीकर की आवाज़

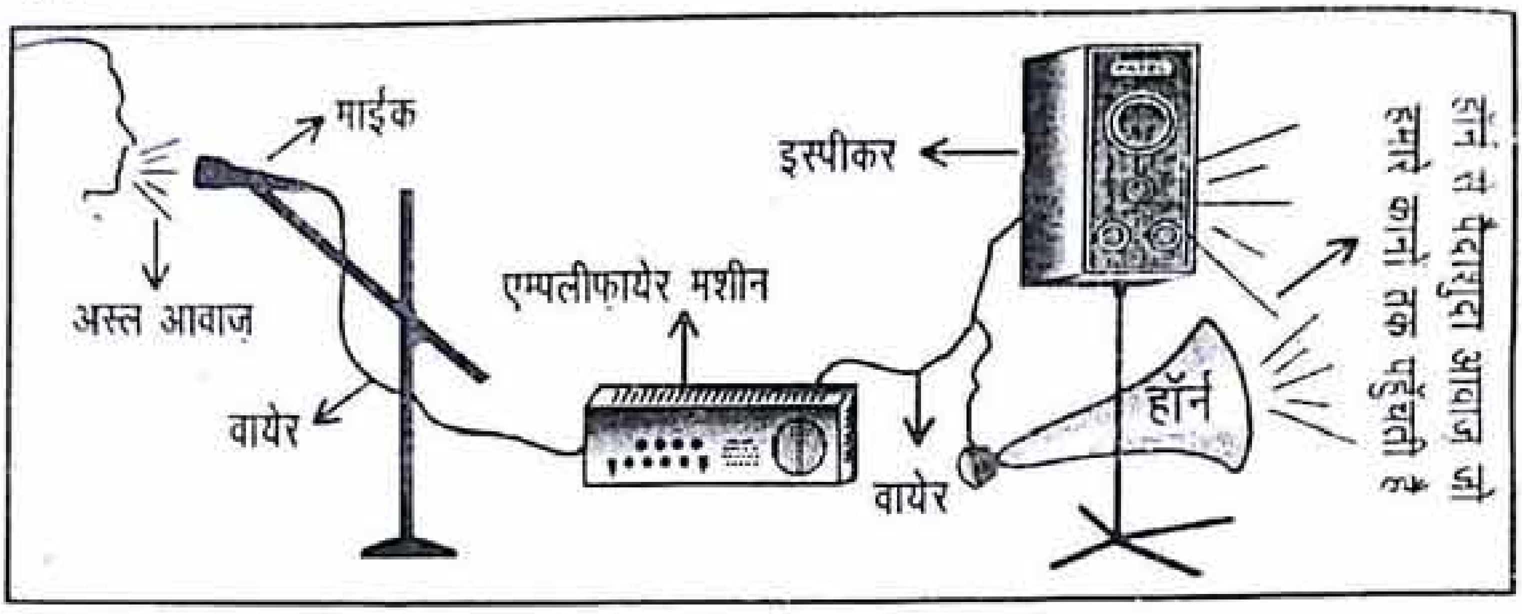
भी सदा के हुक्म में ही है, फर्क इसी कद्र है कि आम तौर पर गुम्बदों में जो गूंज पैदा होती है वोह गुम्बद के अन्दर हर तरफ फैल जाती है और लौडिस्पीकर उस गूंज को अपने अन्दर महफ़ूज़ व कैद कर लेता है और फिर वही गूंज इस्पीकर से ख़ारिज हो कर सुनाई देती है। लिहाज़ा अगर लौडिस्पीकर से आयते सज्दा सुनी तो सज्दा-ए-तिलावत वाजिब न होगा। इस लिये कि लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ इमाम की पहली और उसकी अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि लौडिस्पीकर से पैदाशुदा मशीनी आवाज़ है। जब अस्ल आवाज़ किसी पहाड़ या मकान की दीवार से टकरा कर दोबारा गूंज की शक्ल में सुनाई दे तो उसे शरीअ़त ने अस्ल आवाज़ क़रार नहीं दिया तो इमाम की वोह आवाज़ जो लौडिस्पीकर से टकराई और इस टकराओ के नतीजे में लौडिस्पीकर मशीन ने इमाम की अस्ल आवाज़ से मिलती जुलती नक़्ली (Artificial) आवाज़ पैदा की उसे किस तरह अस्ल आवाज़ क़रार दिया जा सकता है! इस से मालूम हुआ कि लौडिस्पीकर से कुरआन की आयते सज्दा सुनने पर सज्दा वाजिब नहीं होंगा, और जब सज्दा-ए-तिलावत वाजिब नहीं तो लौडिस्पीकर की सदा से नमाज़ का फ़र्ज़ सज्दा क्योंकर जाइज़ होगा।

येह जान लेने के बाद कि नमाज़ में रूकू व सुजूद के लिये इमाम की अस्ल आवाज़ की ज़रूरत है, आईये अब हम येह देखें कि लौडिस्पीकर के ज़रिये सुनाई देने वाली आवाज़ माईक पर कहने वाले इमाम की अस्ल आवाज़ है या उस की नक़्ल (Duplicate Sound) है।

लौडिस्पीकर क्या है ?

लौडिस्पीकर चन्द पुर्ज़ों से मिल कर बनी एक ऐसी मशीन है जो कमज़ोर और धीमी आवाज़ को अपने अन्दर ज़ब्त (Catch) करके उस की नक़्ल को बड़ा कर सुनाने का काम करती है। लौडिस्पीकर के मुख़्तलीफ़ हिस्से हैं। उसके बुनियादी तीन हिस्से होते है, (1- माईक (Microphone), (2- एम्पलीफ़ायेर मशीन (Amplifier), (3- हॉर्न, इस्पीकर (Speaker)। लौडिस्पीकर की आवाज़ किन किन मरहलों से गुज़र कर हमारे कानों तक

पहुँचती है उसको बा आसानी इस तस्वीर से समझा जा सकता है।



इमाम अपने मुँह के आगे माईक रखता है और जो कुछ कहता है उस की आवाज़ माईक में पहुँचती है। माईक में पतली सी एक झिल्ली होती है और उससे क़रीब ही एक कारबन वाली सतेह (Carbon Plat) बनी होती है। जब आवाज़ माईक में दाख़िल होकर उस पतली झिल्ली से टकराती है तो उस झिल्ली को धक्का लगता है और वोह हिलने लगती है। येह झिल्ली आगे पीछे हिल कर कारबन वाली सतेह से मिलती और जुदा होती रहती है, कारबन वाली सतेह से इसके बार बार टकराने से वहाँ मक़नातीसी करन्ट (चुम्बकिये करन्ट, Magnetic Current) पैदा होता है, येह करन्ट बहुत कमज़ोर होता है इससे आवाज़ सुनाई नहीं दे सकती, चुनानचे इसे ज़्यादा ताक़तवर बनाने के लिये एम्पलीफ़ायेर मशीन का सहारा लिया जाता है (जो इस कमज़ोर करन्ट को बड़ा कर ताक़तवर बना देती है)। अब येह करन्ट माईक से वायेर के ज़रिये एम्पलीफ़ायेर मशीन में पहुँचता है, एम्पलीफ़ायर मशीन में कुछ पिलेटें होती हैं जिनसे गुज़र कर येह कमज़ोर करन्ट ताक़तवर बनता है। एम्पलीफ़ायर मशीन इसे ताक़तवर बनाने के बाद हार्न या इस्पीकर की तरफ़ बड़ा देती है, लिहाज़ा एम्पलीफ़ायर मशीन से निकल कर येह करन्ट वायेर के ज़रिये फिर हॉर्न या इस्पीकर तक पहुँचता है, हॉर्न में भी कुछ पर्दे होते हैं जो मक़नातीस (लोहा जुम्बक, Magnet) से लगे होते हैं, येह बड़ा हुआ करन्ट मक़नातीस से गुज़रता है और मक़नातीस से लगे पर्दे हिलने लगते हैं और उन्हीं के हिलने के नतीजे में इस्पीकर या हार्न के आस पास की हवा में इरतियाश (हलचल) पैदा होता है जो आवाज़ के सुनाई देना का सबब बनता है।

अब आसानी से समझा जा सकता है कि माईक से हॉर्न (या इस्पीकर) तक आवाज़ का सिलसिला हवा के ज़रिये न तो आगे बड़ा और न ही हवा से जुड़ा हुआ है, और वोह भी इस तरह कि हॉर्न (या इस्पीकर) के इलावा बाकी तमाम पुर्ज़ों से मसलन माईक से एम्पलीफ़ायेर मशीन तक, एम्पलीफ़ायेर मशीन से इस्पीकर तक किसी पुर्ज़े से इमाम की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही है। मालूम हुआ कि इमाम की अस्ल आवाज़ वोह थी जो हवा के ज़रिये माईक पर जाकर ख़त्म हो गई थी और अब इस आवाज़ की लहरों को माईक मक़नातीसी करन्ट (Magnetic Current) में तबदील कर के एम्पलीफ़ायर मशीन को दे रहा है और फिर येह कमज़ोर करन्ट एम्पलीफ़ायर मशीन की मदद से तरक़्क़ी करके वायेर के ज़रिये हार्न या इस्पीकर तक पहुँचा। और येह सभी बिजली की ताक़त से हो रहा है अगर येह बिजली की ताक़त न होतो इमाम साहब की आवाज़ माईक से इस्पीकर तक नहीं पहुँच सकती। इसी तरह अगर माईक हटा दिया जाए तो इमाम साहब की आवाज़ की लहरें एम्पलीफ़ायर तक नहीं पहुँच सकती, या अगर आप माईक और एम्पलीफ़ायर के दरमियान का वायेर हटा दे तो आवाज़ की लहरें एम्पलीफ़ायर तक नहीं पहुँच सकती। इसी तरह अगर माईक और एम्पलीफ़ायर मशीन दोनों हो लेकिन सिर्फ़ हॉर्न (या इस्पीकर) ही हटा दें तो इमाम साहब की आवाज़ सुनाई नहीं देंगी, अब इमाम लाख गला फ़ाड़े, चींख़ें चिल्लायें आवाज़ हॉर्न (या इस्पीकर) तक नहीं आएगी।

हमारी इस तमाम बहेस का हासिल येह है कि इमाम की अस्ल आवाज़ माईक तक जा कर ख़त्म हो गई और माईक से एम्पलीफ़ायर तक और एम्पलीफ़ायर से हॉर्न (या इस्पीकर) तक हवा के ज़रिये आवाज़ आगे नहीं बड़ी बल्कि वोह करन्ट था जो मुख़्तलीफ़ शक्लों में तबदील होकर आख़िर में आवाज़ की शक्ल में सुनाई दिया जो अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि अस्ल आवाज़ की नक़्ल है और नक़्ली आवाज़ भी ऐसी कि ग़ैरों के हाथों में पड़ कर वोह इमाम की अस्ल आवाज़ से बहुत ज़्यादा तेज़ या बहुत ज़्यादा धीमी हो सकती है बल्कि ख़त्म भी हो सकती है। अब इतने खुलासे के बाद भी उसे इमाम की अस्ल आवाज़ कहना इन्साफ़ व दियानत का गला घोटना और हक़ीक़त से मुँह मोड़ कर ना हक़ की ज़िद करना है।

अगर अब भी शक होतो आईये लौडिस्पीकर के ज़रिये सुनाई देने वाली आवाज़ के नक़्ली होने पर हम चन्द ऐसी मिसालें सामने रख दे जिसे हर अक़्लमन्द इन्सान बा आसानी समझ सकता है ।

मिसाल नं. १ तीन इस्पीकर एम्पलीफ़ायर मशीन से जोड़ दीजिये और हर इस्पीकर को अलग अलग तीन कमरों में रख दीजिये । अब चौथे कमरे में माईक रखिये और वहाँ से इमाम साहब क़िर्अत करें । तीनों कमरों में इमाम साहब की वही क़िर्अत एक ही वक़्त में सुनाई देगी । अब हम आप से पूछते हैं क्या तीनों कमरों में तीनों इस्पीकरों से इमाम साहब की अस्ल आवाज़ आ रही है ? क्या येह तीन इस्पीकर इमाम साहब के तीन गले हैं कि एक ही वक़्त में तीन गलों से आवाज़ें निकल रही हैं ? अगर आपका जवाब येह है कि इन तीनों अलग अलग कमरों के अलग अलग तीनों इस्पीकरों की आवाज़ें इमाम साहब की अस्ल आवाज़ें हैं । तो हम कहेंगे कि अगर उसी माईक पर इमाम साहब येह कहे कि...."मैं ने अपनी बीवी सलमा परवीन को तलाक़ दी"। तो तीनों इस्पीकरों की तीन अलग अलग कमरों में तीन अस्ल आवाज़ें होने की बुनियाद पर तीन तलाक़ पड़ जाएगी !

अब अगर आप येह कहते है कि येह कैसे हो सकता है इमाम साहब ने तो अपने मुँह से एक ही मरतबा तलाक़ कहा इस लिये एक ही तलाक़ पड़ेगी । तो फिर हमारा कहना है कि बताईये तीनों इस्पीकरों से तीन अलग अलग कमरों में तीन आवाज़ें "तलाक़" की सुनाई दी, अगर तीनों इस्पीकरों की आवाज़ें अस्ली नहीं तो फिर कौनसे एक इस्पीकर की आवाज़ अस्ली है और कौनसे बाक़ी दो इस्पीकरों की आवाज़ें नक़्ली है ? अगर जवाब येह हैं कि पहले कमरे के इस्पीकर की आवाज़ अस्ली है, बाक़ी दो कमरों के इस्पीकरों की आवाज़ें नक़्ली है । तो हम कहेंगे कि बाद के दोनों कमरे के इस्पीकरों का तअ़ल्लुक भी तो उसी एक एम्पलीफ़ायर मशीन से है जिससे पहले इस्पीकर का तअ़ल्लुक है और आप की इस दलील की बुनियाद पर तो मस्जिद में अगर तीन इस्पीकर लगे हों तो पहले इस्पीकर की आवाज़ अस्ल है और बाक़ी दो इस्पीकरों की आवाज़ें नक़्ली है लिहाज़ा जो लोग बाद के दो इस्पीकरों की नक़्ली आवाज़ सुन कर रूकू व सुजूद कर रहे हैं उनकी नमाज़ नहीं होगी ।

अब अगर आप येह कहते हैं कि नहीं पहले कमरे के इस्पीकर की आवाज़ नक़्ली है और बाक़ी दो कमरों के इस्पीकरों की आवाज़ें अस्ली है तो हम फिर अपनी पहले वाली दलील बयान करेंगे कि पहले कमरे के इस्पीकर का तअ़ल्लुक़ भी तो उसी मशीन से है, उसकी आवाज़ कैसे नक़्ली हो सकती है, और दो कमरों के इस्पीकरों की आवाज़ें अस्ली होने की बिना पर तो दो तलाक़ पड़ जाएगी । अब अगर आपका येह कहना है कि तीनों इस्पीकर की तीनों आवाज़ें नक़्ली मशीनी हैं । तो यही हमारा मक़सद है और यही हक़ीक़त भी है । अगर माईक पर नमाज़ पढ़ाने वाला इमाम अब्दुल्लाह होतो आप लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ को अब्दुल्लाह की आवाज़ तो कह सकते हैं अब्दुर्रहमान की हरगिज़ नहीं कहेगे, लेकिन लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली अब्दुल्लाह की आवाज़ को उस की बेअ़य्नेहि, अस्ल हक़ीक़ी आवाज़ क़रार नहीं दे सकते चाहे आवाज़ एक इस्पीकर से सुनाई दे या तीन इस्पीकरों से । तमाम आवाज़ें नक़्ली और मशीनी हैं । और नक़्ली आवाज़ भी इस क़द्र कि अगर एम्पलीफ़ायर मशीन बहुत उम्दाह् होतो आवाज़ अच्छी सुनाई देगी और अगर मशीन या माईक ही ख़राब होतो निहायत ही भयानक और ना पसंदीदा आवाज़ सुनाई देती है ।

अब जबकि येह साबित हो गया कि लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि मशीन से पैदा हुई नक़्ली मशीनी अस्ल आवाज़ से मिलती जुलती आवाज़ हैं तो शरीअ़त के हुक्म के मुताबिक़ जिस तरह सदा जो दीवार या पहाड़ से टकरा कर वापस लौट कर सुनाई देती है उसे अस्ल आवाज़ क़रार नहीं दिया गया तो माईक से टकरा कर करन्ट में तब्दील हुई आवाज़, फिर एम्पलीफ़ायर में बड़ कर और इस्पीकर के पर्दो से टकरा कर करन्ट से तबदील हुई आवाज़ को हरगिज़ अस्ल आवाज़ क़रार नहीं दिया जा सकता । चुनानचे जो सदा का हुक्म है कि उससे सज्दा-ए-तिलावत वाजिब नहीं वही हुक्म लौडिस्पीकर की आवाज़ का होगा कि उससे सुनाई देने वाली आवाज़ पर रूकू व सुजूद जाइज़ न होगा और नमाज़ फ़ासिद (बरबाद) हो जाएगी ।

मिसाल नं. २ अगर उपर बयान की गई दलील से तसल्ली न हुई हो तो इस दलील को आसानी से यूँ समझिये कि आज कल एक नई मशीन

ईजाद हो गई है जिसे इको मशीन (Echo Machine) या थ्रीडी मशीन (3D Machine) कहते हैं । येह एक छोटी सी मशीन होती है जिसे माईक और एम्पीफ़ायर मशीन के दरमियान जोड़ दिया जाता है, इस इको मशीन की मदद से एक ही आवाज़ को तीन चार बार सुना जा सकता है । अब अगर ऐसी मशीन से जूड़े माईक पर कोई मौलवी साहब एक बार येह कहे कि “मैं ने अपनी बीवी ज़ीनत बानो को तलाक़ दी”, और मौलवी साहब की येह आवाज़ इको मशीन होने की बिना पर इस्पीकर से तीन बार सुनाई दे, तो बताईये तलाक़ कितनी मानी जाएगी ......एक या तीन ? हम समझते है कि हर अक़लमन्द येह ही कहेगा कि तलाक़ एक ही हुई क्योंकि मौलवी साहब ने अपनी ज़बान से एक ही बार तलाक़ कहा । हम पूछते हैं तलाक़ के येह जुमले आपको और हमें तीन बार सुनाई दिये फिर तलाक़ तीन क्यों नहीं पड़ी ? इन तीन आवाज़ों में से कौनसी एक आवाज़ अस्ल है, और कौनसी दो आवाज़े नक़ली है ? क्या येह तीनों आवाज़ें अस्ली है ? अगर आपका जवाब येह है कि तीन बार सुनाई देने वाली आवाज़ में से बाद की दो आवाज़ें नक़्ली है और पहली एक अस्ली है, तो हमारा जवाब होगा कि वोह दो आवाज़ें जिन्हें आप नक़्ली क़रार दे रहे हैं वोह भी तो उसी एम्पीलीफ़ायर मशीन से निकल कर उसी एक इस्पीकर से सुनाई दी ..... फिर आप कैसे दावा कर सकते हैं कि पहली आवाज़ अस्ली है और बाक़ी दो आवाज़ें नक़्ली है, और इससे तो खूद आपका इक़रार साबित हुआ कि एम्पलीफ़ायर मशीन और इस्पीकर ने जो तीन आवाज़ें सुनाई उनमें की दो नक़्ली है । जिसके मअ़नी ही येह हुए कि लौडिस्पीकर कहने वाले की अस्ल आवाज़ को बुलन्द नहीं करता बल्कि उस आवाज़ से मिलती जुलती अपनी दूसरी नक़्ली मशीनी आवाज़ पैदा करता है । आख़िरकार इस बात को कुबूल करने के सिवा कोई चारा नहीं कि लौडिस्पीकर से निकलने वाली हर आवाज़ चाहे वोह एक बार सुनाई दे या तीन बार, सब की सब नक़्ली है जो मशीन की पैदावार है माईक पर कहने वाले की अस्ल आवाज़ हरगिज़ हरगिज़ नहीं !

मिसाल नं. ३ लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ सदा के हुक्म में हैं इसकी एक दलील येह भी है कि आप माईक पर कुछ बोलिये, आप

ख़ूद अपने मुँह से निकली अस्ल आवाज़ के इलावा कुछ ही लम्हों बाद अपनी दूसरी आवाज़ की गूंज ख़ूद अपने कानों से सुनते है । अपनी आवाज़ के इलावा येह दूसरी आवाज़ जो आप सुन रहे हैं आपकी अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि उसकी गूंज या सदा है, और ऐसी ही सदा गुम्बद, ख़ाली मकान, या पहाड़ों में सुनाई देती है कि आदमी अपनी अस्ल आवाज़ से अलग उस आवाज़ की गूंज सुनता है ।

लौडिस्पीकर पर कहने वाले की आवाज़ उसी की आवाज़ है !

आ़म तौर पर लौडिस्पीकर के अक़ीदतमन्द येह एतराज़ करते है कि....“जब कोई इमाम, हाफ़िज़ या मुक़र्रीर माईक पर कुछ कहता है तो उसे सुन्ने वाला हर शख़्स येह समझता है कि फ़लॉ शख़्स लौडिस्पीकर पर बोल रहा है । अगर लौडिस्पीकर पर बोलने वाला शख़्स अब्दुल्लाह है तो आवाज़ अब्दुल्लाह की ही मालूम होगी अब्दुर रहमान की नहीं हो जाएगी !

जवाब : इसके जवाब में हम अर्ज़ करेंगे कि आवाज़ की मुख़्तलिफ़ हैसीयतें है । नं. 1) अ़यैन सवूते मुतकल्लिम :: यानी बोलने वाले की अपनी हकीकी अस्ल आवाज़ जो बग़ैर किसी ज़रीये और वास्ते से सुनी जाए । नं. 2) मिस्ल सवूते मुतकल्लिम :: यानी बोलने वाले की आवाज़ से मिलती जुलती आवाज़ ।

लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ कहने वाले की पहली अस्ल, हकीकी आवाज़ नहीं होती । इमाम की आवाज़ माईक पर जा कर ख़त्म हो जाती है, माईक से एम्पलीफ़ायर मशीन तक इमाम की आवाज़ नहीं जाती बल्कि माईक में पैदा हुआ करन्ट एम्पलीफ़ायर मशीन में पहुँचता है । और फिर येह एम्पलीफ़ायर मशीन माईक के उस कमज़ोर करन्ट को ज़्यादा तक़तवर बनाकर इस्पीकर में पहुँचाती है, और येह करन्ट इस्पीकर में पहुँच कर आवाज़ के पैदा होने का सबब बनता है । मुख़्तसर येह की माईक पर कहने वाले की आवाज़ तीन वास्तों से हो कर अलग अलग शक्लों में बदल बदल कर

सुनने वाले के कानों तक पहुँचती है तो अब इसे माईक पर कहने वाले की पहली ज़ाती, हक़ीक़ी व अस्ल आवाज़ क्योंकर क़रार दिया जा सकता है। **मिसाल** लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ ऐसे ही है जैसे इन्सान का फोटो, जिस में इन्सान की बज़ाहिर अस्ल सूरत नज़र आती है, वही चेहरा वही आँखें वही कान, वही बाल, वही मुँह वग़ैरा वग़ैरा .... मगर येह अस्ल इन्सान नहीं। इसे आसानी से यूँ समझिये की आप किसी शख़्स को टी.वी. पर तक़रीर करता हुआ देख रहे है। आप उसकी शक्ल देख रहे है, उस की आवाज़ भी सुनाई दे रही है और आप ख़ूब अच्छी तरह पहचान भी रहे है कि येह जनाब फलाँ साहब है जो तक़रीर कर रहे है। अब ज़रा बताईये ! क्या आप उस बोलने वाले की टी.वी. पर शक्ल और आवाज़ पहचान कर उसे हक़ीक़ी अस्ल इन्सान क़रार देंगे ? क्या आप उसकी तक़रीर से ख़ूश होकर सौ दो सौ रूपये का नज़राना पेश करना चाहे तो क्या टी.वी. के बॉक्स में ड़ाल देंगे। क्या वोह तक़रीर करने वाला शख़्स उसे कुबूल कर लेंगा ?................ लिहाज़ा जिस तरह टी.वी. पर दिखाई देने वाली शक्ल व आवाज़ किसी भी शख़्स की अस्ली हक़ीक़ी नहीं, इसी तरह लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ जिसे आप पहचान भी रहे है और समझ भी रहे है, वोह माईक पर कहने वाले की अस्ल हक़ीक़ी आवाज़ हरगिज़ नहीं कि जिसे सुनने के बाद रूकू व सुजूद अदा किये जाएँ।

टेपरिकार्ड और नमाज़

अगर अब भी आप लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ को इमाम साहब की अस्ल आवाज़ मान रहे है तो अर्ज़ है .. अगर किसी टेपरिकार्ड की कैसीट में इमाम अब्दुल्लाह की आवाज़ रिकार्ड कर ली जाए, अब उसे आप दस साल बाद भी सुनेंगे तो यही कहेंगे कि येह अब्दुल्लाह की आवाज़ है, लहजा, अन्दाज़, आवाज़ के उतार चढ़ाओ में कोई फ़र्क महसूस नही होगा। अगर इस टेपरिकार्ड को एम्पलीफ़ायर मशीन से जोड़ दें और एम्पीफ़ायर से दस इस्पीकर (या दस हॉर्न) जोड़ दिये जाएँ तो दसों इस्पीकरों से अब्दुल्लाह

की वही आवाज़ सुनाई देगी और ऐसा मालूम होगा जैसे अब्दुल्लाह माईक से अभी बोल रहा है। लेकिन हम जानते हैं कि हर अक्लमन्द टेपरिकार्ड की इस आवाज़ को अब्दुल्लाह की आवाज़ तो कह सकता है लेकिन येह नहीं कहेगा कि अब्दुल्लाह की अस्ल हकीकी (Original) आवाज़ है। चुनानचे इसी लिये ऐसी आवाज़ के लिये "रिकार्ड" का लफ़्ज़ बोला जाता है।

अब अगर कोई येह कहे कि नहीं येह टेपरिकार्ड से निकल कर इस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ अब्दुल्लाह की अस्ल आवाज़ है नक़्ली आवाज़ नहीं तो हमारा मशवरा है कि जब आपने टेपरिकार्ड की आवाज़ को अस्ल मान लिया तो क्या मस्जिद में पाँचों वक़्त इमाम अब्दुल्लाह की क़िर्अत रिकार्ड करके मुसल्ले पर रखकर उसकी आवाज़ की इक़्तेदा में आप नमाज़ पढ़ेंगे ? हमारा ख़्याल हैं कि कोई जाहिल से जाहिल शख़्स भी इसे गवारा न करेंगा, और उसे मानना ही पड़ेगा कि एम्पलीफ़ायर की मद्द से इस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ मशीनी आवाज़ है कहने वाले की अस्ल हक़ीक़ी अवाज़ नहीं। लिहाज़ा साबित हुआ कि मशीन के ज़रिये निक़्ली आवाज़ अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि उसका अक्स, फोटो (Duplicate) होती है। और शरीअत नमाज़ के लिये इमाम की अस्ल आवाज़ का मुतालबा करती है। लिहाज़ा मशीन से पैदाशुदा आवाज़ पर नमाज़ किसी सूरत में जाइज़ नहीं होगी।

लौडिस्पीकर साईन्सदानों की नज़र में

लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ माईक पर कहने वाले की अस्ल आवाज़ है या मशीनी आवाज़, इस बारे में हम उसके माहेरीन साईन्सदानों और इन्जिनियरों की तहक़ीक़ात पेश कर रहे हैं ताकि लौडिस्पीकर को समझने में और आसानी हो। साईन्सदानों की तहक़ीक़ भी यही है कि लौडिस्पीकर माईक पर कहने वाले की आवाज़ को आगे नहीं बड़ाता बल्कि अपनी मशीन से उस आवाज़ से मिलती जुलती (Artificial) दूसरी आवाज़ पैदा करता है।

१) चुनानचे जनाब एम. आर. ए. खान साहब (बी.एस इन्जिनियर सी एन्ड फ़ाइनल गिरेड, लन्दन,- एम.ए.आई. पाकिस्तान,- पी.ए.एस इस्पेशलिस्ट टेलीकाम ट्राग,

जरमनी,- टी.इ.एस क्लिास, पिरिन्सपल कमीन्यूकेशन इस्टाफ कालेज हरीपूर, हज़ारा, पाकिस्तान) लिखते हैं कि....................

Voice from the speaker to the loudspeaker.

In between the speaking man and the audience there are three main devisees namely : i) The Microphone. ii) The Amplifier. iii) The Loudspeaker. The Current orginaled in the microphone is too weak to operate a loudspeaker directly. In order that good volume be obtained for the loudspeaker. A device which magnifies the microphone current and delivers it to the loudspeaker known as amplifier is used. The vibrations of the con--set the surrounding air in vibrations and these vibrations in air cause corresponding sound variations on the man's ear. Thus the speech of the speaking man is converted through the microphone. The electric current is amplified in the amplifier and the out put of the amplifier actuates the loudspeaker whose vibrations cause ser sation of sound on the listening man's ear.

(By. M.R.A. Khan, B.Sc. Engrs. (Gold Medalist) Alig., C & G (Final Grade) London. A.M.I.E., Pakistan., P.A.A.S. Specialist Telecomm. Trg. Germany., T.E.S. Class 1st Principal Telecomm. Staff College, Haripur (Hazara)

तर्जमा :- "लौडिस्पीकर में कहने वाले की आवाज़ और सुनने वाले के दरमियान तीन अहेम चीज़ें होती हैं । 1) माईक (Microphone), 2) एम्पलीफ़ायर मशीन, 3) लौडिस्पीकर (हार्न, इस्पीकर),--- माईक में करन्ट मौजूद रहता है मगर वोह बहुत कमज़ोर होता है जिसकी वजेह से वोह इस क़ाबिल नहीं होता कि वोह लौडिस्पीकर को आवाज़ बड़ाने में मद्द दे सके, इस कमी को पूरा करने के लिये एक मशीन जिसे एम्पलीफ़ायर कहते है इस्तेमाल की जाती हैं जो माईक के कमज़ोर इलेक्ट्रीक करन्ट को इस्पीकर (या हॉर्न) तक पहुँचाती है जिससे आवाज़ अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ उँची होती है और इस्पीकर के पर्दे हिलने से उसके एतराफ़ की हवा में हलचल पैदा होती है जो हवा में वैसी ही आवाज़ की तबदीलियों का इन्सान के कान पर सबब बनता है । इस तरह बोलने वाले की आवाज़ इलेक्ट्रीक करन्ट में माईक के ज़रिये तबदील हो जाती है और येह इलेक्ट्रीक करन्ट एम्पलीफ़ायर की मद्द से बड़ता है और एम्पलीफ़ायर से बड़ा हुआ इलेक्ट्रीक करन्ट हार्न के पर्दे को ऐसा हिलाता

है जिससे आवाज़ पैदा होती है और इन्सान के कान उसे महसूस करते है"।

२) मशहूर साईन्सदाँ एल केनूट (एम.पी.टी.ए., पी.एम.जी कोलम्बो पलान एक्सपर्ट टेलीकमीन्युकेशन, आस्ट्रेलिया,- टेलीकमीन्युकेशन ट्रेनिंग सेंटर, हरीपूर हज़ारा, पाकिस्तान) लौडिस्पीकर के मुतअल्लिक लिखते हैं.......

In my view the sound from the loudspeaker can not be regarded as the man's actual voice. The actual voice impresses it's sound vibrations upon the microphone Diaphragm, which controls an amplifier-loudspeaker system in such a way as to produce a recognisable copy of the original voice. The very term "Reproduction" commonly applied to such equipment itself implies that the equipment is producing the sound not the actual voice.

(By L.Canute (M.P.T.A.) P.M.G. Colombo Plan Expert (Telecomm. Australia) Tele Comm. Trg. Centre Haripur (Hazara) Pakistan.

तर्जमा :– "मेरी राय में लौडिस्पीकर से निकली हुई आवाज़ को आदमी की अस्ल आवाज़ समझना सही नहीं । अस्ल आवाज़ की हवा माईक के पर्दे पर दबाओ ड़ालती है और येह दबाओ एम्पलीफ़ायर मशीन और लौडिस्पीकर को इस तरह पर कन्ट्रोल करता है जिस से अस्ल आवाज़ से मिलती जुलती नक़्ली आवाज़ पैदा हो सके । आवाज़ की दोबारा पैदाईश Reproduction जो आम तौर पर इस मशीन के लिये कही जाती है इस बात को साबित करती है कि लौडिस्पीकर आवाज़ पैदा करता है न कि अस्ल आवाज़ को आगे ले जाता है"।

३) इसी तरह एक दूसरे साईन्सदाँ सी. डब्ल्यु. सी. रिचर्ड (बी. एस.सी. इंगलैन्ड,- ए.एम.आई.ई.ई. कोलम्बो एक्सपर्ट एडवाइज़र, हुकूमते पाकिस्तान,- टेलीकमीन्युकेशन इस्टाफ़ कालेज, हरीपूर हज़ारा) लिखते हैं कि..........

It is my considered opinion that this sound from the loudspeaker can not be regarded as being the actual sound of the man's voice. The sound that is heard from the loudspeaker is merely a replica of the man's voice and this replica is entirely artificial. The sound emanates form a mechanism known as an electric mechanical transducer and the sound itself, that is the air pressure variations which cause the sensation of hearing has absolutely no direct connection with the sound of the man's voice on a strictly

legalistic basis. It can unhesitatingly be said that the sound issuing from a loudspeaker is not the sound of a man's voice.

(By C.W.C. Richard, B.Sc. (Eng.) A.M.I.C.E., A.M.I.E.E. Colombo Plan Expert Advisor to the Government of Pakistan. Telecommunication Staff College, Haripur (Pakistan)

तर्जमा :- "मेरी सोची समझी राय येह है कि लौडिस्पीकर से जो आवाज़ निकलती है आदमी की अस्ल आवाज़ नहीं समझी जा सकती। और जो आवाज़ लौडिस्पीकर से सुनी जाती है आदमी की आवाज़ से मिलती हुई दूसरी आवाज़ है और येह मिलती जुलती आवाज़ बिल्कुल नक़्ली है। इलेक्ट्रीक मेकानिकी निज़ाम से बन कर जो आवाज़ निकलती है वोह ख़ूद हवा के दबाओ के उतार चड़ाओ का नतीजा होती है जिससे आवाज़ सुनाई देती है और येह आवाज़ इन्सानी आवाज़ से बिल्कुल कोई तअ़ल्लुक़ नहीं रखती है। बग़ैर किसी शक व शुबेह के यक़ीन के साथ येह कहा जा सकता है कि जो आवाज़ लौडिस्पीकर से निकल रही है वोह माईक पर बोलने वाले की अस्ल आवाज़ नहीं"।

४) आर. एच. हॉमंस गरान्डा (टी.वी.नेटवर्क लिमीटेड, गरान्डा हाउस, वाटर इस्ट्रेट, मानचेस्टर,- टेलेक्स डिन्स गेट) लिखते हैं कि......

This is to record my professional opinion that the sound of a voice emerging form a loudspeaker such as in use for a public address system can not be held to be the real voice of the person originating the sound. It is a close replica but nothing more and is no more the original voice than a copy of a painting will be held be the original painting.

(By R.H. Hammans Granada. T.V. Net Work Limited Granada House Water Street. Manchester Telex Deans Gate 7211)

तर्जमा :- "लौडिस्पीकर के मुतअ़ल्लिक मेरी राय येह है कि लौडिस्पीकर जो तक़रीर वग़ैरा के लिये इस्तेमाल किया जाता है उस से निकलने वाली आवाज़ को कहने वाले की अस्ल आवाज़ नहीं कहा जा सकता। और सिवाए इसके कुछ नहीं कि येह अस्ल आवाज़ से बहुत क़रीबी मिलती जुलती नक़्ली मशीनी आवाज़ है। लौडिस्पीकर की आवाज़ को आदमी की अस्ल आवाज़ समझना ऐसा ही है जैसे किसी तस्वीर की हुबहु नक़्ल (Xerox) को तस्वीर की अस्ल समझ लेना"।

इस मुतअ़ल्लिक और भी बहुत सारे साईन्सादानों के नज़रियात है

मज़ीद जानने के लिये "दी इस्टोरी आफ आर्टीफीशल वाईस" (The Story of Artificial Voice) नामी किताब का मुताला करें ।

साईन्सदानों के इन बयानात से भी साबित हो चुका कि लौडिस्पीकर की आवाज़ कहने वाले की अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि उसकी नक़्ल होती है जो कई टक्करों के बाद पैदा होती है और आवाज़ के टकराने से जो दूसरी आवाज़ पैदा होती है वोह सदा है जैसे कि पहाड़ और गुम्बद वग़ैरा से टकरा कर सुनाई देने वाली आवाज़ सदा होती है । और सदा का वोह हुक्म नहीं जो अस्ल आवाज़ का है । अस्ल आवाज़ बग़ैर किसी चीज़ से टकरा कर सिर्फ़ हवा के ज़रिये सुनने वाले के कान तक पहुँचती है और सदा चुंकि किसी चीज़ से टकरा कर पैदा होती है इसी लिये उससे आयते सज्दा सुनने पर सज्दा-ए-तिलावत वाजिब नहीं । इसी तरह लौडिस्पीकर से निकलने वाली आवाज़ पर भी नमाज़ का रूकू व सज्दा अदा न होगा और इसकी आवाज़ पर जो नमाज़ पढ़ी वोह ना जाइज़ व गुनाह और ज़िम्मे पर बाक़ी रहेगी, जिस को दोबारा सही तरीक़े से पढ़ना फ़र्ज़ होगा वरना नमाज़ को छोड़ने वाला, सख़्त गुनाहगार होगा । नमाज़ के लिये इमाम की अस्ल आवाज़ का होना ज़रूरी है, नक़्ली मशीन से पैदाशुदा आवाज़ पर नमाज़ हरगिज़ न होगी ।

लौडिस्पीकर आक़िल व बालिग़ नहीं

नमाज़ के शराइत में से शरीअ़ते इस्लामी की एक अहेम शर्त येह भी है कि इमाम मुसलमान, मुत्तक़ी, आ़क़िल (होशमन्द, समझदार) व बालिग़ हो । मुकब्बिर के लिये भी ज़रूरी है कि मुसलमान, आक़िल हो । अगर इमाम ना बालिग़ है तो उसकी इक़्तेदा में किसी की भी नमाज़ न होगी । इसी तरह अगर मुकब्बिर ग़ैर मुस्लिम व ग़ैर आ़क़िल हो, उसकी तकबीरों पर जितने लोग रूकू व सुजूद करेंगे उनमें से किसी की भी नमाज़ न होगी । अब इस मस्अले को समझ लेने के बाद ज़रा बताईये ....

येह लौडिस्पीकर जो मुकब्बिर की जगह आपने जगह जगह लगा दिया है जो इमाम की तकबीरों को पीछे की आख़री सफ़ तक शोर के साथ पहुँचा रहा है येह बालिग़ है या ना बालिग़ ? आ़क़िल (अक़्ल रखने वाला) है

या बेअक्ल ?...... यक़ीनन अगर आप आक़िल व बालिग़ है तो ज़रूर यही कहेंगे कि लौडिस्पीकर आक़िल व बालिग़ नहीं है वोह तो सिर्फ़ एक बेजान मशीन है जो करन्ट की मद्‌द से चलती है । खुदारा इन्साफ़ कीजिये ! जब माईक के मुतअल्लिक़ येह दावा नहीं किया जा सकता कि वोह बालिग़ व आक़िल है तो फिर उससे सुनाई देने वाली आवाज़ों पर नमाज़ पढ़ना, रूकू व सुजूद करना किस तरह दुरूस्त हो सकता है !

मस्अला "फ़तावा-ए-आलमगीरी" और "फ़तावा-ए-निज़ामिया" में हैं.. "अगर किसी ने परिन्दे या जानवर या ऐसी चीज़ जिसमें रूह और अक़्ल नहीं होती इनमें से किसी से आयते सज्दा सुनी तो सज्दा वाजिब न होगा"।

अब आप ख़ूद सोचिये ! जब कोई परिन्दा कुरआन की आयते सज्दा पढ़े तो सुनने वाले पर सज्दा-ए-तिलावत वाजिब नहीं, इसलिये कि परिन्दा इन्सान की तरह अक़्ल व समझ नहीं रखता । अब अगर किसी में हौसला हो तो आए और साबित करें कि लौडिस्पीकर आक़िल व बालिग़ है, रूह रखता है, बड़ा होशियार और समझदार है !

लौडिस्पीकर नमाज़ में शरीक नहीं

शरीअ़ते इस्लामी का मस्अला है कि जो शख़्स मुकब्बिर बने उसके लिये ज़रूरी है कि वोह भी इमाम के पीछे उसी नमाज़ की नियत करे जो नमाज़ इमाम पढ़ा रहा है और नमाज़ में उसी इमाम की इक़्तेदा भी करे । अगर ऐसा शख़्स मुकब्बिर बना जो उस नमाज़ में शरीक नहीं न उसकी नियत उस इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने की है, और न ही वोह अपने इमाम की नमाज़ में नियत के साथ इक़्तेदा कर रहा है, तो ऐसे मुकब्बिर की तक़बिरों को सुन कर जितने लोग रूकू व सुजूद करेंगे उनमें से किसी की भी नमाज़ न होगी । शरीअ़त का येह क़ानून (मस्अला) हमारे अइम्मा-ए-दीन ने आज से सदियों पहले अपनी बड़ी बड़ी किताबों में नक़्ल फ़रमाया है ।

दलील हज़रत अल्लामा इमाम तहतावी रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो "हाशिया मराक़िल फ़लाह" में फ़रमाते हैं.... ||

قصد التبليغ فقط فلا صلوة له و لا لمن اخذ بقوله فى هذا الحالة لانه اقتدى بمن ليس فى صلاة كما فى فتاوى الغزى .

"यानी मुकब्बिर ने तकबीर कहते वक़्त अपने इमाम की इक़्तेदा में ख़ास नमाज़ पढ़ने की नियत न की सिर्फ़ येह इरादा किया कि मुक़तदियों (नमाज़ियों) को तकबीर सुनाना है तो उस मुकब्बिर और उसकी आवाज़ पर जो लोग रूकू व सुजूद करें किसी की नमाज़ न होगी क्योंकि उन्हों ने ऐसे मुक़ब्बिर की तकबीरों पर नमाज़ पढ़ी जो ख़ूद उस नमाज़ में शरीक नहीं, इसी तरह फ़तावा-ए-गुज़्ज़ा में भी है"। (हाशिया मराक़िल फ़लाह, जिल्द 1, सफ़ा नं. 143)

दलील हज़रत अल्लामा इमाम इब्ने आ़बेदीन शामी रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो "तम्बीहे ज़वील अफ़हाम" में नक़्ल फ़रमाते हैं.......

المبلغ اذا قصد التبليغ فقط خاليا عن قصد الاحرام فلا صلاة له ولا لمن يصلى على تبليغه فى هذه الحالة لانه اقتداء لمن لم يدخل فى صلاة .

"यानी मुकब्बिर ने इमाम की तकबीरों को मुक़्तदियों तक पहुँचाने का इरादा किया और ख़ूद उस नमाज़ की नियत न की तो उन मुक़्तदियों की नमाज़ न होगी क्योंकि उन मुक़्तदियों ने ऐसे शख़्स की तक़बीरों पर रूकू व सुजूद किया जो ख़ूद उस नमाज़ के पढ़ने की नियत नहीं रखता और इमाम के साथ नमाज़ में शामिल नहीं"।

(तम्बीहे ज़वील अफ़हाम, जिल्द 1, सफ़ा नं.140, रद्दुलमोहतार, सफ़ा 351)

येह मस्अला फ़िक़ाह् की और भी मशहूर किताबों मसलन-- "दुर्रेमुख़्तार", "तहतावी शरीफ़", वग़ैरा में भी मौजूद है । इन सब का हासिल यही है कि मुकब्बिर जो तकबीर पुकारने के लिये मुक़र्रर किया गया है उसका अपने इमाम की इक़्तेदा करना, उसी नमाज़ की नियत करके तकबीरे तहरीमा की नियत करना, उसी नमाज़ में शरीक होना, ज़रूरी है वरना उसकी तकबीरों को सुन कर जो लोग रूकू व सुजूद करेंगे उनमें से किसी की भी नमाज़ न होगी .... अब लौडिस्पीकर को देखिये !....... लौडिस्पीकर इन्सान नहीं, उसमें न तो नियत करने की सलाहियत है कि वोह नियत करे कि मैं इस इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ, न वोह तकबीरे तहरीमा की नियत कर सकता है, न वोह रूकू व सुजूद करने और सलाम फेर कर नमाज़ से बाहर होने

की सलाहियत रखता है, उस बेचारे पर तो नमाज़ फ़र्ज़ भी नहीं, और न ही उसका नमाज़ से किसी तरह का कोई तअ़ल्लुक है।

इससे साफ़ ज़ाहिर है कि जब एक ज़िन्दा इन्सान बग़ैर इस नियत के कि इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ मुकब्बिर बन जाए और इमाम की तकबीरों को सुन कर तकबीरें पुकारे तो उसकी आवाज़ सुन कर रूकू व सुजूद करने वालों की नमाज़ बरबाद हो जाती है तो लौडिस्पीकर एक ऐसी बेजान मशीन है जो न तो नियत कर सकती है न इमाम के साथ रूकू व सुजूद कर सकती है, बल्कि उसकी बेबसी का तो येह हाल है कि अगर इमाम नमाज़ में कुछ भूल जाए तो वोह लुक़्मा भी नहीं दे सकती। उसे चलाने के लिये इलेक्ट्रीक करन्ट भी ज़रूरी है, और येह इलेक्ट्रीक करन्ट भी एक बाहरी ताक़त है जो कहीं से वायेर के रास्ते आकर लौडिस्पीकर को शोर मचाने पर मजबूर कर रही है अगर येह इलेक्ट्रीक करनट कहीं ख़ूद रूक जाए (यानी लाईन बन्द हो जाए) तो येह बेचारा लौडिस्पीकर गूंगा हो कर रह जाए। लिहाज़ा अब ऐसी बेबस मशीन की तकबीरों की आवाज़ सुन कर जो हज़रात रूकू व सुजूद करेंगे तो उनकी नमाज़ कैसे होगी !

आईये अब एक और अहेम मस्अले को समझते चलें ताकि लौडिस्पीकर पर नमाज़ की हक़ीक़त ख़ूब ज़ाहिर हो जाए।

मस्अला "फ़तावा-ए-आ़लमगीरी" व "इनाया शरहे हिदाया मअ़ फ़तहुल क़दीर" व "शरहे निक़ाया" व "फ़तावा-ए-रज़विया" और दूसरी कई किताबों में येह मस्अला मौजूद है कि ....

"इमाम जमाअ़त से नमाज़ पढ़ा रहा था कि किसी आयत या नमाज़ के किसी रूक्न में उस से ग़लती हो गई और किसी ऐसे शख़्स ने इमाम को लुक़्मा दिया जो उस इमाम के साथ उस नमाज़ में शरीक नहीं था, और इमाम ने उसका लुक़्मा कुबूल कर लिया तो इमाम की नमाज़ फ़ासिद (ख़त्म) हो जाएगी और इमाम के साथ साथ उसकी इक़्तेदा में पढ़ रहे तमाम मुक़्तदियों की नमाज़ भी फ़ासिद हो जाएगी। क्योंकि इमाम ने एक ऐसे बाहरी शख़्स का लुक़्मा लिया जो उस नमाज़ में शामिल नहीं था, लिहाज़ा इमाम के साथ सब की नमाज़ बरबाद हो गई। इसी तरह कोई शख़्स तन्हा नमाज़ पढ़

रहा था और किसी दूसरे शख़्स ने उसे किसी आयत में लुक़्मा दिया और उसने कुबूल कर लिया तो उसकी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी ।

(फ़तावा-ए-आलमगीर, जिल्द 1, सफ़ा नं. 96,--
इनाया शरहे हिदाया मअ फ़तहुल क़दीर, जिल्द 1, सफ़ा नं. 351,--
शरहे निकाया, जिल्द 1, सफ़ा नं. 92, फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 3, सफ़ा नं. 412)

इस मस्अले को समझ लेने के बाद अब लौडिस्पीकर को देखिये ! लौडिस्पीकर नमाज़ में शरीक नहीं न उसमें नमाज़ पढ़ने की सलाहियत है, न वोह नमाज़ के अरकान अदा कर सकता है, न वोह नमाज़ी है, न उसका नमाज़ से कोई तअ़ल्लुक़ है । इसी से मालूम हुआ कि जब इमाम व तन्हा नमाज़ी उस शख़्स का लुक़्मा नहीं ले सकते जो नमाज़ से बाहर है तो अब मुक़्तदियों का नमाज़ से बाहर की बेजान मशीन लौडिस्पीकर की आवाज़ सुन कर रूकू व सुजूद करना क्यों कर जाइज़ होगा, और येह एक हक़ीक़त है कि लौडिस्पीकर नमाज़ में शरीक नहीं, न नमाज़ में शरीक होने की सलाहियत रखता है इस लिये उसकी आवाज़ पर इक़्तेदा करना नमाज़ को यक़ीनन बरबाद कर देगा । इमाम से लेकर आख़री सफ़ों तक लौडिस्पीकर एक दरमियानी वास्ता हैं जिसका नमाज़ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं । इमाम की आवाज़ माईक तक पहुँची, माईक से एम्पीलीफ़ायर मशीन तक का तअल्लुक़ वायेर से है......फिर एम्पीलीफ़ायर मशीन से इस्पीकर तक का तअल्लुक़ भी एक दूसरे वायेर से है..... येह तमाम आलात (पुर्ज़ो) का नमाज़ से कोई तअ़ल्लुक नहीं, इन तमाम आलात को नमाज़ से बाहर की चीज़ें होते हुए नमाज़ में शामिल करना और इनके ज़रिये नमाज़ के अरकान अदा करना बेशक नमाज़ की बरबादी का सबब है ।

इमाम का माईक में आवाज़ पहुँचाना

अकसर देखा गया है कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाते वक़्त इमाम साहब की पूरी कोशिश इस बात की तरफ़ होती है कि उनकी आवाज़ अच्छी तरह से माईक तक पहुँचे । इसके लिये बाज़ अव्क़ात कुछ इमाम अपना मुँह आगे की तरफ़ झुका कर माईक के क़रीब कर देते हैं, और अगर छोटा माईक

कुर्ते में लगा होतो गर्दन सीने से चिपका लेते हैं। ग़र्ज़ कि नमाज़ के दौरान पूरी तवज्जेह इस तरफ़ होती है कि आवाज़ साफ तौर पर माईक में पहुँचे। इस इरादे और इस कोशिश के सबब उन की नमाज़ में दिलचस्पी कम हो जाती है और सारा ध्यान माईक की तरफ़ रहता है।

मस्अला मुस्तनद किताब "बरीक़ये महमूदिया शरहे तरीक़ा-ए-मुहम्मदिया" में हैं....."यानी नमाज़ में दिल का किसी और चीज़ की तरफ़ लगा होना दिल की गहराई के साथ अल्लाह की ईबादत करने में रूकावट बनता है।

ان شغل القلب بغير جنس الصلاة مانع الخشوع ــ

आयत कुरआने करीम में अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है...

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ٥ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَ ٥ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ٥

तर्जमा :- बेशक कामयाबी को पहुँचे वोह ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में दिल की गहराई के साथ अल्लाह की बारगाह में गिड़गिड़ाते हैं और वोह जो किसी बेहुदा बात की तरफ़ तवज्जेह नही करते।

(कुरआने करीम, पारा 18, सूरए मोमेनून, आयत 1)

हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं....

ان تعبد الله كانك تراه فان لم تكن تراه فانه يراك ... الخ

"नमाज़ ऐसी पढ़ो गोया खुदा को देख रहे हो और इतना न हो सके तो ख़्याल करो कि खुदा तुम्हें देख रहा है"।

(बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, नसाई., इब्ने माजा, मिश्कात शरीफ़, वग़ैरा)

मुसलमानो ! अल्लाह व रसूल ﷻ و ﷺ कामयाब मोमिन उसे फ़रमायें कि जब वोह नमाज़ में होतो अल्लाह की याद में दिल की गहराई से डूब जाए और उसकी बारगाह में आजिज़ी से गिड़गिड़ाए। नमाज़ पढ़े तो इस तरह गोया खुदा को देख रहे हो और इतना न हो सके तो येह तसव्वुर रखें कि खुदा उन्हें देख रहा है। लेकिन अफसोस ! हमारे मौलवी साहब की येह कैफ़ियत नही, उनका तो सारा ध्यान इस कोशिश में हैं कि मेरी आवाज़ माईक में अच्छी तरह पहुँचे, अब क्या ख़ाक अल्लाह की बारगाह मे दिल लगा होगा !

मोहक़्क़ीके अहलेसुन्नत उस्ताज़ुल ओलमा हज़रत अ़ल्लामा मौलाना

मुहम्मद हसन अली रज़वी साहब किबला दामतबरकातहुम आलिया (पाकिस्तान) अपनी किताब "लौडिस्पीकर पर नमाज़ मअ़ तहकीकाते अकाबिरे अहलेसुन्नत" में अपना एक वाक़ेआ यूँ बयान करते है कि..................

"एक बार मुझे येह मालूम हुआ कि एक मस्जिद में ऐसा माईक लगाया गया है जो इमाम के आगे न रख कर उसके कुर्ते से पीन की मद्द से जोड़ दिया जाता है, जिससे इमाम को नमाज़ की हालत में माईक की तरफ़ अपना मुँह झुकाने की बुरी आ़दत से निजात मिल गई है । चुंकि येह एक नई चीज़ थी इस लिये हम ने उसका जाएज़ा लेने का इरादा किया और उस मस्जिद में ख़ास जमाअ़त के वक़्त पहुँच गए, हम ने देखा कि इमाम साहब के कुर्ते में एक छोटा सा माईक लगा हुआ है जो एक बारीक लम्बे तार के ज़रीये एम्पलीफ़ायर मशीन से जूड़ा हुआ है ..... इमाम साहब बहुत अच्छी क़िर्अत कर रहे थे......क़िर्अत ख़त्म हुई और वोह रूकू में गए फिर रूकू से उठे और सज्दे की तकबीर बुलन्द की, फिर सज्दे में जाने से पहले इमाम साहब ने पहले अपना जुब्बा समेटा फिर माईक के बारीक लम्बे तार को खींच कर अपने दोनों घुंटनों के दरमियान लाए और तार को थामे हुए सज्दे में गए, ऐसा लगता था कि उन्हें ड़र था कि कहीं तार उनके पॉव में न उलझ जाए । अब रूकू और सज्दे के दरमियान इमाम साहब ने येह जो फ़ाज़िल (ज़्यादा की) हरकतें कीं वोह अरकाने नमाज़ के किस ख़ाने में फिट की जाऐंगी ? हमारे हिसाब से तो इमाम साहब की येह हरकतें उन्हें नमाज़ से ख़ारिज करने के लिये काफ़ी थीं । अब बेचारे नमाज़ियों को क्या ख़बर कि इमाम साहब ने उनकी नमाज़ को लौडिस्पीकर की कुरबानगाह पर उल्टी छुरी से हलाल कर दिया है । (लौडिस्पीकर पर नमाज़....., सफ़ा 92)

येह है रसूलुल्लाह की सुन्नत छोड़ कर नमाज़ पढ़ने का नतीजा कि नमाज़ अब सिवाए कपड़े समेटने और लपटने के कुछ नहीं रह गई है ! अब तो हालात इतने बदतर हो चुके है कि अकसर लौडिस्पीकर के आशिक़ मौलवी साहेबान लौडिस्पीकर के बग़ैर नमाज़ पढ़ाने के तसव्वुर से ही कॉंपने लगते है । अगर उनसे बग़ैर लौडिस्पीकर के नमाज़ पढ़ाने के लिये कहा जाए तो ऐसे खौफ़ज़दा हो जाते हैं कि गोया लॅंगड़े से बेसाखी छीनी जा रही हो ।

लौडिस्पीकर के आशिक इमाम

हमारा मुशाहिदा है कि बाज़ मौलवी व हाफ़िज़ साहेबान लौडिस्पीकर के इतने बड़े आशिक़ होते हैं कि अपनी महबूबा लौडिस्पीकर के बग़ैर वोह नमाज़ पढ़ाने का तसव्वुर भी नहीं कर सकते । मस्जिद में दो तीन सफ़ें नमाज़ियों की है लेकिन वोह अपनी महबूबा लौडिस्पीकर के सामने अदब से हाथ बाँधे खड़े नज़र आएगे ! नमाज़े तरावीह् में दस बीस आदमी है लेकिन लौडिस्पीकर इस्तेमाल हो रहा है ! शबीना में उनके पीछे एक अधमरा शख़्स भी नहीं होगा लेकिन वोह माईक पर चींख ज़रूर रहे होंगे ! अब तो सूरते हाल यहाँ तक पहुँच चुकी है कि इमाम और लौडिस्पीकर के दरमियान इश्क़ उस इन्तेहा को पहुँच चुका है कि .... गोया ....

من تو شدم تو من شدی، من تن شدم تو جاں شدی
تا کس نہ گوید بعد ازیں من دیگرم تو دیگری

यानी इमाम साहब अपनी महबूबा लौडिस्पीकर की बारगाह में इज़्हारे इश्क़ो मुहब्बत के साथ अर्ज़ कर रहे हैं कि..."अए मेहरबान जाने मन लौडिस्पीकर ! "मैं" अब "तू" हो गया हूँ और "तू" "मैं" बन गया है । मैं तन हूँ और तू मेरी जान है, मुझ में और तुझ में अब इस तरह ज़ाती इत्तेहाद हो गया कि ... अए जाने मन लौडिस्पीकर ! तेरे सामने मेरे खड़े रहने के बाद किसी की मजाल न हो सकेगी कि येह कह सके कि इमाम अलग ज़ात है और लौडिस्पीकर अलग ज़ात है, अरे अरकान में इत्तेहाद न सही लेकिन आवाज़ में तो तेरा मेरा इत्तेहाद है मेरी आवाज़ तेरी आवाज़, तेरी आवाज़ मेरी आवाज़, और इस बुनियाद पर अब तेरी नियत मेरी नियत और मेरी नियत तेरी नियत है"।

जनाबे वाला ! इसे पढ़ने के बाद येह न सोचें कि येह एक मज़ाक है ! जी नहीं ! येह ज़ोरे बयानी नहीं बल्कि इमाम व लौडिस्पीकर का येह इश्क़ अब कानों से आँखों तक आ चुका है ! यकीन नहीं तो आगे पढ़ीये......

.... हज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद हसन अली रज़वी साहब किबला (पाकिस्तान) अपनी किताब "लौडिस्पीकर पर नमाज़ मअ़ तह्क़ीक़ाते अकाबिरे अहलेसुन्नत" में लिखते है कि................

"एक निहायत ही अफ़सोसनाक वाक़ेआ लाहोर के क़रीब एक गावँ चूहंग में पेश आया.... हमारी जामा मस्जिद के मौलाना साहब ने फ़ज्र की नमाज़ में सूरए फ़ातिहा पढ़ते हुए अचानक सलाम फेर दिया और कहा लौडिस्पीकर नहीं चल रहा है, इस्पीकर चलाओ ! इस वाक़ेअ़े के बीसों गवाह पेश किये जा सकते हैं । (लौडिस्पीकर पर नमाज़...., सफ़ा 26)

अस्तग़फ़िरूल्लाह ! बताईये अब ऐसे इमाम साहब के बारे ख़ूद लौडिस्पीकर के लिये सर धड़ की बाज़ी लगाने वाले येह नाम निहाद शेख़े ज़माना व ग़ाज़ी-ए-गुफ़्तार क्या हुक्म बयान फ़रमाऐंगे ?

एक अफ़सोसनाक वाक़ेआ

फ़ाज़िले गिरामी विक़ार हज़रत अ़ल्लामा मौलाना फ़ख़रूद्दीन अहमद क़ादरी मिस्बाही साहब क़िबला (नागपूर) के साथ शहर सूरत में येह वाक़ेआ पेश आया कि हज़रत एक मस्जिद में जुम्अ़ अदा करने के लिये पहुँचे । अज़ान हो चुकी थी, थोड़े थोड़े नमाज़ी मस्जिद में आते जा रहे थे । हज़रत मौलाना पहली सफ़ में जा कर बैठ गए । मस्जिद के इमाम साहब ने तक़रीर की, खुत्बा हुआ, फिर मुअज़्ज़िन ने नमाज़ के लिये इक़ामत पुकारी, लोग सफ़ बना कर नमाज़ के लिये खड़े हो गए । तभी हज़रत मौलाना फ़ख़रूद्दीन अहमद साहब ने देखा कि इमाम साहब ने छोटा सा माईक अपने कुर्ते में पिन की मद्‌द से लटका लिया लिया । हज़रत ने चाहा कि सफ़ से निकल जाऐं, लेकिन जब पीछे पलट कर देखा तो मस्जिद पूरी तरह भरी हुई थी, सफ़्रों को चीर कर निकलना मुश्किल तो था ही, साथ ही फ़ितना व इन्तिशार का अन्देशा भी था, चुनानचे मजबूरन खड़े रहना पड़ा । इमाम साहब ने नमाज़ शुरू की । अभी पहली रकअ़त ही चल रही थी कि एम्पलीफ़ायर मशीन ने रेड़ियो स्टेशन कैच कर लिया । अब क्या था ! इमाम साहब की किर्अ़त तो एक तरफ़ पूरी मस्जिद में येह कुफ़्री आवाज़ गुंज रही थी ......"खुदा भी आसमाँ से जब ज़मीं पर देखता होगा मेरे महबूब को किसने बनाया......" (मआ़ज़ल्लाह)। अब किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था, आख़िर कुछ देर बाद मजबूरन एक साहब नमाज़ तोड़ कर सफ़्रों को चीरते हुए एम्पलीफ़ायर मशीन तक पहुँचे

और उन्होंने माईक की बटन बंद कर दी । लेकिन..... अब एक दूसरी और मुसीबत थी वोह येह कि मुकब्बिर तो रखा ही नहीं गया था, अब कोई रूकू में है तो कोई सज्दे में । जैसे तैसे नमाज़ ख़त्म हुई । फिर मज़ीद एक और नया हंगामा ! कुछ लोग कहने लगे नमाज़ नहीं हुई दोबारा पढ़ाई जाए, कुछ कह रहे थे हो गई । ग़र्ज़ कि एक अजीब हंगामा और चू-चू का मुरब्बा था ।. .... वैसे येह वाक़ेआ हज़रत मौलाना फ़ख़रूद्दीन साहब क़िबला के साथ पेश आया था लेकिन अक्सर मौक़ों पर ऐसे वाकेआत होते रहते हैं कि लौडिस्पीकर रेडियो स्टेशन कैच कर लेता है और गाने और भजन खुदा के घर में गूंजने लगते है । इस लिये लौडिस्पीकर का एक यही नुक़सान क्या कुछ कम है ? !!

लौडिस्पीकर और काफिरों की ईबादत

कई बार येह भी देखा गया है कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ हो रही होती है कि अचानक मशीन में ख़राबी आने से वोह सिटियाँ मारने लगता है, अब इमाम साहब की आवाज़ तो एक तरफ़ सिटियों की आवाज़ सर दर्द बन जाती है । आख़िर यही होता है कि सिटियों की परेशानी से बचने के लिये या तो जल्दी जल्दी नमाज़ ख़त्म कीजिये या फिर कोई साहब अपनी नमाज़ तोड़ कर माईक बन्द करें । कभी कभी येह भी देखा गया है कि मस्जिद में लगे चार इस्पीकरों में से तीन काम कर रहे है और चौथा सिटीयाँ ही बजा रहा है या और तरह की बच्चों को ड़ारा देने वाली आवाज़ें निकाल रहा है । दौराने नमाज़ सिटियों का येह बेहुदा शोर नमाज़ की अज़मत को ख़त्म कर देता है जिसकी वजेह से अब नमाज़ ईमान वालों की नमाज़ नहीं बल्कि काफ़िरों जैसी ईबादत बनकर रह जाती है.....कुरआने अज़ीम ऐसी नमाज़ जिस में सिटियों का शोर भी शामिल हो उसे काफ़िरों की नमाज़ क़रार देता है जैसा कि...

आयत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है..

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ

तर्जमा :- "और उन (काफिरों) की नमाज़ खाना-ए-काबा के नज़दीक सिर्फ़ येह थी सिटियाँ बजाना और तालियाँ

بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ○

बजाना, तो अब अज़ाब का मज़ा चखो अपने उस कुफ़्र के सबब"। (कुरआने करीम, पारा 9, सूरए अनफ़ाल, आयत 35)

अचानक इलेक्ट्रीक लाईन बन्द हो जाना भी एक आ़म बात है । लौडिस्पीकर होने से चुँकि मुकब्बिर नहीं रखा जाता ऐसे हालात में अचानक इलेक्ट्रीक गोल हो जाए तो नमाज़ियों की समझ में कुछ नहीं आता । अब नमाज़ में दिल लगना तो दूर, येह भी समझ में नहीं आता कि इमाम रूकू में कब गया सज्दा कब किया । पीछे खड़े नमाज़ी हैरत से एक दूसरे का मुँह तकते रहते हैं । हम कहते हैं लौडिस्पीकर लगा कर मुकब्बिर की सुन्नत ख़त्म कर देने का क्या येह वबाल भी कुछ कम है कि लौडिस्पीकर के अचानक ख़राब हो जाने या उस के काम न करने से लोगों की नमाज़ें हैरत और परेशानी का शिकार हो जाती हैं ।

मुनाफिकों में नाम आने का अन्देशा

जुम्अ़े के रोज़ नमाज़ियों की बहुत ज़्यादा तादाद होती है । वोह मस्जिदें जहाँ लौडिस्पीकर पर नमाज़ होती है वहाँ जुम्अ़े की नमाज़ में ख़ास तौर पर पाबन्दी से लौडिस्पीकर लगाया जाता है । हम येह साबित कर चुके हैं कि लौडिस्पीकर की आवाज़ सुन कर नमाज़ पढ़ने वालों की नमाज़ ही नहीं होती । इस से साफ़ ज़ाहिर है कि जब जुम्अ़े की नमाज़ में भी लौडिस्पीकर लगाया जाएगा तो जुम्अ़े की नमाज़ भी न होगी । कितने अफ़सोस की बात है कि कुछ लोग सिर्फ़ अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात और ज़िद को निभाने के लिये जुम्अ़े की अज़ीम ईबादत को तबाह व बरबाद कर रहे हैं ! सुन्नी मुसलमानो ! ग़ौर से सुनो..........

आयत अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त इरशाद फ़रमाता हैं ....

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ○

तर्जमा :- उन (नेक लोगों) के बाद कुछ ना फ़रमान पैदा हुए जिन्हों ने अपनी नमाज़ें बरबाद कर दीं और नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी की अनक़रीब

उन्हें सख़्त अज़ाब मिलना है।

(कुरआने करीम, पारा 16, सूरए मरयम, आयत 59)

जुम्अ़े की नमाज़ में लौडिस्पीकर लगाकर अपने हाथों अपनी नमाज़ें बरबाद करने वालें ग़ौर से इसे भी पढ़े !........

हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं......

من ترك ثلٰث جمعة تهاونا طبع الله على قلبه۔

"जिस ने तीन जुम्अ़े जानबूझ कर छोड़ दिये अल्लाह तआ़ला उस के दिल पर मोहर कर देता है"।

(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मिश्कात शरीफ़, जिल्द 1, हदीस नं. 1291, सफ़ा नं. 293)

हदीस और फ़रमाते हैं प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम....

من ترك الجمعة من غير ضرورة كتب منافقا فى كتاب لايمحى ولا يبدل۔

"यानी जिसने जानबूझ कर एक जुम्अ़े को छोड़ा उसका नाम मुनाफ़िक़ों में ऐसी जगह लिखा जाता है जिसे मिटाया नहीं जाता और न उस को तबदील किया जाता है"।

(मुस्नदे इमाम शाफ़ी, बहवाला मिश्कात शरीफ़, जिल्द 1, हदीस नं. 1297, सफ़ा नं. 294)

अब कुरआने पाक की आयते करीमा और रसूलुल्लाह की इन हदीसों को सामने रख कर ठन्ड़े दिल से सोचिये ! जो लोग जुम्अ़े की नमाज़ लौडिस्पीकर पर पढ़ रहे हैं क्या उनके एक दो नहीं बल्कि कई जुम्अ़े बरबाद नहीं हो रहे है ? क्या वोह जानते बूझते सिर्फ़ अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की तकमील में अपनी नमाज़ें तबाह नहीं कर रहे हैं ?

जानबूझ कर जुम्आ़ छोड़ने और जानबूझ कर ग़ैर शरई तरीक़े से जुम्आ़ पढ़ने में कोई फ़र्क़ नहीं है ।

अए अज़ीज़ ! अपने हाल पर रहम कर, और जान लें कि बग़ैर लौडिस्पीकर के नमाज़े जुम्आ़ के हो जाने पर तो सब का इत्तेफ़ाक़ है, किसी का कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, मुकब्बिर की सुन्नत से भी किसी को कोई इन्कार नहीं, फिर क्यों नमाज़ जैसी अहेम ईबादत में लौडिस्पीकर लगा कर रिस्क लिया जाए, जुम्अ़े की अज़ीम ईबादत को अपने ही हाथों बरबाद करके अपना नाम मुनाफ़िक़ों की फ़ेरिस्त में लिखवाने का क्यों ख़तरा मोल लिया जाए !

नमाज़ में लौडिस्पीकर लगाना मुस्तहब भी नहीं !

मौजूदा दौर के वोह एक दो ओ़लमा जो नमाज़ में लौडिस्पीकर के इस्तेमाल को जाइज़ कहते है (जिनका बयान आगे आएगा) उनके नज़दीक भी लौडिस्पीकर का नमाज़ में इस्तेमाल सिर्फ़ मुबाह (यानी सिर्फ़ जाइज़) है, फ़र्ज़, वाजिब तो बहुत दूर मुस्तहेब (नेक काम) भी नहीं । और न ही उनमें से किसी का येह कहना हैं कि नमाज़ में लौडिस्पीकर होतो नमाज़ का सवाब ज़्यादा हो जाएगा । बल्कि इसके बरअक्स तमाम ओ़लमा (उन में वोह एक दो ओ़लमा भी शामिल है जो नमाज़ में लौडिस्पीकर को जाइज़ क़रार देते है) इस बात पर मुकम्मल इत्तेफ़ाक रखते हैं कि बग़ैर लौडिस्पीकर के मुकब्बिर रख कर पढ़ी जाने वाली नमाज़ बिला शक व शुबाह् जाइज़, क़ाबिले कुबूल, सही व दुरूस्त है ।

लिहाज़ा जब लौडिस्पीकर को नमाज़ में जाइज़ मानने वाले ओ़लमा भी लौडिस्पीकर के नमाज़ में होने को ज़्यादा सवाब मिलने का ज़रिया नहीं समझते, बल्कि बग़ैर लौडिस्पीकर के नमाज़ हो जाने के वोह भी क़ायल है तो फिर क्यों बिला वजेह सिर्फ़ अपनी झूटी शान और ज़िद की ख़ातिर लौडिस्पीकर नमाज़ में दाख़िल करके ख़तरा उठाया जाए, और अपनी नमाज़ों को दाव पर लगाया जाए ।

अलहमदुलिल्लाह ! हम ने यहाँ लौडिस्पीकर की बहुत सी शरई बुराईयों को तफ़्सील से ज़िक्र कर दिया है । लौडिस्पीकर पर नमाज़ के ना जाइज़ होने पर बहुत सी दलीलें और भी बयान की जा सकती हैं लेकिन हम ने सिर्फ़ उन्हीं दलीलों को बयान किया, जो आसानी से आ़म मुसलमानों की समझ में आ जाएँ ।

अब हम यहाँ चन्द वोह बहाने और एतेराज़ात बयान करते हैं जो अक्सर लौडिस्पीकर के शैदाई लोगों में बयान करते हैं और ख़ूद तो फ़रेब में है और दूसरों को भी फ़रेब में ड़ालते है ।

नमाज़ी ज़्यादा हो गए है !

लौडिस्पीकर के आशेक़ीन नमाज़ में लौडिस्पीकर के इस्तेमाल के लिये येह दलील पेश करते हैं कि नमाज़ियों की तादाद बड़ गई है । पीछे की सफ़्रें में इमाम की आवाज़ सुनाई नहीं देती है । या मस्जिद दो मंज़िला है उपर की मंज़िल में आवाज़ नहीं पहुँचती, इसलिये लौडिस्पीकर लगाना ज़रूरी है ।

जवाब : इस का मुख़्तसर जवाब तो येह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम से लेकर आज तक हज़ारों लाखों मुसलमान नमाज़ पढ़ते आ रहे हैं । पहले के दौर में भी इमाम की आवाज़ पीछी की सफ़ों तक नहीं पहुँचती थी । इसी लिये तो शरीअत ने मुकब्बिर रखने का हुक्म दिया । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से लेकर आज तक मुकब्बिर रखने का सिलसिला चला आ रहा है ।

मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ रदीयल्लाहो तआला अन्हो अपनी मलफूज़ात "अलमलफूज़" में नक़्ल फ़रमाते हैं कि.......

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने जो आख़री हज फ़रमाया था उसमें आप के साथ तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार (1,24,000) सहाबा-ए -किराम थे"। (अलमलफूज़, जिल्द 3, सफ़ा नं. 59)

ज़ाहिर है जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतनी बड़ी जमाअत को खाने काबा में जमाअत से नमाज़ पढ़ाते थे तो आपकी आवाज़ हर सफ़ तक नहीं पहुँचती थी चुनानचे आप मुकब्बिर रख कर नमाज़ पढ़ाते थे ।

इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे हुनैन में चौदा हज़ार (14,000) सहाबा-ए-किराम को नमाज़ें बा जमाअत पढ़ाई ।

जंगे तुबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इक़्तेदा में तीस हज़ार (30,000) सहाबा-ए-किराम ने ख़ास मैदाने जंग में नमाज़ें अदा की ।

(मुलख़्ख़स : मदारिजुन्नुबुवत, जिल्द 2, सफ़ा नं. 514 व 581)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद भी कई जंगों में हज़ारों की तादाद में सहाबा-ए-किराम ने मुकब्बिरीन रख कर नमाज़ें अदा फ़रमाई है,

और सहाबा-ए-किराम के बाद से आज तक हज़ारों लाखों लोग मुकब्बिर रख कर नमाज़ें अदा करते आ रहे हैं । हमारी मस्जिदों में मुश्किल से हज़ार लोग भी नहीं होते और न ही मैदाने जंग में तलवारों की झन्कारों में नमाज़ पढ़ने का मौक़ा होता है । लेकिन अफ़सोस इतने इतमीनान व सुकून के बावजूद भी मुकब्बिर की इस अज़ीम सुन्नत को छोड़ कर ईसाईयों की ईजाद लौडिस्पीकर को नमाज़ जैसी अज़ीम ईबादत में दाख़िल करते हैं और नमाज़ की बरबादी के साथ साथ ना जाइज़ व हराम का गुनाह अलग अपने सर मोल लेते हैं ।

"अए लौडिस्पीकर के शैदाईयों ! ज़रा बताओ ! बरोज़े क़ियामत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुम से अगर पूछेंगे कि मेरी सुन्नत और मेरे सहाबा के तरीक़े को मिटा कर अपनी मन मानी चीज़ लौडिस्पीकर को नमाज़ में दाख़िल करने की तुम्हें किस ने इजाज़त दी थी ? तो क्या जवाब दोंगे" !

अब रहा दो मंज़िला ईमारत वाली मस्जिद का बहाना तो इसका येह जवाब है कि आप उपर की मंज़िल तक आवाज़ पहुँचाने के लिये ज़रूरत के मुताबिक़ जितने चाहे आगे पीछे मुकब्बिर रखें । दूसरा तरीक़ा येह है कि इमाम के सर की सीध में उपर छत में गैल्लरी रखिये, या अगर गैल्लरी न होतो इमाम की सीध में छत में ज़रूरत के मुताबिक़ जितना चाहे उतना बड़ा सूराख़ बना लीजियें और उपर की मंज़िल में पहली ही सफ़ में इमाम की सीध में मुकब्बिर रखें, उस मुकब्बिर को ख़ूद इमाम की ही आवाज़ सुनाई देंगी जिसे सुन कर वोह उपर की मंज़िल में तकबीर पुकारेगा, और उपर वाले उसकी तकबीर सुन कर अपनी नमाज़ आसानी से अदा करेंगे ।

याद रखियें जिन्हें अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त की फ़िक्र है, दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा, और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से शर्म है वोह अपनी ख़्वाहिशात के पीछे नहीं भागते । येह सब आसानियाँ और बहाने बाज़ी उसे ही सूझती हैं जिसे अपनी आख़िरत की कोई फ़िक्र नहीं होती । उसकी नज़र में शरीअ़त से ज़्यादा अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की अहमियत ज़्यादा होती है ।

आयत परवरदिगारे आ़लम इरशाद फ़रमाता है.......

وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط

तर्जमा :- और (शरीअ़त छोड़ कर) अपनी दिली ख़्वाहिश के पीछे न जा

कि तुझे अल्लाह की राह से भटा दे । (कुरआने करीम, सूरए सूआद, आयत 26)

कितनी ही बड़ी जमाअ़त क्यों न हो तादाद के मुताबिक़ हस्बे ज़रूरत मुकब्बिर रख कर सुन्नत की अदाएगी के साथ नमाज़ आसानी से अदा की जा सकती है । लेकिन अफ़सोस तो इस बात का है कि आशिक़ाने लौडिस्पीकर को जितनी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम की सुन्नत से मुहब्बत नहीं उससे कहीं ज़्यादा अपने बेहुदा तरीके से प्यार है..... और ऐसे बेहुदा तरीक़े को सही साबित करने के लिये बेहुदा दलीलें पेश करने से वोह ज़रा भी नहीं हिचकिचाते .... ऐसे ही दौर के ऐसे बेहुदा लोगों के लिये ग़ैबदाँ नबी सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था......

हदीस प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम ग़ैब की ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाते हैं......."अनकरीब लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि जिसमें इस्लाम सिर्फ़ नाम का रह जाएगा, लोग कुरआन पढ़ेंगे लेकिन सिर्फ़ रस्मी तौर पर, उस वक़्त मस्जिदें नमाज़ियों की तादाद से ख़ूब भरी होंगी मगर हक़ीक़त में हिदायत से खाली होंगी, उस वक़्त के (अकसर) ओ़लमा ऐसे होंगे जो आसमान के नींचे बद्तरीन मख़्लूक़ होंगे वोह (दीन में नई नई बातें पैदा करके) फ़ितने व फ़साद बरपा करेंगे और उनके खड़े किये गए येह फ़ितने उन्हीं पर लौट जाएगे"।

يوشك وان ياتى على الناس زمان لا يبقىٰ من الاسلام الا اسمه ولا يبقىٰ من القرآن الا رسمه مساجد هم عامرة وهى خواب من الهدىٰ علماء هم شر من تحت اديم السماء من عند هم تخرج الفتنة وفيهم تعود ۔

(बयहकी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, जिल्द 1, हदीस नं. 257, सफ़ा नं 76)

इमाम की किर्अत सुनाई नहीं देती

अक्सर मोहिब्बाने लौडिस्पीकर येह कहते हैं कि जुम्अ़े की नमाज़ में और ख़ास कर रमज़ान शरीफ में नमाज़े तरावीह् में हमें इमाम साहब की क़िर्अत की आवाज़ सुनाई नहीं देती, इस लिये लौडिस्पीकर लगाना ज़रूरी है,

आख़िर हमें भी तो मालूम हो कि इमाम साहब पढ़ क्या रहे हैं ! अगर क़िर्अत ही सुनाई न दे तो ऐसी नमाज़ पढ़ने का क्या फ़ायेदा ?

जवाब : येह बात अक्सर उन्हें बयान करते देखा गया है जिन्हें अ़रबी ज़बान की "ऐन" भी नहीं मालूम । लेकिन येह बात कहते इस ढ़ंग से हैं गोया येह हज़रत, इमाम साहब की क़िर्अत सुन कर अभी उस का पूरा तर्जमा सुना देंगे ।

हम पूछते है.....दौरे रसूलुल्लाह, दौरे सहाबा व अइम्मा-ए-दीन से लेकर आज तक सदियों से लोग बड़ी तादाद में नमाज़ पढ़ते आ रहे है । अब हर दौर में जिन जिन लोगों ने पीछे की सफ़ों में नमाज़ पढ़ी कि उन्हें इमाम की क़िर्अत सुनाई न दी तो क्या उन सब की वोह नमाज़ें नाक़िस रहीं ? क्या वोह अल्लाह की बारगाह में कुबूल नहीं ?!

हम कहते है कि सब से पहले तो येह जानना ज़रूरी है कि क्या शरीअ़त ने इमाम की आवाज़ हर सफ़ व हर मुक़्तदी तक सुनाई देने को फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत या ज़रूरी व लाज़मी क़रार दिया है ? हक़ तो येह है कि इमाम की क़िर्अत की आवाज़ हर सफ़ में हर मुक़्तदी तक पहुँचाना कोई ज़रूरी नहीं, इस लिये कि फ़ुक़हा-ए-किराम ने इस मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया......... والجهر فيها يجهر والمخافتة فيما يخافت "यानी नमाज़े जहरी में (जिस में इमाम क़िर्अत ज़ोर से करता है उसमें) क़िर्अत ज़ोर से करे" । येह हरगिज़ नहीं फ़रमाया कि.... والسماع قراته للمصلين فيما يجهر "यानी जहरी नमाज़ में इतनी ज़ोर से क़िर्अत करना कि सब नमाज़ी सुनें "। मालूम हुआ कि पीछे की सफ़ों में जो मुक़्तदी इमाम की क़िर्अत सुन नहीं पा रहे हैं उनकी नमाज़ भी वैसे ही दुरूस्त व सही है जैसे उन लोगों की जो आगे की सफ़ों में रह कर इमाम की क़िर्अत सुन रहे हैं । अब रहा येह कि इमाम कितने ज़ोर से क़िर्अत करे, शरीअ़त में उसकी हद कितनी है तो..........

मस्अला "रद्दुलमोहतार" में फ़रमाया.....

" जहर (यानी इमाम के बुलन्द आवाज़ से क़िर्अत करने) के मअ़नी येह है कि पहली सफ़ के लोग सुन लें" ।	ان جهر الامام اسماع الصف الاول

(दुर्रेमुख़्तार मअ़ रद्दुलमोहतार, जिल्द 2 सफ़ा 224)

लिहाज़ा मालूम हुआ कि जब शरीअ़त ने इमाम पर ज़रूरी ही क़रार नहीं दिया कि सब मुक़्तदियों (यानी नमाज़ियों) को क़िर्अत सुनाए तो अब इस के लिये लौडिस्पीकर जैसी मशीन का सहारा पकड़ना शरीअ़त में अपनी ज़बरदस्ती और मन मानी करना नहीं तो और क्या है ! जो सख़्त ना जाइज़ व गुनाह और नमाज़ की बरबादी का सबब है ।

अगर मान लिया जाए कि क़िर्अत का सुनना ज़रूरी है तो फिर लाज़िम होगा कि इमाम क़िर्अत भी उस ज़बान में करें जिसे सुनने वाले समझते भी हो वरना उसका सुनना और न सुनना बराबर है । और अगर मआ़ज़ल्लाह ! इसको तस्लीम कर लिया जाए तो इससे फ़ितने का एक नया दरवाज़ा खुल जाएगा और नमाज़ की क़िर्अत मुख़्तलीफ़ ज़बानों में हो कर कुछ की कुछ बन कर रह जाएगी !!

अगर अब भी कोई येह कहे कि इमाम की आवाज़ का हर मुक़्तदी को सुनाई देना ज़रूरी है वरना नमाज़ ही न होगी ! तो हम कहते हैं कि बताईये इमाम तो नमाज़े ज़ोहर, असर, में मुकम्मल तौर पर, और ईशा व मग़रिब की आख़री रक्अ़तों में बुलन्द आवाज़ से क़िर्अत ही नहीं करता तो क्या अब भी यही समझा जाएगा कि किसी की नमाज़ न हुई !!

अइम्मा-ए-दीन तो यहाँ तक फ़रमाते हैं कि.......

“जहाँ तक इमाम की आवाज़, तकबीर वग़ैरा पहुँच रही हो वहाँ तक मुकब्बिर भी नहीं होना चाहिये । इमाम की आवाज़ ही अगर मुक़्तदियों के लिये काफ़ी होतो अब मुकब्बिर का रखना भी मकरूहे तहरीमी (नाजाइज़) होगा”। (बहवाला : सियानतिस सलात अन हिल्लील बिदआ़त, सफ़ा 28)

इमाम की आवाज़ कितनी हो बल्कि ख़ूद इमाम को शरीअ़त का हुक्म येह है कि अपनी आवाज़ ज़्यादा बुलन्द न करे और न ही बहुत धीमी आवाज़ में क़िर्अत करे, बल्कि अपनी अस्ल हक़ीक़ी दरमियानी आवाज़ में क़िर्अत, तकबीरें वग़ैरा कहे......

आयत अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त कुरआने पाक में अपने महबूब और हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम को हुक्म फ़रमाता है.....

तर्जमा :- अए महबूब ! नमाज़ में ‖ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ

بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ۝

अपनी आवाज़ न ज़्यादा बुलन्द कीजिये और न ही बिल्कुल आहिस्ता (धीमी) रखिये, बल्कि दरमियानी आवाज़ में क़िर्अत फ़रमाईये ।

(कुरआने करीम, पारा 15, सूरए बनी इसराईल, आयत 110)

आज तक कुरआने अज़ीम के जितने तर्जुमे छापे गए उन सब में इस आयत के यही मअ्नी मुराद लिये गये हैं कि "नमाज़ ज़्यादा बुलन्द आवाज़ से न पढ़ो और न ही बिल्कुल आहिस्ता से पढ़ो बल्कि दरमियानी आवाज़ से पढ़ने का साफ़ व खुला हुक्म है ।

सुबहानल्लाह ! इस्लाम तेरी हक़्क़ानियत को लाखों सलाम ! आप ज़रा ग़ौर फ़रमाये ! नमाज़ में लौडिस्पीकर का इस्तेमाल इस ज़माने में नूज़ूले कुरआन के तक़रीबन साढ़े चौदा सौ साल बाद हो रहा है मगर कलामे इलाही में इस के मुत्अ़ल्लिक़ भी ऐसा साफ़ व खुला हुक्म मौजूद है कि गोया आज ही के हालात के लिये येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई हो ।

शरह हज़रत सय्यदना इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो इस आयत की तफ़्सीर में "तफ़्सीरे कबीर" में फ़रमाते हैं.......

فكذا ههنا نهى عن الطرفين وهو الجهر والمخافة وامر بالتوسط بينهما فقال وابتغ بين ذلك سبيلا و منهم من قال الاية منسوخة وهو بعيد انتهى.

"इस आयत में ज़्यादा आवाज़ से क़िर्अत और बहुत धीमी आवाज़ में क़िर्अत, दोनों से रोका, बल्कि इन दोनों के दरमियान सलामती वाला रास्ता इख़्तियार करने का साफ़ हुक्म फ़रमाया और जो शख़्स इस आयत को मन्सूख़ कहता है वोह हक़ से बहुत दूर हो गया है"। (तफ़्सीरे कबीर, तफ़्सीर आख़िर बनी इस्राईल.... सफ़ा 71)

हदीस हदीसे पाक में हैं कि....... हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम एक रात हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो के मकान के पास से गुज़रे, हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ धीमी आवाज़ में कुरआने पाक की तिलावत फ़रमा रहे थे। फिर हुज़ूर वहाँ से हज़रत उमर रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो के मकान के पास पहुँचे तो हज़रत उमर बुलन्द आवाज़ से कुरआन की तिलावत फ़रमा रहे थे । दूसरे रोज़ हुज़ूर ने दोनों से इसकी वजेह पूछी तो

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया..."या रसूलल्लाह ! मैं कुरआन धीमी आवाज़ से इसलिये पढ़ रहा था कि मुझे दूसरों से क्या काम मैं अपने रब को कुरआन सुना रहा था और वोह सब से बेहतर सुनने वाला है"। हज़रत उमर ने अर्ज़ किया....."या रसूलल्लाह मैं बुलन्द आवाज़ से कुरआन की तिलावत इस लिये कर रहा था कि सोते हुए लोगों को जगाऊँ और शैतान को भगाऊँ ताकि सोने वाले मेरी आवाज़ सुन कर जाग जाएँ और तहज्जुद की नमाज़ अदा करें"। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया...."अए अबूबकर सिद्दीक तुम अपनी आवाज़ को थोड़ी बुलन्द करो, और अए उमरे फ़ारूक़ तुम अपनी आवाज़ को थोड़ा धीमी करो"।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जिल्द 1, हदीस नं. 430, सफ़ा 278)

इस हदीसे पाक से ज़ाहिर हुआ कि कुरआन की तिलावत दरमियानी आवाज़ से ही करनी चाहिये । यहाँ येह बात भी ख़ास तौर पर क़ाबिले ग़ौर है कि जब कुरआन व हदीसों में हमें हुक्म दिया गया कि नमाज़ में अपनी ज़ाती आवाज़ को दरमियानी रखें, तो लौडिस्पीकर जैसी एक ख़ारजी चीज़ जिस का मक़सद ही आवाज़ को बुलन्द और तेज़ करना है उसके ज़रिये नमाज़ पढ़ना किस क़द्र बुरा और नमाज़ की बरबादी का सबब होगा । क्योंकि हम अपनी पूरी तक़त व कुव्वत से बोलें और लौडिस्पीकर को कम से कम आवाज़ पर चलाएँ तो इस्पीकर की कम से कम आवाज़ भी हमारी पूरी ताक़त से बोली हुई आवाज़ से यकीनन ज़्यादा और बुलन्द है, तो फिर लौडिस्पीकर पर किस तरह नमाज़ हो सकती है ?

इमाम ज़्यादा बुलन्द आवाज़ से किर्अत करे तो नमाज़ फ़ासिद

इमाम को तो यहाँ तक हुक्म है कि किर्अत व तकबीर इतनी आवाज़ से ही कहे कि वोह चीख़ न बन जाए । यही हुक्म मुकब्बिर का भी है । अगर इमाम ने अपनी अस्ल आवाज़ से ज़्यादा किर्अत व तकबीर कहीं, यहाँ तक कि वोह चीख़ बन जाए तो इमाम की नमाज़ फ़ासिद (बरबाद) हो जाएगी और साथ ही तमाम मुक्तदियों की भी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी ।

अगर इमाम की तकबीरों की आवाज़ पूरी सफ़ों तक आसानी से पहुँच जाती है तो अब मुकब्बिर रखना भी मकरूहे

तहरीमी (ना जाइज़) होगा । अइम्मा-ए-दीन नमाज़ में इमाम के ज़रूरत से ज़्यादा आवाज़ बुलन्द करने को बुरी बिदअ़त फ़रमाते हैं ।

मस्अला फ़िक़्ह की मुस्तनद किताब "दुर्रे मुख़्तार" में है......

اما ماتعارفوه فی زماننا فلا یبعد انه مفسد اذالصیاح ملحق بالکلام

मस्अला इसी तरह मशहूर ज़माना किताब "रद्दुलमोहतार" में फ़रमाया.

والزائد علی قدر الحاجة کما هو مکروه للام یکره للمبغ وفی حاشیه ابی السعود واعلم ان التبلیغ عند عدم الحاجة الیه بان بلغهم صوت الامام مکروه وفی السیرة الحلبیة اتفق الائمة الاربعة علی ان التبلیغ حینئذ بدعة منکرة ای مکروهة واما عند الاحتیاج الیه فمستحب۔

(रद्दुलमोहतार, जिल्द 2, सफ़ा 152, मतबूआ बैरूत, लिबनान.)

इन तमाम ईबारतों का हासिल वही है जो हम ने उपर बयान किया, यहाँ आप अन्दाज़ा कीजिये कि इस्लाम अपनी नमाज़ जैसी अहेम ईबादत में आवाज़ की दरमियानी हद मुक़र्रर कर रहा है । ज़रूरत से ज़्यादा आवाज़ तक उसे गवारा नहीं । और येह भी ग़ौर कीजिये कि इस्लाम के जलीलुल क़द्र चारों इमाम (हज़रत इमामे आज़म अबूहनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम इब्ने हम्बल, इमाम शाफ़ाई रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हम) भी इस मक़ाम पर किस अदब व एहतराम और एहतियात के क़ाएल है कि इस ईबादत की अहमियत व नज़ाकत को देखते हुए ज़रूरत से ज़्यादा आवाज़ की इजाज़त देने के लिये तैयार नहीं । साफ़ बिदअ़ते मुन्केरा और मकरूहे तहरीमी (ना जाइज़) क़रार दे दिया ।

अब लौडिस्पीकर को देखिये । लौडिस्पीकर जहाँ भी लगाए जाते हैं सफ़ों की ज़रूरत का ख़्याल बिल्कुल नहीं होता । तन्हा पूरी मस्जिद ही नहीं मस्जिद का सहेन, तहारत ख़ाना, वुज़ू ख़ाना बल्कि मस्जिद से बाहर दूर दूर तक आवाज़ पहुँचती है । यूँ कहिये कि लौडिस्पीकर लगाया ही इस लिये जाता है कि इमाम साहब की क़िर्अत की आवाज़ पूरा मोहल्ला सुन लें यहाँ तक कि कुछ जगह क़रीबी मस्जिदों में लौडिस्पीकर लगा कर आवाज़ का मुक़ाबला तक होता है । अब मस्अला साफ़ हो गया कि मस्जिदों के इमामों की येह आवाज़ें जो लौडिस्पीकर के ज़रिये ज़रूरत से ज़्यादा बड़ कर अब चीख़ों में तबदील हो चुकी है, हमारे चारों अइम्मा (हज़रत इमामे आज़म अबूहनीफ़ा, इमाम

मालिक, इमाम इब्ने हम्बल, इमाम शाफ़ाई रदीयल्लाहो तआला अन्हुम) के नज़दीक भी ना जाइज़ व बिदअत और मकरूहे तहरीमी होगी ।

एक और दलील ::

अभी आप हमारे चारों इमामों की दलीलें पढ़ चुके है कि नमाज़ में इमाम का हद से ज़्यादा आवाज़ निकालना नमाज़ को फ़ासिद (बरबाद, ख़त्म) कर देता है । लौडिस्पीकर लगाने से आवाज़ बड़ कर बुलन्द सुनाई देती हैं, जिस का सुबूत तो यही है कि इमाम की अस्ल आवाज़ पीछे की सफ़ों तक नहीं आ रही थी लेकिन लौडिस्पीकर की आवाज़ इतनी बुलन्द हुई कि पीछे की सफ़ों तक इमाम की क़िर्अत सुनाई देने लगी । लिहाज़ा अब लौडिस्पीकर के अक़ीदतमन्दों के नज़दीक भी इमाम का लौडिस्पीकर के ज़रिये अपनी आवाज़ बुलन्द कराना नमाज़ को फ़ासिद (बरबाद) कर देगा कि अब चींख़ बन जाने में कोई शक नहीं, । इमाम की नमाज़ फ़ासिद तो तमाम मुक्तदियों की नमाज़ फ़ासिद !

अगर कोई येह कहे कि येह बड़ी हुई बुलन्द आवाज़ तो लौडिस्पीकर से पैदा हुई है इस में इमाम का कोई ज़ाती दख़ल नहीं उसने थोड़ी ही अपनी आवाज़ हद से ज़्यादा बुलन्द की है ? तो हम अर्ज़ करेंगे कि जनाब हम भी तो यही कह रहे हैं कि इमाम की आवाज़ और है, लौडिस्पीकर की आवाज़ और है ! इमाम की अस्ल आवाज़ तो वोह थी जो माईक पर जा कर ख़त्म हो गई और इस्पीकर के ज़रिये जो अब आप आवाज़ सुन रहें है वोह लौडिस्पीकर से पैदा हुई नक़्ली मशीनी आवाज़ है जो इस्पीकर के ज़रीये निकल कर मस्जिद से बाहर पूरे मोहल्ले में गूंज रही है ।

लौडिस्पीकर के शैदाईयों से एक सवाल

कुरआने करीम अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त का कलाम है । जब उसे पढ़ा जाए तो बा अदब ग़ौर से सुनना वाजिब है । जहाँ कुरआने करीम पढ़ा जाए तो वहाँ मौजूद लागों पर वाजिब है कि अपनी दुनियावी बातों और कामों को छोड़ कर तवज्जेह से उसे सुनें वरना सख़्त गुनाहगार होंगे ।

आयत परवरदिगारे आलम कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है....

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ٥

तर्जमा :- और जब कुरआने करीम पढ़ा जाए तो कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रहम हो ।

(कुरआने करीम, पारा 9, सूरए एराफ़, आयत 204)

मस्अला "फ़तावा-ए-शामी" में हैं कि........

الا انه يجب على القارى احترامه بان لا يقراه فى الاسواق ومواضع الاشتغال فاذا قراه فيها كان هو المضيع لحرمة فيكون الالم عليه دون اهل الاشتغال.

"यानी कुआन पढ़ने वाले पर ख़ूद कुरआन पढ़ने का एहतराम वाजिब है इस तरह कि वोह बाज़ारों में और लोगों के बैठने के मुकामात पर कुरआन न पढ़े और अगर उसने पढ़ा तो कुरआने करीम की तौहीन करने वाला होगा, और उस पढ़ने वाले पर सख़्त गुनाह होगा, लोगों पर नहीं ।

मस्अला उसी "फ़तावा-ए-शामी" में हैं......

وعلى هذا الوقراعلى السطح والناس ينام ياثم اى لانه يكون سببا الاعراضهم عن استماعه اولانه يوذيهم بايقاظهم.

"इसी तरह कोई शख़्स छत पर (बुलन्द आवाज़ से) कुरआने करीम पढ़ रहा है और लोग सो रहे है तो पढ़ने वाला गुनाहगार होगा सोने वाले नहीं, इस लिये कि येह पढ़ने वाला सोने वालों को जगा कर तकलीफ़ दे रहा है"।

अब हम लौडिस्पीकर के उन आशिक़ों से पूछना चाहते हैं कि आपने जो जुम्आ, ईदैन, नमाज़े तरावीह, शबीना, में लौडिस्पीकर लगाया हैं और पूरे मोहल्ले को दूर दूर तक कुरआने करीम की आवाज़ सुनाने के लिये बेचैन हैं, जब तुम्हारे नज़दीक लौडिस्पीकर की आवाज़ अस्ल आवाज़ है तो येह सारे मोहल्ले में जो कुरआने करीम की आवाज़ गूंज रही है और जो लोग अपने मकानों में सो रहे हैं या खाना खा रहे हैं, या पेशाब पाख़ाना में हैं या किसी और तरह की ज़रूरते ज़िन्दी में मशगूल है..........। इन सब का गुनाह किस के सर होगा ? क्या येह कुरआने करीम की तौहीन नहीं ? यक़ीनन इस का गुनाह उन लोगों के सर है जिन्होंने नमाज़ में लौडिस्पीकर शुरू करवाया या उससे कम अज़ कम राज़ी है ।

अब अगर कोई येह कहे कि हम ने तो मस्जिद की चार दीवारी के अन्दर ही कम आवाज़ में लौडिस्पीकर लगाया है उसकी आवाज़ बाहर तक नही जाती । हम कहते हैं तब भी इस बिदअ़त को लगाने और लोगों की नमाज़ें बरबाद करने का गुनाह क्या आप ने कम समझ रखा है ? क्या आप में इतनी हिम्मत और हौसला है कि बरोज़े क़ियामत अल्लाह की बारगाह में लोगों की सिर्फ़ दो रकअ़ात फ़र्ज़ नमाज़ का ज़िम्मा ले सके और बारगाहे इलाही में जवाब दे सकें ?!

अरकान की अदाएगी में देर होती है

आशिक़ाने लौडिस्पीकर का येह भी कहना है कि अगर लौडिस्पीकर न होतो इमाम की तकबीरों की आवाज़ पीछे की सफ़ों तक नहीं पहुँचती है, जिसकी वजेह से कई बार ऐसा होता है कि इमाम रूकू से उठ कर सज्दे में चला जाता है और पीछे खड़े मुक़्तदी उस वक़्त तक रूकू ही कर रहे होते हैं।

जवाब : हक़ीक़त तो येह है कि शरीअ़त का हुक्म ही येह है कि मुक़्तदी का हर रूक्न इमाम के बाद ही हो, अगर इमाम से पहले रूकू या सज्दा किया तो नमाज़ ही न होगी । अहादीस की मशहूर किताब "मुस्लिम शरीफ़" में तो इस मुतअ़ल्लिक़ एक ख़ास बाब है जिसका नाम ही येह है.. متابعة الامام والعمل بعده "यानी इमाम की पैरवी करना और उसके अ़मल के बाद अ़मल करना"। चुनानचे इस बाब में कुल पाँच हदीसें है जिन में से हम यहाँ सिर्फ़ एक ही नक़्ल कर रहे हैं........

عن البراء بن عازب رضی الله عنه قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا قال سمع الله لمن حمده لم يحن احد منا ظهره حتى يقع رسول الله ساجدا ثم نقع سجودا بعده ـ

हदीस हज़रत बरा बिन आज़िब रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब "समीअ़ल्लाहो लेमन हमिदाह्" फ़रमाते तो हम सहाबा में से कोई भी शख़्स सज्दे में जाने के लिये अपनी पीठ को नहीं झुकाता था यहाँ तक कि रसूलुल्लाह पूरी तरह सज्दे में चले

जाते फिर आपके बाद हम सज्दे में जाते"।

(मुस्लिम शरीफ़, किताबुस्सलात, जिल्द 1, सफ़ा 189)

शरह "इस हदीस के मुतअ़ल्लिक़ हज़रत इमाम तिर्मिज़ी रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो फ़रमाते हैं............"अइम्मा का यही क़ौल है कि मुक़्तदी, इमाम की पैरवी करें, इमाम के बाद रूकू करें और इमाम के बाद ही रूकू से खड़े हो, इस मस्अले में अइम्मा का इत्तेफ़ाक हैं किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं" ।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, बाब नं. 204, जिल्द 1, सफ़ा 200.)

हदीस "बुख़ारी शरीफ़" व "मुस्लिम शरीफ़" की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया......

"जो शख़्स इमाम से पहले सज्दे से सर उठाता है क्या वोह इस से नहीं ड़रता कि अल्लाह तआ़ला उसका सर गधे के सर की तरह करे दे"।	اما يخشى احدكم اولا يخشى احدكم اذا رفع راسه قبل الامام ان يجعل اللّٰه راسه راس حمار اويجعل اللّٰه صورته صورة حمار

(बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 1, हदीस नं. 655, सफ़ा 315, मुस्लिम शरीफ़, जिल्द 1, सफ़ा 181)

हदीस हज़रत इमाम मालिक रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो सहाबी-ए-रसूल हज़रत अबूहुरैरा रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत करते हैं कि.....

"जो शख़्स इमाम से पहले अपना सर उठाता और झुकाता है उस की पेशानी शैतान के हाथ में हैं"।	الذى يرفع راسه و يخفضه قبل الامام فانما ناصية بيد شيطان

(मोता इमाम मालिक, जिल्द 1, किताबुस सलात, हदीस नं. 57, सफ़ा नं. 103)

इस तरह की और भी बहुत सी हदीसें हैं, उन तमाम से येह साबित होता है कि मुक़्तदी नमाज़ के हर अरकान को अपने इमाम के बाद ही करे, न इमाम के साथ न इमाम से पहले । नमाज़ में लौडिस्पीकर होने से येह ख़तरा है कि इमाम अभी अल्लाहो अकबर कह कर रूकू या सज्दे में जा ही रहा होगा कि पीछे की सफ़ में खड़े मुक़्तदियों को लौडिस्पीकर से आवाज़ उसी वक़्त सुनाई देगी और वोह इमाम से कुछ पहले ही रूकू या सज्दे में चले जाएगे जिस से उनकी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी, और उपर बयान हुई हदीसों के मुताबिक़ वोह सख़्त गुनाहगार, अज़ाबे खुदा के सज़ावार होगे !

एक आसान दलील शरीअ़त का हुक्म येह है कि मुक़्तदी का हर रूक्न इमाम के बाद ही हो, यहाँ तक कि अगर इमाम आख़री रक्अ़त के क़ायदे में बैठा था कि कोई नया शख़्स आकर आख़री क़ायदे में भी शरीक हो गया, जब भी वोह इमाम के साथ उस जमाअ़त का पा लेने वाला है। और इस क़द्र देरी भी उसको जमाअ़त के सवाब से महरूम नहीं कर रही है। फिर यही नहीं बल्कि इमाम के सलाम फेरने के बाद अब येह मुक़्तदी अपनी छुटी हुई रक्अ़तें मुकम्मल करेंगा और फिर सलाम फेर कर अपनी नमाज़ ख़त्म करेंगा। ग़ौर फ़रमाईये ! यहाँ इस क़द्र देरी कि इमाम और दूसरे मुक़्तदी अपनी नमाज़ पूरी करके वहाँ से हट भी चुके लेकिन येह आख़री रक्आ़त के क़ायदे में आने वाला शख़्स इमाम से तीन रक्आ़त पीछे हैं और वोह शरई हुक्म पर अ़मल करते हुए उस नमाज़ को अपनी रफ़्तार से पूरी कर रहा है और शरीअ़त उसकी नमाज़ को मुकम्मल बताती है।

मुक़्तदी का अपने इमाम से इतना पीछे रहना कि इमाम चाहे क़ायदे में हो और मुक़्तदी रूकू ही कर रहा हो तब भी उसकी नमाज़ सही व दुरूस्त है, उसमें किसी तरह की कोई ख़राबी नहीं, क्योंकि मुक़्तदी का हर रूक्न अपने इमाम के बाद ही होगा। लिहाज़ा इस मस्अले से साबित हुआ कि लौडिस्पीकर के ज़रिये इमाम की आवाज़ पीछे खड़े मुक़्तदियों तक पहुँचाना कोई ज़रूरी नहीं। चाहे इमाम सज्दे में चला जाए और पीछे के मुक़्तदी अभी क़ियाम में या रूकू में ही हो उन का हर रूक्न इमाम के बाद ही होना चाहिये, अगरचे उसमें कितनी ही देरी हो नमाज़ में कोई ख़राबी नहीं आएगी।

लौडिस्पीकर पर अज़ान, ख़ुतबा, व तक़रीर क्यों जाइज़ !

लौडिस्पीकर के शैदाईयों का एक येह भी एतराज़ आ़म हैं कि जब नमाज़ में लौडिस्पीकर का इस्तेमाल जाइज़ नहीं तो अज़ान, ख़ुतबा, और तक़रीर में इस का इस्तेमाल क्यों जाइज़ है ?

जवाब : इसका मुख़्तसर जवाब येह हैं कि बाज़ ओ़लमा-ए-किराम

ने तो खुतबे में भी लौडिस्पीकर का इस्तेमाल पसंद नहीं फ़रमाया । लेकिन इसका हुक्म नमाज़ की तरह नहीं । शरीअत नमाज़ में इमाम की अस्ल आवाज़ पर या फिर मुकब्बिर जो इमाम का नायब होता है उसकी अस्ल आवाज़ पर ही रूकू व सुजूद करने का हुक्म देती है । आशिक़ाने लौडिस्पीकर ने बिना सोचे समझे लौडिस्पीकर की अँधी मुहब्बत में येह अंधाधुंद एतराज़ जड़ दिया ! क्या नमाज़, अज़ान व तक़रीर के हुक्म एक जैसे हैं ? तक़रीर का मक़सद तबलीग़ व इस्लामी तअ़लीमात को दूर तक पहुँचाना होता है जो कि बग़ैर सुने हासिल नहीं हो सकता । वाज़ व तक़रीर में तो ख़तीब क़िबले की बजाए किसी भी सिम्त रूख़ करके बैठ सकता है, कुर्सी पर हाथ मार सकता है, दौराने तक़रीर पानी पी सकता है किसी बड़े आ़लिम के आने पर बुलन्द आवाज़ से नारा लगा सकता है, यहाँ तक की दौराने तक़रीर अगर वुज़ू टूट जाए तो भी तक़रीर जारी रख सकता है, क्या नमाज़ में भी येह सब किया जा सकता है ? और जब नहीं तो फिर नमाज़ और तक़रीर के अहकाम को लौडिस्पीकर के शैदाईयों ने एक तरह का कैसा समझ लिया !! इसी तरह अज़ान का मक़सद नमाज़ के वक़्त का एलान है और नमाज़ की दावत है इसमें जितनी आवाज़ बुलन्द हो उतना ही बेहतर है । अज़ान तो बे वुज़ू देना भी जाइज़ है,....क्या नमाज़ बग़ैर वुज़ू के पढ़ी जा सकती है ? अज़ान देते वक़्त सर और गर्दन दोनों तरफ़ घूमाने का हुक्म है क्या लौडिस्पीकर के आशेक़ीन नमाज़ में भी ऐसा ही करेंगे ? अज़ान, खुतबा व तक़रीर में नमाज़ की तरह इमाम की इक़्तेदा नहीं की जाती न अज़ान व खुतबा में कोई अरकान की अदाएगी है कि जिसके लिये इमाम की अस्ल आवाज़ की ज़रूरत हो । जबकि हम साबित कर आए हैं कि इमाम का हद से ज़्यादा आवाज़ में क़िर्अत करना जो चींख़ बन जाए मकरूहे तहरीमी व निहायत ही बुरी बिदअ़त है और उससे नमाज़ फ़ासिद हो जाती है । नमाज़ के लिये इमाम की अस्ल दरमियानी आवाज़ या फिर मुकब्बिर जो इमाम का नायब होता है उसकी अस्ल दरमियानी आवाज़ की ही ज़रूरत है । फिर येह भी ज़रूरी है कि मुकब्बिर ख़ूद उसी इमाम के पीछे उसी नमाज़ में शरीक हो और इमाम की तकबीरों को सुन कर ख़ूद भी अरकान अदा करे । जबकि लौडिस्पीकर

नमाज़ में शरीक नहीं हो सकता और न ही वोह नमाज़ के अरकान अदा करने की सलाहियत रखता है। लिहाज़ा साबित हुआ कि नमाज़ में लौडिस्पीकर का इस्तेमाल जाइज़ नहीं और खुतबा, अज़ान और वाज़ व तक़रीर में इसका इस्तेमाल मुबाह होगा कि इसमें किसी क़िस्म के अरकान की अदाएगी नहीं।

सऊदीया अरब में लौडिस्पीकर पर नमाज़ होती है !

बहुत से लोग लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ने की दलील सऊदीया अ़रब से देते हैं। उनका कहेना हैं कि सऊदीया अ़रब में हज के मौक़े पर खाने काबा में नमाज़ लौडिस्पीकर पर पढ़ाई जाती है, लाखों लोग लौडिस्पीकर की आवाज़ पर नमाज़ अदा करते है, वहाँ से तो इस्लाम निकला है भला वोह लोग कैसे ग़लत हो सकते हैं ? और हद तो येह है कि कुछ जाहिल तो यहाँ तक कह देते हैं कि जिस ने काबे में सऊदी नज्दी इमाम के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी उसका हज ही नहीं हुआ ! (मआ़ज़ल्लाह)

जवाब : इस जाहलाना बकवास के बहुत से जवाबात हैं। सब से पहले तो हम येह बयान कर दे कि बादशाहों का फ़ेल हमारे लिये हरगिज़ हुज्जते शरीया नहीं। शहज़ादा-ए-आला हज़रत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द अल्लामा मुस्तफ़ा खाँ रज़ा रहमतुल्लाह अलैह अपने एक फ़तवे में इरशाद फ़रमाते हैं......"मक्का व मदीना दोनों हरमों के इमाम वहाबी अक़ीदे के हैं"।

(अत्तफ़सीलुल अनवर फ़ी हुक्मे लौडिस्पीकर, सफ़ा नं. 24)

मौजूदा दौर में भी हरम शरीफ़ में जो इमाम है वोह वहाबी अक़ीदे पर क़ायम इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी ख़बीस के पैरोकार हैं, आज के सऊदी नज्दी इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी की तालीमात पर अ़मल करते हैं और चाहते है कि पूरी दुनिया में इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी की तालीमात आ़म हो जाए, अपने इस मक़सद के लिये वोह दुनिया भर से आए हाजियों में दुनिया की मुख़्तलीफ़ ज़बानों में इब्ने अब्दुल वहाब का लिटरेचर मुफ़्त तक़सीम करते हैं ...... आईये ज़रा देखें इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी और सऊदी वहाबीयों के

अक़ीदे क्या हैं जो उनकी किताबों में मौजूद है...... 1) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मज़ारे पाक की ज़ियारत करना बुतों को देखने के बराबर हैं। (किताबुत तौहीद, सफ़ा 73, अज़ : इब्ने अब्दुल वहाब नज्दी), 2) हज के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम की क़ब्र की ज़ियारत के लिये सफ़र करना शिर्क है। (किताबुत तौहीद,), 3) अल्लाह की मक्कारी से ड़रना चाहिये कि बाज़ वक़्त अल्लाह तआ़ला मक्कारी करता है। (किताबुत तौहीद, सफ़ा 107, तक़्वीयतुल ईमान, सफ़ा 76), 5) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहा अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब नहीं। (किताबुत तौहीद, तक़्वीयतुल ईमान वग़ैरा), 6) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम से शफ़ाअ़त की उम्मीद रखना शिर्क है। (कशफ़ुश शुब्हात, अज़ : इब्ने अब्दुल वहाब), 7) रसूलुल्लाह मर कर मिट्टी में मिल गए। (तक़्वीयतुल ईमान तर्जमा किताबुत तौहीद, सफ़ा 100, अज़ : मौलवी इस्माईल दहलवी)

येह चन्द अक़ीदे हमने यहाँ उनकी किताबों के हवाले से बयान किये हैं इस तरह के बहुत से इस्लाम के ख़िलाफ़ उनके बुरे अक़ीदे हैं जिनकी बिना पर ओ़लमा-ए-किराम ने उन्हें काफ़िर व मुरतद क़रार दिया और फ़रमाया......... مَن شَكَّ فِى كُفرِهِمْ وَ عَذَابِهِمْ فَقَدْ كَفَر

"यानी येह ऐसे काफ़िर है कि जो इन के कुफ़्र व अज़ाब में शक करें वोह भी काफ़िर है"। (फ़तावा-ए-शामी, हुस्सामुल हरमैन वग़ैरा)

हम कहते हैं अगर सऊदी इमाम लौडिस्पीकर के बग़ैर भी नमाज़ पढ़ाए तो हम सुन्नियों की उसके पीछे नमाज़ ही नहीं होगी तो फिर ऐसे काफ़िर व मुरतदों से लौडिस्पीकर की दलील लेना क्या अहमीयत रखता है! सऊदीयों से तो हमारा मुतालबा है कि पहले वोह अपना मुसलमान होना साबित करें फिर नमाज़ के मसाइल, जाइज़ व ना जाइज़ पर बहेस होगी।

अगर हमारी इस दलील से इतमीनान न हो और यही ज़िद है कि सऊदीया अ़रब में लौडिस्पीकर पर नमाज़ होती है इसलिये हम भी उनकी पैरवी में लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ेंगे तो अर्ज़ है कि....... मदीना मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान "जन्नतुल बक़ी" में जहाँ सैकड़ों सहाबा-ए-किराम, ताबईन, तबेताबईन, अइम्मा-ए-दीन की मज़ारें हैं, और जिस के मुतअ़ल्लिक़ हदीसे पाक में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम का इरशादे पाक हैं कि...

“जन्नतुल बक़ी में ईमान के साथ दफ़्न होने वालों से अल्लाह न हिसाब लेगा न उन से कोई पूछ होगी, उन्हें बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में ड़ाल दिया जाएगा”। उस क़ब्रिस्तान में हज़रत ऊसमाने ग़नी, रसूलुल्लाह की बेटी हज़रत फ़ातमा, हुज़ूर की ज़वजेह (बीवी) हज़रत आएशा सिद्दीक़ा, हुज़ूर के चचा हज़रत अब्बास, हुज़ूर के नवासे हज़रत इमामे हसन, हुज़ूर के दूसरे कई नवासे हज़रत इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन, हज़रत इमाम बाक़र, हुज़ूर की अज़वाजे मोतहरात (बीवीयाँ), हुज़ूर की औलादें, और सैकड़ों जलीलुल क़द्र सहाबा-ए-किराम आराम फ़रमा हैं । उस बा बरकत क़ब्रिस्तान की तमाम मज़ारों को सऊदी हुकूमत ने बुलड़ोज़र से ड़ाह् दिया है । वोह जगह जहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विलादत हुई थी उसे तोड़ कर सअ़ऊदी हुकूमत ने लायब्रारी बना दी । यहाँ तक कि रसूलुल्लाह की वालिदा माजेदा हज़रत आमेना ख़ातून रदीयल्लाहो तआला अन्हा की मज़ार को ड़ाह् कर वहाँ गिलाज़त और गंदगी ड़ालने का अड्डा बना दिया गया है । मक्का मुअ़ज़्ज़मा के क़ब्रिस्तान “जन्नतुल मअ़ला” जहाँ रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़वजेह मोतह्रा (बीवी) हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रदीयल्लाहो तआला अन्हा की मज़ारे पाक थी उसे भी तोड़ कर ज़मीन दोज़ कर दिया गया । उसी क़ब्रिस्तान में सुलतानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदीयल्लाहो अन्हो के पीरो मुरशीद हज़रत ख़्वाजा ऊसमान हारूनी रदीयल्लाहो अन्हो की मज़ारे पाक भी थी उसे भी ज़मीन दोज़ करके उस पर से एक सड़क निकाली गई है जिस पर से अब गाड़ियाँ चलती है । सऊदीया अ़रब में सैकड़ों मुक़द्दस मुक़ामात है जहाँ अब पेशाब पाख़ाने बना दिये गए है । ईमारतों और ख़ूबसूरत सड़कों को बनाने के लिये कई मुक़द्दस जगहों को सऊदी ज़ालिमों ने निस्त व नाबूद कर दिया है ।

हम पूछते हैं क्या सऊदीयों के येह सब काम शरीअ़त क़रार पाएगे ? क्या सऊदी, नज्दी जाहिलों के इन कामों को दलील बना कर अब हिन्दूस्तान व पाकिस्तान में भी बुज़ुर्गाने दीन की मज़ारों को ड़ाह्ने की इजाज़त दी जा सकती है ? दुनिया जानती है कि अ़रब में अब ज़्यादातर नाम के शेख़ दाढ़ी मुंड़ाते हैं, बल्कि मिस्र में तो येह हाल है कि अकसर मस्जिद के इमाम दाढ़ी मुंड़े होते हैं और नमाज़ के वक़्त नक़्ली दाढ़ी लगा कर नमाज़ पढ़ाते

हैं । نعوذباالله नज्दियों में अब अ़य्याशी का बाज़ार भी ख़ूब गर्म है, सऊदी हुकूमत ने ईराक़ से जंग के मौक़े पर अमरीका की फ़ौज को हरम के आस पास पनाह दी जहाँ अमरीकी फौज ने सूअ़र काट काट कर खाए, ख़ूद सऊदी हुकूमत ने अमरीकी फ़ौज के खाने के लिये सूअर और अ़य्याशी के लिये लड़कियों का इन्तेज़ाम किया । हरम शरीफ़ के सामने रहने वाले भी अब टी-वी पर फ़िल्मे देखने से बाज़ नहीं रहते, वहाँ की दूकानों में सऊदी बादशाहों की बड़ी बड़ी तस्वीरें लटकी होती हैं । आप को तअ़ज्जुब होगा कि सऊदीया अ़रब में अकसर मस्जिद में मुअज़्ज़िन नहीं रखा जाता बल्कि आज़ान के लिये टाईमर घड़ी लगी होती है जिसमें पाँचों वक़्त की अज़ान का वक़्त सैट कर दिया जाता है, जैसे ही अज़ान का वक़्त होता है टाईमर से अज़ान बजना शुरू हो जाती है । रमज़ान शरीफ़ में हरम में नमाज़े तरावीह् टी-वी पर ड़ायेरेक्ट टेलीकास्ट होती है और जिन लोगों को हरम में जगह नहीं मिलती वोह अपने घरों में टी-वी शुरू करके उसके सामने नियत करके नमाज़े तरावीह् पढ़ते हैं । क्या येह सब भी शरीअ़त की दलील क़रार पाएगे ? क्या अब भी हम इन कामों पर येह कह कर अ़मल करेंगे कि येह सब वहाँ हो रहा है जहाँ से इस्लाम निकला था ?

याद रखिये ! किसी काम के जाइज़ होने की दलील किसी बादशाह, हुकूमत या लोगों का हुजूम नहीं होता, बल्कि दलील कुरआन व सुन्नत, अइम्मा-ए-दीन व बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल हुआ करते हैं । हमें तअ़ज्जुब है कि दुनिया भर के सुन्नी मुसलमानों को बुज़ुर्गाने दीन की तअ़ज़ीम व अक़ीदत का इज़्हार करने पर बिदअ़ती व मुश्रिक कहने वाले येह सऊदी नज्दी ख़ूद नमाज़ जैसी अहेम ईबादत में लौडिस्पीकर की बिदअ़त को दाख़िल करने के बाद भी अपने आप को सच्चा पक्का तौहीद प्रस्त बिदअ़तों का मुख़ालिफ़ मुसलमान कहते नहीं शर्माते !! अ़रब में अबूजहेल, अबूलहेब, ऊतबा, शैबा, वलीद बिन मुग़ीरा, यज़ीद पलीद, मुख़्तार सक़्फ़ी, हज्जाज बिन युसूफ़, मरवान, मन्सूर जैसे ज़ालिमों, ख़बीसों की हुकूमत तो हो सकती है, लेकिन इन ख़बीसों का काम हरगिज़ शरीअ़त क़रार नहीं पा सकता ।

अब रह गया येह सवाल कि जो लोग सऊदी नज्दी इमाम के पीछे

लौडिस्पीकर पर नमाज़ नहीं पढ़ते उनका हज नहीं होता, तो इसके जवाब में हम कहते है कि कुरआन की किस आयत में, अहादीस व मसाइल की किस किताब में येह बयान किया गया है कि हज के मौके पर सऊदी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है । हम आप से पूछते है हरम में सऊदी इमाम के पीछे जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना हज का कौनसा रूक्न है । येह हज का फर्ज़ है ? वाजिब है ? या सुन्नत है ? सऊदी नज्दी इमाम जो कि अक़ीदे से बद्दीन वहाबी है उसकी ख़ूद अपनी नमाज़ नहीं होती तो उसकी इक़्तेदा में पढ़ने वालों की कहाँ से होगी ! आपको मालूम होना चाहिये कि हज में जो चीज़ें फ़र्ज़ या वाजिब है उन में हरम में जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना न तो हज का कोई फर्ज़ है न वाजिब, हज इस के बग़ैर भी मक़बूल है । लिहाज़ा मुम्किन होतो आप अपनी अलग सुन्नी सहीहुल अक़ीदा इमाम के पीछे जमाअ़त क़याम करें वरना हरम में तन्हा अपनी अलग नमाज़ें अदा करें ।

हरम में ओलमा-ए-अहलेसुन्नत भी लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ते है

कुछ हज़रात येह भी बयान करते हैं कि हमारे अकसर सुन्नी ओ़लमा भी जब सऊदीया अ़रब हज के लिये जाते हैं तो हरम में सऊदी नज्दी इमाम के पीछे लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ते हैं, अगर वोह इमाम वहाबी, बद्दीन हैं तो फिर हमारे ओ़लमा उन की इक़्तेदा में नमाज़ क्यों पढ़ते हैं ?

जवाब : इस एतराज़ के जवाब में सब से पहले साफ़ तौर से येह अर्ज़ करदूँ कि जो लोग सऊदी वहाबी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते हैं उन की नमाज़ ही नहीं होती । और अगर जान बूझ कर वहाबी इमाम के पीछे उसे मुसलमान समझ कर नमाज़ पढ़ी तो ख़ूद ईमान से हाथ धो बैठेगा, उस पर तौबा, तजदीदे ईमान, तजदीदे निकाह फ़र्ज़ है ।

अब रहा हमारे ओ़लमा-ए-अहले सुन्नत का वहाँ नमाज़ पढ़ने का दावा तो अर्ज़ है कि जिन ओ़लमा को खुदा के सिवा किसी का ख़ौफ़ नहीं होता वोह सऊदी इमाम के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते बल्कि अलग अपनी

जमाअ़त बना कर पढ़ते हैं। और अगर इसका मौक़ा न मिले तो फिर अपनी तन्हा नमाज़ अदा करते हैं। हम साफ़ तौर से कह देना चाहते हैं कि जो आ़लिम जानबूझ कर बग़ैर किसी शरई मजबूरी के वहाबी सऊ़दी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ता है तो वोह आ़लिम नहीं निरा जाहिल है।

अक्सर इस्लामी मुल्कों में लौडिस्पीकर पर नमाज़ होती है

आ़शिक़ाने लौडिस्पीकर का एक येह भी नारा हैं कि दुनिया के अक्सर मुल्कों में लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाई जाती है, दुनिया भर के ओ़लमा इसे जाइज़ मानते हैं, सिर्फ़ हिन्दुस्तान के चन्द रज़वी ओ़लमा हैं जो लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ने को दुरूस्त नहीं मानते।

जवाब : येह दावा सरासर ग़लत और सफ़ेद झूट है। अगर येह दावा सच्चा है तो हमारा मुतालबा हैं कि पहले दुनिया के उन तमाम मुल्कों के ओ़लमा के फ़तावे दिखाए जाएँ जिन में उन्होंने दलीलों के साथ लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ने को जाइज़ साबित किया हो। और जब ऐसे कोई फ़तवे पेश नहीं किये जा सकते तो येह दावा ही झूटा और बे बुनियाद है। अगर फर्ज़ कीजिये कोई दुनिया के तमाम मुल्कों के ओ़लमा के फ़तवों को जमा भी करले या दुनिया के तमाम मौजूदा ओ़लमा लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ने को जाइज़ क़रार भी दें दे, तो तब भी येह देखना ज़रूरी हैं कि उनके दलाइल क्या इस क़द्र पुख़्ता और मज़बूत हैं कि जिन ओ़लमा-ए-अकाबिर (पहले के बुज़ुर्ग ओ़लमा) ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ को ना जाइज़ क़रार दिया है उनकी दलीलें टूट जाएँ या कम अज़ कम कमज़ोर नज़र आएँ ! हक़ तो येह हैं कि मक्का व मदीना शरीफ़ में भी जो लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाई जा रही है वोह वहाँ की नज्दी हुकूमत का ख़ूद सख़्ता फैसला है, अभी तक मक्का व मदीने के किसी भी सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मोतेबर आ़लिमे दीन का ऐसा कोई फ़तवा नज़र से नहीं गुज़रा जिसमें लौडिस्पीकर पर नमाज़ हो जाने को शरई दलीलों

से साबित किया गया हो। येह याद रहे कि फतवा सुन्नी सहीहुल अक़ीदा आ़लिम का ही होना चाहिये, वहाबी, नज्दी बद्दीन का फतवा हरगिज़ काबिले कुबूल नहीं होगा। इसलिये कि अहलेसुन्नत के नज़दीक अभी तो उनके ईमान के ही लाले पड़े हुए हैं, जाइज़, ना जाइज़ की बहेस से उन्हें क्या ग़रज़। लेकिन हम यहाँ आपको येह भी बता दें कि आप को येह जान कर शायद तअ़ज्जुब हो कि हिन्दूस्तान के वहाबी, देवबन्दी ओ़लमा के नज़दीक भी लौडिस्पीकर पर नमाज़ ना जाइज़ व हराम है। ओ़लमा-ए-देवबन्द के फतावे हम आख़िर में नक़्ल करेंगे। हम अर्ज़ कर चुके हैं कि वहाबी, देवबन्दी ओ़लमा के फ़तावे हमारे नज़दीक क़ाबिले कुबूल नहीं, लेकिन हमारा उन्हें इस किताब में बयान करने का मक़सद सिर्फ़ हुज्जत तमाम कर देना हैं।

चन्द सुन्नी ओलमा लौडिस्पीकर पर नमाज़ जाइज़ कहते है !

लौडिस्पीकर के अक़ीदतमन्द चन्द सुन्नी ओ़लमा के नाम पेश करते हैं और नावाक़िफ़, कम इल्म लोगों में येह कहते फिरते हैं कि फुलाँ फुलाँ बहुत बड़े आ़लिम साहब हैं उन्हों ने अपनी तहक़ीक़ से येह साबित कर दिया हैं कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ हो जाती है।

जवाब : हम शुरू में नक़्ल कर आए हैं कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ के ना जाइज़ होने पर बड़े बड़े अकाबिर (बुजुर्ग) ओ़लमा-ए-अहलेसुन्नत का इज्मा (शरई इत्तेफ़ाक़) हो चुका हैं। और जिन अकाबिर ओ़लमा ने इस के ना जाइज़ होने पर इज्मा किया था अगर आज के बड़े बड़े सैकड़ों ओ़लमा मिल जाए तो इल्म व अ़मल में उन अकाबिर में से एक के बराबर भी नहीं हो सकते। वोह ओ़लमा न सिर्फ़ येह कि आ़लिमे दीन थे बल्कि उन में का हर एक फ़र्द अपने वक़्त का वली-ए-कामिल और एक मुकम्मल अन्जुमन था, अब अकाबिर ओ़लमा के इज्मा के मुक़ाबिल अपनी नई बचकाना तहक़ीक़ रखना फ़ितना व फ़साद का दरवाज़ खोलने के सिवा कुछ नहीं।

इस ज़माने में जो ओ़लमा लौडिस्पीकर पर नमाज़ के सही हो जाने

के काएल है उनमें सिर्फ़ तीन के नाम ही क़ाबिले ज़िक्र हैं । इन तीन के इलावा बाक़ी ज़्यादातर हज़रात ऐसे हैं जो सिर्फ़ मौलवी साहेबान हैं और मस्जिद के इमाम होने तक ही महदूद हैं और इस मस्अले में इन तीन ओ़लमा के ही पैरोकार है । आईये इन तीनों ओ़लमा के मुतअ़ल्लिक तफ़्सील जानें ।

हज़रत अल्लामा अफज़ल हुसैन साहब

हज़रत अल्लामा अफ्ज़ल हुसैन साहब किबला अलैहिर रहमा हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह तआ़ला अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा थे । सब से पहले 1960 ई. में उन्हों ने ही लौडिस्पीकर पर नमाज़ के जाइज़ होने पर फ़तवे दिये । लेकिन अभी वोह फ़तवे मन्ज़रे आप पर आए ही थे कि उसी ज़माने में ख़ूद उन्हीं के पीरो मुर्शिद शहज़ाद-ए-आ़लाहज़रत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द हज़रत अल्लामा मुस्तफ़ा खाँ रज़ा रहमतुल्लाह तआ़ला अलैह ने अपने मुरीद व ख़लीफ़ा अल्लामा अफ़ज़ल हुसैन साहब के उन तमाम फ़तावों का रद्द लिखा और मज़बूत दलाइल से येह साबित फ़रमा दिया कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ ना जाइज़ व गुनाह है । हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द के वोह फ़तावे किताबी शक्ल में 1961 ई. में "अत्तफ़सीलुल अन्वर फ़ी हुक्मे लौडिस्पीकर" के नाम से छप कर मन्ज़रे आ़म पर आए । इस किताब पर उस वक़्त के तमाम बड़े बड़े अकाबिर ओ़लमा ने सैकड़ों की तादाद में तस्दीक़ात फ़रमाई और इस तरह लौडिस्पीकर पर नमाज़ के ना जाइज़ व गुनाह होने पर सैकड़ों अकाबिर ओ़लमा-ए-अहलेसुन्नत का इज्मा (शरई इत्तेफ़ाक) हो गया। अल्लामा अफ्ज़ल हुसैन साहब इस इज्मा के बाद मुकम्मल तौर पर ख़ामूश हो गए और फिर उन्होंने इस के रद्द में कुछ तहरीर न फ़रमाया । यहाँ तक कि बाद में हज़रत अफज़ल हुसैन साहब अलैहिर्रहमा ने अपने जाइज़ के उन फ़तवों से रूजू भी फ़रमा लिया । (सुबूत के लिये देखिये किताब-"कुरआनी नमाज़ बमुकाबल-ए-मैकरोफ़ोनी नमाज़" सफ़ा 47, व किताब "बर्के इलाही") लेकिन अफसोस आज भी कुछ फ़ित्तीन किस्म के लोग जानते बूझते अल्लामा अफ़ज़ल हुसैन साहब के उन रद्द शुदा फ़तवों की फोटो कापी (Xerox) बार बार लोगों के सामने लाते हैं और अ़व्वाम के सामने येह झूट कहते हैं कि देखों येह किताब हज़रत अल्लामा

अफ़ज़ल हुसैन साहब की लिखी हुई है जो हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द के ख़लीफ़ा थे, हज़रत ने इस किताब में लौडिस्पीकर पर नमाज़ जाइज़ है साबित कर दिया है । हम उन धोके बाज़ों से कह देना चाहते हैं कि जब हज़रत अल्लामा अफ़ज़ल हुसैन साहब का रद्द ख़ूद उन्हीं के पीरो मुरशिद हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह ने कर दिया और उसका जवाब हज़रत अफ़ज़ल हुसैन साहब ने न दिया बल्कि आपने फ़तवों से रूजू फ़रमा लिया तो अब उन रद्द शुदा फ़तवों को दलील बना कर बार बार सामने लाना ख़ूद अपने आप को और कौम को धोका देना नहीं है तो क्या है !

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब

सन 1990 ई. में अशरफ़ीया मुबारकपूर, से हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन रज़वी साहब किबला ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ के जाइज़ होने पर एक किताब लिखी जिसका नाम "लौडिस्पीकर का शरई हुक्म" है । मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की इस किताब में क्या है ? उसमें अलफ़ाज़ व इबारतों की कमी व ज़्यादती के साथ तकरीबन वही बातें, वही हवाले, वही दलीलें है जो उनसे पहले सन 1960 ई. में हज़रत अल्लामा अफ़ज़ल हुसैन साहब अपने फ़तवों में बयान कर चुके थे, और उसका रद्द उसी ज़माने में हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह समेत तमाम अकाबिरे ओ़लमा ने कर दिया था जैसा कि इसका बयान पहले गुज़र चुका है ।

तअ़ज्जुब है कि मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब ने रद्द की जा चुकी दलीलों को बुनियाद बना कर एक बेबुनियाद किताब तरतीब दे ड़ाली और नये सिरे से फ़ितना व शर का बीच अहलेसुन्नत के दरमियान बो दिया... आख़िर इसका नतीजा क्या हुआ.....लौडिस्पीकर के हुस्न व जमाल पर अपनी जान कुरबान करने वालों के लिये मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की येह किताब हथियार का काम कर गई । फिर क्या था ! लौडिस्पीकर के शैदाईयों ने बड़ी बेबाकी से ऐसे माहोल में और ऐसी जगहों पर लौडिस्पीकर मुसल्लत करने की कोशिश की जहाँ लोग अपने बुजुर्गो के फतवों पर सख़्ती से अ़मलपैरा रह कर लौडिस्पीकर की बिदअ़त से अपना दामन बचाये हुए थे । लौडिस्पीकर के

अक़ीदतमन्दों ने लोगों को मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की किताब दिखा दिखा कर बहकाना शुरू कर दिया कि...."देखो दारूल ऊलूम अशरफ़ीया मुबारकपूर के मुफ़्ती साहब ने नमाज़ में लौडिस्पीकर को जाइज़ कर दिया है जो कि हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द के मुरीद और रज़वी आ़लिम है"। इस क़िस्म के प्रचार से माहोल ख़राब होने लगा, लोग आपस में लड़ भिड़ने लगे। लेकिन अल्लाह का फज़्लो करम हुआ कि हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की इस किताब ने अभी बचपन से जवानी की दहलीज़ पर क़दम भी नहीं रखा था कि उस्ताजुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुतीऊर रहमान रज़वी साहब क़िबला ने हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की किताब "लौडिस्पीकर का शरई हुक्म" के रद्द में एक किताब लिखी जिसका नाम "क़ौले फ़ैसल" रखा । इस किताब के सफ़हात 225 हैं । इस किताब में मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की उन तमाम दलीलों का रद्द फ़रमा दिया गया जिन से लौडिस्पीकर पर नमाज़ के जाइज़ होने का गुमान हो रहा था । साथ ही येह भी साबित फ़रमाया कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ किसी सूरत में जाइज़ नहीं और अकाबिर ओ़लमा का इज्माई फ़ैसला ही हक़ व सही है

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुतीऊर रहमान साहब क़िबला के इस रद्द के इलावा क़ायदे अहलेसुन्नत हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद हुसैनी अशरफ़ी मिस्बाही साहब क़िबला ने भी मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की किताब की खुतूत के ज़रिये सख़्त तरदीद फ़रमाई । अल्लामा सय्यद साहब क़िबला की मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब से तवील ख़त व किताबत हुई (जो अब किताबी शक्ल में "शरई मुहासबा" के नाम से छप कर मन्ज़रे आम पर आ चुकी है), इसके बाद हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब इस मस्अले में मुकम्मल तौर पर ख़ामूश हो गए, न तो उन्होंने हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद मुतीऊर रहमान साहब क़िबला की किताब "क़ौले फ़ैसल" का रद्द लिखा और न ही हज़रत अल्लामा सय्यद हुसैनी साहब क़िबला के "शरई मुहासबे" का जवाब दिया ।

हक़ीर सगे रज़ा (मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ रज़वी) ने सन 2000 ई. में हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब क़िबला से नमाज़ में लौडिस्पीकर के इस्तेमाल के मुतअ़ल्लिक़ चन्द तहरीरी सवालात पूछे थे जिस के जवाब में मुफ़्ती निज़ामुद्दीन

साहब किबला ने जो फतवा दिया उस में वोह साफ़ फ़रमाते हैं कि.....

"हिन्दूस्तान के जमहूर ओ़लमा-ए-अहलेसुन्नत का फतवा येह है कि लौडिस्पीकर से सुनी हुई आवाज़ पर इक़्तेदा दुरूस्त नहीं....मोहद्दिसे आज़म पाकिस्तान हज़रत अल्लामा सरदार अहमद साहब रहमतुल्लाह अलैह के तीन फतवे इस वक़्त मेरे पेशे नज़र हैं जो माहनामा रज़ा-ए-मुस्तफ़ा, गुजरॉवाला (पाकिस्तान) के शुमारा शाबान 1415 हिजरी में छपे हैं, जिनमें वोह फ़रमाते हैं...."हमारे अकाबिर ओ़लमा ने नमाज़ में लौडिस्पीकर लगाने को पसंद नहीं किया, बल्कि बाज़ ओ़लमा ने साफ़ फ़रमाया कि इसका नमाज़ में लगाना दुरूस्त नहीं, बाज़ ने फ़रमाया नमाज़ ही न होगी, बाज़ ने फ़रमाया हरगिज़ न लगाया जाए, बाज़ ने फ़रमाया इसका नमाज़ में लगाना बिदअ़ते सय्याह् है, और बाज़ ने फ़रमाया नमाज़ तो नमाज़ अज़ान व खुतबे में भी इसका इस्तेमाल न किया जाए"।

दस्तख़त

मुहम्मद निज़ामुद्दीन अलरज़वी,

ख़ादेमुल इफ़्ता, दारूलऊलूम अशरफ़ीया, मुबारकपूर.

24 रबीयुल आख़िर, 1421 हिजरी.

इस क़द्र खुलासे के बाद अगर अब भी कोई मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की उस किताब को अपनी बग़ल में दबाए इधर उधर दौड़ता फिरे तो उसकी बेअक़्ली पे अफ़सोस ही किया जा सकता है ! क्या अब भी किसी आशिक़े लौडिस्पीकर को येह कहने की गुन्जाईश बाक़ी रह जाती है कि हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब लौडिस्पीकर पर नमाज़ जाइज़ है, साबित कर चुके हैं और उनसे इस मस्अले में ओ़लमा-ए-अहलेसुन्नत की एक जमाअ़त मुत्ताफ़िक़ है । इतना जानने के बाद भी अगर खुदा नाख़्वास्ता कोई दयानत व शर्म की हदों को फ़रामोश करके अब भी यही राग आलाप रहा हो तो उसके लिये हम अर्ज़ कर देते है कि जब 1990 ई. में मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ के जाइज़ होने पर किताब लिखी थी तो उस वक़्त भी कुछ लोग मुसलमानों को यही धोका दे रहे थे कि मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की इस तहक़ीक़ से मुबारकपूर अशरफ़ीया के बड़े बड़े ओ़लमा मुत्ताफ़िक़ हैं । चुनानचे उन्हीं दिनों उस्ताजुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद हुसैनी

अशरफ़ी मिस्बाही साहब किबला ने अपने माहनामा "सुन्नी आवाज़" में हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब का रद्द लिखा था। हज़रत अल्लामा सय्यद साहब क़िबला अपने उस मज़मून में एक जगह तहरीर फ़रमाते हैं......

"क्या (लौडिस्पीकर के नमाज़ में जाइज़ होने के) इस फ़ितने को नये अन्दाज़ से अशरफ़ीया मुबारकपूर ही से उठना था"!

(सुन्नी आवाज़, शुमारा सितम्बर, अक्टूबर, 1990 ई. सफ़ा 28)

इस के जवाब में हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब ने हज़रत सय्यद साहब क़िबला को जवाब में लिखा.......

"अर्ज़ हैं कि इस फ़ितने को नये अन्दाज़ से उठाने का अलमबरदार तन्हा मैं ही हूँ अशरफ़ीया और उसके ओ़लमा इस फ़ितना अंगेज़ी से पूरे तौर पर बरी है मेरी मअ़लूमात की हद तक आज भी ओ़लमा-ए-अशरफ़ीया में कोई फ़र्द मेरे इस काम से राज़ी नहीं"। (बहवाला शरई मुहासबा, सफ़ा 5)

उसी दौरान इस मस्अले के मुतअ़ल्लिक़ नायब मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द शारहे बुख़ारी हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ साहब क़िबला रहमतुल्लाह अलैह (जो ओ़लमा-ए-मुबारकपूर के सदर व अमीर थे और हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब के उस्ताद है हज़रत उस वक़्त बाहयात थे, हज़रत का इन्तेक़ाल सन 2000 ई. में हुआ) उन्हों ने हज़रत अल्लामा सय्यद हुसैनी साहब क़िबला को इस सिलसिले में एक ख़त लिखा जिस में वोह ओ़लमा-ए-मुबारकपूर की जानिब से सफ़ाई देते हुए इरशाद फ़रमाते हैं ....

"मस्अला-ए-लौडिस्पीकर में अज़ीज़े गिरामी विक़ार अल्लामा मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब अपनी राय में अकेले हैं, इदारे (जामेआ अशरफ़ीया मुबारकपूर) का कोई फ़र्द उनसे मुत्तफ़िक़ नहीं, उन्हों ने जो कुछ कहा उसकी ज़िम्मेदारी तन्हा उनके सर है"। (बहवाला शरई मुहासबा, सफ़ा नं. 59)

नायब मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द हज़रत मुफ़्ती शरीफ़ुलहक़ साहब अलैहिर्रहमा के इस बयान से साफ़ ज़ाहिर है कि मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब लौडिस्पीकर पर नमाज़ के जाइज़ कहने के मामले में पूरी जमाअ़त में तन्हा है। इसी से उनकी लौडिस्पीकर पर नमाज़ के जाइज़ होने की दलीलों का पता चलता है कि उनकी इन दलीलों से दूर के ओ़लमा तो जाने दीजिये उनके

अपने क़रीब के ओ़लमा भी मुत्ताफ़िक़ नहीं ।

ख़ुदारा इन्साफ़ ! एक तरफ़ तन्हा मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब है जिन्हें ख़ूद इक़रार है कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ जाइज़ कहना "फ़ितना" है जिसके वोह इस दौर में तन्हा अलमबरदार है । और दूसरी तरफ़ अकाबिर (बुज़ुर्ग) ओ़लमा की एक फौज है जिनमें का हर एक फर्द अपने इल्म व अमल के एतेबार से कोहे हिमाला है, जिनके इल्म व बुज़ुर्गीयत पर किसी को शक व शुबह भी नहीं । आख़िर माना किसे जाए ? अकाबिर के इज्मा को ! या तन्हा मुफ़्ती की तन्हा बात को ! यक़ीनन बुज़ुर्गो की मानने में ही नजात व बेहतरी है ।

हज़रत अल्लामा मदनी मियॉ साहब

लौडिस्पीकर पर नमाज़ जाइज़ कहने वालों में अब अल्लामा मदनी मियॉं साहब भी शरीक हो गए हैं । हालाँकि यही अल्लामा मदनी साहब हैं कि जब अकाबिर ओ़लमा में से अक्सर बाहयात थे तो उनकी हॉं में हॉं मिलाते रहे और लौडिस्पीकर पर नमाज़ ना जाइज़ बताते रहे । यहॉं तक कि सन 1973 ई. में ख़लीफ़ा-ए-आ़ला हज़रत हुज़ूर बुरहाने मिल्लत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती बुरहानुल हक़ क़ादरी साहब रहमतुल्लाह तआ़ला अलैह ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ के नाजाइज़ होने पर एक किताब "सियानतिस सलात अन हिल्लील बिदआ़त" लिखी, उसपर अल्लामा मदनी मियॉं साहब अपनी तस्दीक़ यूँ करते हैं कि.

बिस्मिल्लहिर रहमानिर रहीम ०

"लौडिस्पीकर का इस्तेमाल नमाज़ में जाइज़ नहीं, और इस से इमाम की तकबीराते इन्तेक़ालिया सुन कर रूकू व सुजूद करने वाले मुक्तदियों की नमाज़ सही नहीं । इन दोनों हुक्मों की वज़ाहत सिर्फ़ ज़ेरे नज़र किताब "सियानतिस सलात अन हिल्लील बिदआ़त" में ही नहीं देखी बल्कि इससे मुतअ़ल्लिक़ (यानी लौडिस्पीकर पर नमाज़ के नाजाइज होने पर) बहुत सारे अकाबरीने अहलेसुन्नत और इमाइदीने इस्लाम (यानी दीने इस्लाम के बड़े बड़े बुज़ुर्ग ओ़लमा) के इरशादात को भी देखने का शर्फ़ हासिल हुआ, येह सारे अकाबिरीन व इमाइदीन वोह मक़ाम रखते हैं जिन की इताअ़त ही में सलाह व फ़लाह और

एहतियात व नजात है । हम जैसों के लिये तो उनकी इताअ़त व इत्तेबा (पैरवी) के सिवा चारा-ए-कार नहीं । येह तो उनकी ज़र्रा नवाज़ी और करम फ़रमाई हैं कि अपने इरशादात की ताईद व तस्दीक़ हम जैसों से भी चाहते हैं हालाँकि उनके इरशादात को न इस ताईद व तस्दीक़ की ज़रूरत हैं और न किसी अदमे ताइद (यानी ताईद न करने से कोई) नुक़सान । والسلام على من اتبع الهدى (सालमती है उसके लिये जो हिदायत की पैरवी करें) ।

दस्तख़त :: मुहम्मद मदनी अशरफ़ी जिलानी -- 25 अक्तूबर 1973 ई.

ग़ालेबन सन 1992 ई. तक अल्लामा मदनी मियाँ साहब लौडिस्पीकर पर नमाज़ ना जाइज़ कहते और लिखते रहे । लेकिन 1992 के बाद (जबकि हज़रत बुरहानुल मिल्लत समेत तक़रीबन अकाबिर ओ़लमा का इन्तेक़ाल हो चुका था) हज़रत मदनी मियाँ साहब ने बाक़ौल ख़ुद अकाबिर ओ़लमा की इताअ़त से मुँह मोड़ कर फ़लाह व नजात को छोड़ दिया और जिन बुज़ुर्ग ओ़लमा की पैरवी के सिवा उन्हें चारा नहीं था उनसे मुँह फेर लिया । अब वोह यूँ फ़रमाते हैं....."मेरे ख़्याल में लौडिस्पीकर की मौजूदगी में बग़ैर मुकब्बिर के भी अरकाने नमाज़ अदा करने में कोई हर्ज नहीं लेकिन चुँकि बाज़ मुक़्तदर ओ़लमा (यानी ऐसे बुज़ुर्ग जलीलुल क़द्र ओ़लमा जिनकी पैरवी की जाती है) और मुफ़्तीयाने किराम लौडिस्पीकर की आवाज़ पर नमाज़ के अरकान अदा करने को नमाज़ न होने का सबब क़रार देते हैं तो इस सूरत में दोनों बातों को जमा करने की येह बेहतर सूरत है कि लौडिस्पीकर के साथ ज़रूरत के मुताबिक़ मुकब्बिर भी रख लिये जाए ताकि उन ओ़लमा-ए-किराम के हम ख़्याल अफ़राद (लोगों) को भी नमाज़ के हो जाने का यक़ीन हासिल रहे"। (शरई बोर्ड, सफ़ा नं. 47)

यहाँ हम येह भी अर्ज़ करदें कि जब शहज़ाद-ए-आलाहज़रत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ के ना जाइज़ होने का फ़तवा दिया था तो उस फ़तवे पर अल्लामा मदनी मियाँ साहब के वालिदे माजिद हुज़ूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह अलैह ने इस तरह तस्दीक़

फ़रमाई थी कि .... هذا حكم العالم المطاع وما علينا الا الاتباع

"यानी (नमाज़ में लौडिस्पीकर के ना जाइज़ होने पर) येह ऐसे ज़बरदस्त आलिमे दीन का फ़तवा है जिस की पैरवी के बग़ैर कोई चारा नहीं"।

(अत्तफ़सीलुल अन्वर फी हुक्मे लौडिस्पीकर, सफ़ा नं. 26)

इस तस्दीक़ के इलावा भी हुज़ूर मोहद्दिसे आज़ामे हिन्द अलैहिर्रहमा के लौडिस्पीकर पर नमाज़ के ना जाइज़ होने पर कई मुस्तक़ील फ़तावे हैं । लेकिन अफ़सोस ! अल्लामा मदनी मियाँ साहब ने अपने वालिदे माजिद के हुक्म के ख़िलाफ़ लौडिस्पीकर का नमाज़ में इस्तेमाल जाइज़ क़रार दिया और फ़रमाया....लौडिस्पीकर का इस्तेमाल बग़ैर मुकब्बिर के भी जाइज़ हैं । और रहा येह कि बुज़ुर्ग ओलमा और ख़ूद वालिदे माजिद (जिनकी पैरवी में नजात है) उसे ना जाइज़ क़रार दे चुके हैं लिहाज़ा ऐसा किया जाए कि लौडिस्पीकर भी रख लें और साथ में एक दो मुकब्बिर भी रख लिये जाऐं ताकि बुज़ुर्गों की बात भी रह जाए और हमारे मुज्तहीद के दावे की भी लाज रह जाए । हज़रत अल्लामा मदनी साहब के इस अनोखे इज्तेहाद की जितनी तअरीफ़ की जाए कम है । क्या ख़ूब हल निकाला है, इसे ही कहते हैं....दोनों हाथों में लड्डू । ना जाइज़ कहने वाले भी चुप और जाइज़ कहने वाले भी ख़ूश ! अगर यही इफ़्ता का हाल रहा तो शरीअत का तो खुदा ही हाफ़िज़ है !

इस दो रूख़ी अजीब व ग़रीब इज्तेहाद पर ज़्यादा कुछ तबसेरा करना वक़्त ज़ाए करना है । लेकिन इतना ज़रूर अर्ज़ कर दे कि...."बन्दा परवर ! जब लौडिस्पीकर के साथ आप मुकब्बिर रख ही रहे हैं तो आख़िर लौडिस्पीकर से इतना इश्क़ क्यों ? मुकब्बिर जब अपनी आवाज़ से तकबीरें आख़री सफ़ों तक पहुँचा ही रहा है तो अब लौडिस्पीकर की हाजत ही क्या रही ! आपके क़ौल के मुताबिक़ अगर लौडिस्पीकर के साथ मुकब्बिर का भी इन्तेज़ाम किया जाए तो तजुर्बा यही है कि लोग मुकब्बिर की आवाज़ पर रूकू व सुजूद नहीं करते, और न ही येह मुम्किन है, क्योंकि मुकब्बिर के तकबीर पुकारने से पहले लौडिस्पीकर से इमाम की सदा आख़री सफ़ तक सुनाई देती है और मुकब्बिर की आवाज़ बाद में आती है । यहाँ तक कि देखा गया है कि मुकब्बिर ख़ूद लौडिस्पीकर की आवाज़ सुन कर तकबीरात पुकारता है, इस

लिये कि उस तक ख़ूद इमाम की अस्ल आवाज़ नहीं पहुँचती बल्कि लौडिस्पीकर की सदा पहुँचती है, जिससे उसकी अपनी ख़ूद की नमाज़ फ़ासिद हो जाती हैं, तो ऐसे मुकब्बिर की तकबीर पर इक़्तेदा क्यों कर जाइज़ होगी जो ख़ूद लौडिस्पीकर की आवाज़ पर इक़्तेदा कर रहा हो !

लिहाज़ा साबित हुआ कि लौडिस्पीकर और मुकब्बिर साथ साथ रखना किसी सूरत सही नहीं हो सकता बल्कि येह नमाज़ के साथ एक तरह का खिलवाड़ और मज़ाक़ है ।

येह तो हुआ हज़रत अल्लामा मदनी मियाँ साहब के उस अनोखे इज्तेहाद का जवाब । अभी आप अल्लामा मदनी मियाँ साहब की मुख़्तलिफ़ वक़्तों में दी गई मुख़्तलिफ़ दो राय भी पढ़ चुके हैं । लेकिन तअज्जुब है कि हज़रत अल्लामा मदीनी मियाँ साहब क़िबला हर नई राय क़ायम करते वक़्त अपनी पहली दी गई राय को भूल जाते है, यही वजेह है कि उनके अकसर बयानात तज़ाद बयानी का शिकार है ।

जहाँ हज़रत अल्लामा मदीनी साहब एक तरफ़ येह फ़रमाते है कि लौडिस्पीकर के साथ मुकब्बिर रख लिये जाए वहीं दूसरी तरफ़ वोह अपनी किताब "वीडीयो टी.वी. का शरई इस्तेमाल" में येह भी फ़रमाते है कि....

> "एक एनरजी (Energy) का दूसरी एनरजी में बदल जाना अहले इल्म के नज़दीक एक मअ़रूफ़ व मुतआरिफ़ (यानी मशहूर व जानी पहचानी बात) है, मसलन आप की आवाज़ एक एनरजी है, यूँही रौशनी एक एनरजी है, इसी तरह मैगनेट (लोहा चुम्बक) एक एनरजी है वग़ैरा वग़ैरा, जब आप आवाज़ निकालते हैं और वोह माईक से टकराती है तो फ़ौरन इक्ट्रानिक एनरजी में बदल जाती है और फिर यही जब इस्पीकर से बाहर होती है तो फ़ौरन ही साऊँड एनरजी में तबदील हो जाती है । अलग़रज़ आवाज़ का रौशनी हो जाना या रौशनी का आवाज़ हो जाना इन्क़लाबे माहिय्यत (यानी अपनी हक़ीकत बार बार बदलना) नहीं तो और क्या है"? (विडियो टीवी का शरई इस्तेमाल, सफ़ा नं. 254)

देखा आपने ! जनाब अल्लामा मदनी मियाँ साहब को ख़ूद इक़रार

है कि आवाज़ एक एनरजी है और यही एनरजी जब माईक से टकराती है तो अस्ल आवाज़ नहीं रहती बल्कि एक दूसरी अलग एनरजी इलेक्ट्रानिक एनरजी में बदल जाती है और फिर येह बदली हुई इलेक्ट्रानिक एनरजी जब एम्पलीफ़ायर मशीन से तरक़्क़ी पाकर इस्पीकर में आती है तो फिर एक दूसरी एनरजी साऊँड एनरजी में तबदील हो जाती है । इस से साफ़ ज़ाहिर है कि लौडिस्पीकर की आवाज़ इमाम की अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि एक इलेक्ट्रानिक एनरजी है जो इस्पीकर में लगे मैग़नेट की मदद से इलेक्ट्रानिक एनरजी से साऊँड एनरजी में तबदील होती है जिसे सुनकर नमाज़ी रूकू व सुजूद करेंगे, येह आवाज़ इमाम या मुकब्बिर की अस्ल आवाज़ नहीं बल्कि इस्पीकर से निकलने वाली एक एनरजी है जिस का नमाज़ या इमाम की अस्ल आवाज़ से किसी तरह का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं । लिहाज़ा साबित हुआ कि लौडिस्पीकर की आवाज़ इमाम की अस्ल आवाज़ नहीं और न ही उस पर इक्तेदा जाइज़ हैं, अब अल्लामा मदनी मियाँ साहब को बुज़ुर्गों के मुक़ाबिल पेश करना और लोगों पर येह धौंस जमाना कि लौडिस्पीकर की आवाज़ पर नमाज़ पढ़ना दुरूस्त है क्योंकि अल्लामा मदनी मियाँ साहब की राय हैं, किसी सूरत में दुरूस्त नहीं कि अल्लामा मदनी मियाँ साहब की अपनी रायों का ख़ूद कोई ठिकाना नहीं ।

लौडिस्पीकर के मस्अले में ओलमा के दरमियान इख़्तिलाफ है !

लौडिस्पीकर के कुछ मोहिब्बीन लोगों को येह भी धोका देते है कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ के मस्अले में ओलमा के दरमियान इख़्तिलाफ़ है, लिहाज़ा जो ना जाइज़ समझता है वोह लौडिस्पीकर पर नमाज़ न पढ़े, और जो जाइज़ समझता है वोह पढ़े । ओ़लमा के दरमियान मसाईल को लेकर इख़्तिलाफ़ात चलते रहते है, इस मामले में जिसे जो अच्छा लगे वैसा करें ।

जवाब : हम लौडिस्पीकर के इन मोहिब्बीन से अर्ज़ करते है कि अकाबिर ओ़लमा के इज्मा पर अ़मल वाजिब है । आज के चन्द मौलवियों

का इस मस्अले में इख़्लाफ़ करना कोई माअ़ने नहीं रखता।

हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द रहमतुल्लाह तआला अलैह लौडिस्पीकर के मुत्अ़ल्लिक अपने एक फ़तवे में फ़रमाते हैं.........“ऐसे मसाइल जिनमें एक सही दूसरा यक़ीनन ग़लत व बातिल (है) येह इख़्तिलाफ़ रहमत नहीं निरा ज़हमत है .... जो मोहक़्क़ क़ौल है वोह ही मक़बूल होगा ग़ैर मोहक़्क़ मरदूद होगा”। (अत्तफ़सीलुल अन्वर फ़ी हुक्मे लौडिस्पीकर, सफ़ा 24)

अब जब कि अकाबिर बुज़ुर्ग मुहक़्क़ेक़ीन ने लौडिस्पीकर के मस्अले पर ख़ूब कामिल तहक़ीक़ फ़रमाई फिर उसका नमाज़ में इस्तेमाल ना जाइज़ व हराम क़रार दिया और इस पर इज्मा कर लिया, अब उन के मुक़ाबिल आज के एक दो नहीं बल्कि दुनिया भर के तमाम ग़ैर मोहक़्क़िक़ ओ़लमा भी लौडिस्पीकर को जाइज़ कहने लग जाएँ तो वोह कोई फ़ायदेमन्द क़ाबिले कुबूल नहीं होगा, और उसे ओ़लमा का वोह इख़्तिलाफ़ हरगिज़ क़रार नहीं दिया जा सकता जिसे हदीस शरीफ़ में रहमत बताया गया है।

ओ़लमा का ऐसा इख़्तिलाफ़ जो सुन्नत को ख़त्म करने का सबब बने वोह हरगिज़ रहमत नहीं हो सकता वोह सरा सर ज़हमत ही ज़हमत है। आज के येह एक, दो अपने मुँह मियाँ मुज्तहिद कहलाने वाले हज़रात जो एक नई ईजाद “लौडिस्पीकर” को अकाबिर ओ़लमा के इज्माई फ़ैसले के ख़िलाफ़ नमाज़ में दाख़िल करके मुकब्बिर की सुन्नत का गला घोंटने में मसरूफ़ है उनका येह अकाबिर ओ़लमा से इख़्तिलाफ़ करना फ़ुरूई इख़्तिलाफ़ नहीं निरा फ़ितना और ना हक़ की ज़िद है जो पहले के इज्माई फ़ैसले को हरगिज़ ख़त्म नहीं कर सकता।

चलिये अगर थोड़ी देर के लिये हम येह बात मान भी ले कि लौडिस्पीकर की आवाज़ पर नमाज़ पढ़ने के मुत्अ़ल्लिक़ ओ़लमा के दरमियान इख़्तिलाफ़ है, तो लौडिस्पीकर के शैदाईयों से हम पूछते है कि.... इस इख़्लाफ़ से आप ने येह कहाँ से नतीजा निकाल लिया कि अब लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ना, पढ़ाना जाइज़ हो गया ! इख़्लाफ़ है ही इसलिये कि उसके जाइज़ होने पर सब का इत्तेफ़ाक़ नहीं। अगर येह साबित हो जाता कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है तो फिर इख़्तिलाफ़ ही न रहता !!

लेकिन अभी तक इसे साबित नही किया जा सका है।

शरीअत का एक अहेम कानून : शरीअ़त का क़ानून है कि अगर किसी मस्अले के जाइज़ व ना जाइज़ होने पर ओ़लमा के दरमियान इख़्तिलाफ़ हो कि कुछ ओ़लमा किसी काम को ना जाइज़ कहे और कुछ ओ़लमा उसे जाइज़ बताएँ तो ऐसे मौके पर शरीअ़त का हुक्म भी यही है कि एहतियातन ना जाइज़ का ही हुक्म बयान किया जाएगा और उस से बचने का हुक्म देंगे, येह मस्अला फ़िकाह की आ़म छोटी, बड़ी किताबों में मौजूद है। इख़्तिलाफ़ के मआ़नी अ़मल करना नहीं बल्कि बचना है।

आयत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है..

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا۔

तर्जमा :: "किसी ऐसी बात पर अ़मल मत कर जिसकी तुझे तहक़ीक़ न हो कि हर शख़्स से उसके कान, आँख और दिल के मुतअ़ल्लिक पूछ होगी"।

(कुरआने करीम, पारा 15, सूरए बनी इस्राई, आयत 35)

हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं....

دع ما يريبك الى ما لا يريبك۔

"छोड़ उस चीज़ को जो तुझे शक में ड़ाले, इख़्तियार कर उसे जिस में शक न हो"। (इहयाउल उ़लूम, जिल्द 1, सफ़ा नं. 72)

लिहाज़ा फ़रमाने खुदा व रसूल से भी साबित हुआ कि नमाज़ में लौडिस्पीकर का इस्तेमाल न करने में ही आफ़ियत है कि नमाज़ जैसी अहेम ईबादत में रिस्क नहीं लिया जाएगा। वोह ओ़लमा-ए-किराम जो लौडिस्पीकर पर नमाज़ को जाइज़ कहते हैं वोह भी अपनी तहक़ीक़ के बाद आख़िर में यही फ़रमाते हैं कि........"परहेज़ बेहतर है"। चुनानचे......

अहतियात का हुक्म : लौडिस्पीकर पर नमाज़ जाइज़ कहने वालों में अल्लामा मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब क़िबला अपने एक क़लमी फ़तवे में फ़रमाते हैं........"जब मस्अला अकाबिर फ़ुक़ाह के दरमियान मुख़्तलिफ़ फ़ीह (यानी इख़्तिलाफ़ी) हो जाए तो रिआ़यत ख़िलाफ़े मुस्तहब होती है (यानी ऐसी सूरत में जाइज़ कहना या उस पर अ़मल की छूट देना परहेज़गारी के ख़िलाफ़ है) लिहाज़ा अव्ला

(यानी बेहतर) व अफ़ज़ल येह है कि (नमाज़ में लौडिस्पीकर का) इस्तेमाल न किया जाए इसी में अहतियात है"। 1

(अज़ : क़ल्मी फतवा, अल्लामा निज़ामुद्दीन साहब, 24 रबीउल अव्वल 1421 हिजरी)

एक मिसाल : अगर हम आपके सामने दो गिलास शरबत के रखदें और कहे कि इन दो शरबत के गिलासों में से एक गिलास में ज़हेर मिला हुआ है और येह नहीं मालूम कि किस गिलास में ज़हेर है, किस में नही, आप को इन दोनों में से एक गिलास का शरबत पीना है। हम समझते है कि अगर आप अक़लमन्द है तो एक गिलास शरबत की लालच में मौत का ख़तरा हरगिज़ मोल नहीं लेंगे बल्कि दोनों में से किसी भी गिलास को उठाएगे तक नहीं। बस इसी मिसाल से समझते चलिये कि एक तरफ़ अकाबिर (बुज़ुर्ग) ओ़लमा-ए-किराम की एक बड़ी जमाअ़त हैं जो नमाज़ में लौडिस्पीकर के इस्तेमाल को ज़हरे क़ातिल क़रार दे रही है। और दूसरी तरफ़ आज के चन्द मौलवी हज़रात हैं जो नमाज़ में लौडिस्पीकर के इस्तेमाल को सेहत बख़्श कह रहे हैं, ऐसी सूरत में बुज़ुर्गों के हुक्म को छोड़ कर अहतियात करने की बजाए आज के इन चन्द मौलवी हज़रात के कहने पर लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ कर नमाज़ की मौत का ख़तरा मोल लेना कहाँ की अक़लमन्दी है ! बुज़ुर्गों के इज्माई फ़ैसले के ख़िलाफ़ अपने मुर्गे की एक टाँग करना बुज़ुर्गों की ना फ़रमानी और उन की तअ़लीमे हक़ से बग़ावत है जिसकी इब्तिदा फ़ितना व फ़साद और अन्जाम गुमराही है।

हम समझाने के लिये अर्ज़ करते है कि मान लीजिये अगर बरोज़े महशर ना जाइज़ कहने वाले हमारे बुज़ुर्ग ओ़लमा की बात ही सही निकली तो आपकी उन नमाज़ों का क्या होंगा जो आपने लौडिस्पीकर पर अदा की हैं ! आप उस वक़्त उसकी भरपाई कैसे करेंगे ? क्या येह जाइज़ कहने वाले आज के चन्द मौलवी साहेबान उस वक़्त आपके कुछ काम आ सकेंगे जिन की मुहब्बत व अँधी पैरवी में आप मरे जा रहे है।.... हम ने येह मिसाल आपके समझने के लिये बयान की है वरना अलहमदुलिल्लाह ! हमारा अक़ीदा तो यही है कि बुज़ुर्गों का हुक्म ही सही व दुरूस्त है और बरोज़े महेशर वोह ही हक़ पर होंगे, क्योंकि बग़ैर लौडिस्पीकर पढ़ी गई नमाज़ों के कुबूल होने

1 नोट : हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब के इस कलमी फतवे की ओरिजनल कापी फ़कीर के पास मौजूद है। (फारूक़ रज़वी)

की शरीअ़त ने ज़मानत ली है ।

क्या तहक़ीक़ का दरवाज़ा बन्द हो गया

कुछ चालाक मौलवी साहेबान अव्वाम को येह कह कर धोका देते है कि "क्या तहकीक् का दरवाज़ा बन्द हो गया है ? देखो इमाम अबू यूसुफ इमामे आज़म अबूहनीफ़ा रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो के शागिर्द थे, इल्म में इमामे आज़म से कम थे लेकिन उन्हों ने भी अपने उस्ताद व इमाम के ख़िलाफ़ कई मस्अलों में तहक़ीक़ की है और इमामे आज़म से इख़्तिलाफ़ किया है । फ़्लाँ फ़्लाँ आ़लिम ने अपने उस्ताद व इमाम से इख़्तिलाफ़ किया है । कोई कितना ही बड़ा बुज़ुर्ग हो क्या वोह मासूम है उनसे भी तहक़ीक़ में ग़लती हो सकती है, लिहाज़ा हमें भी हक़ है कि हम भी अपने बुज़ुर्गों की तहक़ीक़ की तहक़ीक़ करें"।

जवाब : इसके जवाब में इन छोटे छोटे नन्ने मुन्ने मोहक़्क़ेक़ीन से अर्ज़ हैं कि जनाबे वाला यक़ीनन तहक़ीक़ का दरवाज़ा बन्द नहीं हुआ है, अगर आप लोग इल्मी तहक़ीक़ी मैदान में अपना ज़ोर आज़माना ही चाहते हैं तो अकाबिर मोअ़तेमद व मुस्तनद ओ़लमा-ए-दीन के मुक़ाबले में ख़म ठोंक कर न आईये जो आपके उस्तादों के उस्ताद, शरीअ़त व तरीक़त के मशाईख़े उज़्ज़ाम हैं । बिलाशुबाह् हमारे इन अकाबिर ओ़लमा में से एक आ़लिम के मुक़ाबले में इस वक़्त के सारे ओ़लमा को वही निस्बत है जो एक क़तरे को समुन्द से होती है । अकाबिर के इल्मे समुन्दर के मुक़ाबले में आपकी हैसीयत यक़ीनन एक क़तरे के बराबर है ।

मुत्तफ़िक़ मसाइल (वोह मसाइल जिन में बुज़ुर्गों का इत्तेफ़ाक़ हो चुका ऐसे मसाइल) के मुक़ाबले में छोटा मुँह बड़ी बात के अन्दाज़ में अपनी अलग देढ़ ईंट की ईमारत तामीर न कीजिये । आप शौक़ से उन नये मसाईल पर ख़ूब तहक़ीक़ फ़रमाईये जो अकाबिरीन के ज़माने में न थे या अकाबिरीन की उमरे ज़ाहिरी ने उन्हें हल करने की मोहलत न दी ।

अगर आप अकाबिरीन की तहक़ीक़ के मुक़ाबिल अपनी तहक़ीक़ रखेगे तो इस से सिवाए उम्मत में इन्तिशार व इख़्तिलाफ़ के कुछ न होगा,

और येह सिलसिला यहाँ तक पहुँचेगा कि हर अयेरा ग़ैरा अपने बुज़ुर्गों की तहक़ीक़ व हुक्म को ठुकराता हुआ नज़र आएगा। यहाँ तक कि इसकी भी क्या गैरन्टी है कि आप की तहक़ीक़ को भी आपके बाद वाले मान लें। जब आपने पहले वालों की न मानी तो क्या ज़रूरी है कि बाद वाले आप की मान लें। आख़िर शरीअ़त में येह मन मानी उम्मते मुस्लेमा को गुमराहियत के किस गढ़े में ले जाकर दफ़्न कर देंगी।

अब रह गया इमामे अबू यूसुफ का इमामे आज़म से मसाइल में इख़्तिलाफ़ करना या किसी इमाम का अपने बड़े इमाम से इख़्तिलाफ़ करना तो जनाबे वाला इस दलील से आप बेमौक़े, बेज़रूरत इमाम अबू यूसुफ बनने की कोशिश न करें क्योंकि अव्वल तो वोह हज़रात सब के सब मुजतहिद फ़ील मसाईल थे और मोजतहिद को ख़ता-ए-इज्तेहादी पर भी सवाब मिलता है। आप ज़रा अपने बारे में बताईये ! मक़ामे इज्तेहाद में आपका अपना मक़ाम क्या है ? इल्मे फ़िक़ाह, हदीस व कुरआनो तफ़सीर में आप की पून्जी कितनी है जो मुज्तहिद व इमाम अबू यूसुफ़ बनने का शौक़ चर्राया है। चलिये मान भी लिया जाए कि आप अपने वक़्त के मज़हर व सानी-ए-इमाम अबू यूसुफ व इमाम मुहम्मद है... तो जनाब मुज्तहिद साहब ! लौडिस्पीकर के नमाज़ में जाइज़ होने पर वोह दलीलें लाईये जिनको देखने के बाद अकाबिरीन ओ़लमा की ना जाइज़ की दलीलें टूटती हुई नज़र आए या कम अज़ कम कमज़ोर ही लगने लगे। लेकिन अलहम्दुलिल्लाह ! अब तक किसी भी नन्ने मुन्ने मुँह मियाँ मुज्तहिद साहब से येह न हो सका कि अकाबिरीन की दलीलों की काट करता, कितने ही मुफ़्ती निज़ामुद्दीन और अल्लामा मदनी मियाँ जैसे इस मैदान में आए और आपनी बात को निभाने के लिये अपने चाहने वालों को नमाज़ में लौडिस्पीकर की इक़्तेदा में ला कर खड़ा कर दिया लेकिन दलील के नाम पर..............!!!

दूसरी एक अहम बात येह भी है कि इमाम अबू यूसुफ किसी इज्माई मुत्तफ़क़ अलैह मसाइल में आपकी तरह सर धड़ की बाज़ी लगा कर एक मिशन नहीं चला रहे थे कि हम ने अपने इमाम के ख़िलाफ़ जो कह दिया वही सही है बस अब उसे ही मानो। लेकिन इसके बरअक्स देखा तो येह

जा रहा है कि जिन मौलवी साहेबान ने लौडिस्पीकर का नमाज़ में इस्तेमाल जाइज़ कह दिया अब उनके मुरीदीन व मानने वाले उसे फर्ज़ व वाजिब जान कर हर मस्जिद में लौडिस्पीकर लगाने की एक मोहिम सी चला रहे है, जिसके नतीजे में नफ़रतें, फ़ितना व फ़साद जन्म ले रहे है और देखा देखी बे शरअ़ फ़ैशन प्रस्त लोग इमाम की किर्अ़त व आवाज़ के मज़े लोटने के बहाने वहाँ भी लौडिस्पीकर का इस्तेमाल कर रहे हैं जहाँ नमाज़े तरावीह़, शबीना और नमाज़े जुमा में चार पाँच सफ़े नमाज़ियों की होती है और इमाम की आवाज़ बा आसानी पहुँच रही है।

लौडिस्पीकर के नमाज़ में ना जाइज़ होने पर इज्मा-ए-अहलेसुन्नत

इमामे अहलेसुन्नत मुजद्दिदे आज़म सय्येदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो के ज़माने हयात में किसी ने लौडिस्पीकर की बिदअ़त को नमाज़ में दाख़िल करने के बारे में सोचा तक नहीं था। और न किसी ने आला हज़रत से इस बारे में कोई सवाल किया, इसी लिये आला हज़रत अलैहिर्रहमा ने इस पर कोई मुस्तक़ील किताब नहीं लिखी। लेकिन आला हज़रत के बाद आपके ख़ुल्फ़ा व अकाबिर ओ़लमा जो मस्लके अहले सुन्नत के अथारटी तस्लीम किये जाते है और जो न सिर्फ़ आ़लिमे दीन थे बल्कि उस जमाअ़त में का हर फ़र्द अपने वक़्त का वली-ए-कामिल था उन तमाम बुज़ुर्गो ने इस मस्अले पर ख़ूब तहक़ीक़ फ़रमाई, और फिर मुत्तफ़ेक़ा तौर पर लौडिस्पीकर के नमाज़ में इस्तेमाल को ना जाइज़ व हराम क़रार दिया और इस मस्अले को इज्मा-ए-उम्मत की शक्ल दे दी। इन में से चन्द बुज़ुर्ग ओ़लमा के हम यहाँ नाम लिख रहे हैं।

1) ख़लीफ़ा-ए-आलाहज़रत सदरूल अफ़ाज़िल हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी रहमतुल्लाह अलैह (मुसन्निफ़ तफ़्सीरे ख़ज़ाईनुल ईरफ़ान)

2) ख़लीफ़ा-ए-आला हज़रत मलकुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा ज़फ़ारूद्दीन

बेहारी साहब रहमतुल्लाह अलैह 3) ख़लीफ़ा-ए-आला हज़रत सदरूश्शरीआ हज़रत अल्लामा अमजद अली आज़मी साहब रहमतुल्लाह अलैह (मुसन्निफ बहारे शरीअत) 4) शहज़ादा-ए-आलाहज़रत हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द अल्लामा मुस्तफ़ा खाँ रज़ा साहब रहमतुल्लाह अलैह (बरेली शरीफ़) 5) ख़लीफ़ा-ए-आला हज़रत शेरबशेह अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा हशमत अली खाँ साहब रहमतुल्लाह अलैह (पीलीभीत शरीफ़) 6) शागिर्दे आला हज़रत हुज़ूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद अशरफ़ी जिलानी साहब रहमतुल्लाह अलैह (किच्छौछा शरीफ़) 7) ताजुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा सय्यद मियाँ साहब रहमतुल्लाह अलैह (मारहेरह शरीफ़) 8) ख़लीफ़ा-ए-आला हज़रत बुरहानुल मिल्लत हज़रत मुफ़्ती बुरहानुल हक़ साहब रहमतुल्लाह अलैह (जबलपूर) 9) ख़लीफ़ा-ए-आला हज़रत क़ुतबे मदीना हज़रत अल्लामा ज़ियाऊद्दीन मदनी रहमतुल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा) 10) ख़लीफ़ा-ए-आला हज़रत रईसुल मोहक़्क़ेक़ीन अल्लामा गुलाम जिलानी साहब मीरठी रहमतुल्लाह अलैह (इंगलैन्ड़) 11) सय्यदुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा सय्यद आले मुस्तफ़ा साहब बरकाती रहमतुल्लाह अलैह (मारहेरा शरीफ़) 12) उस्ताजुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती रफ़ाक़त हुसैन साहब रहमतुल्लाह अलैह 13) हाफ़िज़े मिल्लत हज़रत अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ साहब रहमतुल्लाह अलैह (बानी अलजामेअ़तुल अशरफ़ीया, मुबारकपूर), 14) फ़क़ीहे मिल्लत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शाह अजमल साहब रहमतुल्लाह अलैह (संभलपूर), 15) फ़ख़रे मिल्लत हज़रत अल्लामा मुहम्मद मज़हरूल्लाह साहब रहमतुल्लाह अलैह (दहली), 16) महबुबूल ओ़लमा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद महबूब अली खाँ साहब रहमतुल्लाह अलैह (बम्बाई), 17) मुजाहिदे मिल्लत हज़रत अल्लामा हबीबुर रहमान साहब रहमतुल्लाह अलैह (उड़ीसा), 18) उस्ताजुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद तय्यब साहब रहमतुल्लाह अलैह 19) हकीमुल उम्मत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार खाँ नईमी अशरफ़ी साहब रहमतुल्लाह अलैह 20) हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रिज़वानुर रहमान साहब फ़ारूकी रहमतुल्लाह अलैह 21) शमसुल ओ़लमा हज़रत अल्लामा शमसुद्दीन साहब रहमतुल्लाह अलैह (मुसन्निफ क़ानूने शरीअ़त, जोनपूर), 22) फ़क़ीहे आज़म हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अब्दुर्रशीद फ़तेहपूरी साहब रहमतुल्लाह अलैह (बानी जामेआ़ अरबीया, नागपूर) 23) हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुशाहिद रज़ा क़ादरी साहब

रहमतुल्लाह अलैह 24) हज़रत अल्लामा मुफ़्ती रफीउल्लाह साहब रहमतुल्लाह अलैह (अजमेर), 25) हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सय्यद मुख़्तार अशरफ साहब रहमतुल्लाह अलैह (किच्छौछा शरीफ),

हम ने यहाँ चन्द अकाबिर (बुजुर्ग) ओ़लमा-ए-अहले सुन्नत के नाम बयान किये हैं, इन के इलावा और भी अकाबिर ओ़लमा हैं उन सब के नाम इस छोटी सी किताब में लिख पाना मुम्किन नहीं ।

फ़क़ीहे मिल्लत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शाह मुहम्मद अजमल साहब संभ्भली रहमतुल्लाह तआ़ला अलैह अपने एक फ़तवे में फ़रमाते हैं कि....

"रिसाला "अमानतुल इस्लाम" जो कराची में शाए हुआ हैं उसमें हिन्दूस्तान के शहरों से दहली, सहारनपूर, देवबन्द, धाबेल, सूरत, अजमेर, किच्छौछा, भावलपूर, मुरादआबाद, अमरोहा, थानाभवन, वग़ैरा के फ़तवे छपे हैं जिन में लौडिस्पीकर पर नमाज़ को ना जाइज़ साबित किया गया है । इसी रिसाला अमानतुल इस्लाम में पाकिस्तान के शहरों मुल्तान, तोलसना, अलीपूर मैदान, गोलड़ा, लाहोर, कराची, जालेन्धर, ड़ेराग़ाज़ी ख़ाँ, रावलपीन्ड़ी, लाएलपूर के 75 अकाबिर मुफ़्तीयाने किराम के फ़तावे छपे हैं जिनमें लौडिस्पीकर पर नमाज़ को ना जाइज़ साबित किया गया है"।

(बहवाला अत्तफसिलुल अन्वर फी हुक्मे लौडिस्पीकर, सफा 35)

हक़ीर सगे रज़ा (मुहम्मद फ़ारूक खाँ रज़वी) अर्ज़ करता है कि....

"बातौफ़ीके इलाही ! हक़ीर ने अपनी ज़ाती तहक़ीक़ से तक़रीबन दो सौ (200) अकाबिर ओ़लमा-ए-अहलेसुन्नत के नाम जमा किये है, जिन्होंने लौडिस्पीकर पर नमाज़ को ना जाइज़ क़रार दिया । अलहमदुलिल्लाह ! इन अकाबिर में से अक्सर के फ़तावे भी इस हक़ीर के पास मौजूद है"।

पहले के इन सैकड़ों अकाबिर ओ़लमा के इज्मा पर अ़मल करना अब हर मुसलमान पर ज़रूरी हैं और इसके ख़िलाफ़ अपनी बेबुनियाद दलीलों को लाना, या नई तहक़ीक़ के नाम पर नमाज़ में लौडिस्पीकर के इस्तेमाल को जाइज़ क़रार देने की नाकाम कोशिश करना उम्मत में फ़ितना व फ़साद बरपा करने और लोगों की नमाज़ों से खिलवाड़ करने के सिवा कुछ नहीं ।

आयत कुरआने करीम में अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त इरशाद फ़रमाता हैं..

وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ... الخ || तर्जमा :- और उस की राह चल जो मेरी तरफ रूजू लाया । (कुरआने करीम, पारा 21, सूरए लुकमान, आयत 15)

यकीनन येह हमारे वोह अकाबिर थे जो अल्लाह की तरफ रूजू ला चुके अब हमें हुक्म हैं कि हम उनकी पैरवी करें इसी में हमारी नजात हैं ।

आयत अल्लाह तआला ईमान वालों को दुआ तअ़लीम फ़रमाता हैं..

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ... الخ || तर्जमा :- हम को सीधा रास्ता चला, रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान व इन्आम किया । (कुरआने करीम, पारा 1, सूरए फातिहा, आयत 5-6)

हदीस सहाबी-ए-रसूल हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो से मरवी है कि ....

من كان مستنا فليستن بمن قد مات فان الحى لا تومن عليه الفتنة ..... الخ

"यानी जो शख़्स किसी के तरीक़े पर अ़मल करना चाहे तो उस को चाहिये कि उन ईमान वाले नेक लोगों के तरीक़े को अपनाए जो इस दुनिया से गुज़र चुके हैं क्योंकि ज़िन्दों पर फ़ितनों का अन्देशा ज़्यादा होता है"। (मिश्कात शरीफ़, जिल्द 1, हदीस नं. 182, सफ़ा नं. 61)

रब तबारक व तआ़ला का फ़ज़्ल व करम है कि हम अपने गुज़रे हुए नेक बुज़ुर्ग ओ़लमा के तरीक़े को अपनाए हुए है और लौडिस्पीकर के इस फ़ितने से अल्लाह की पनाह चाहते है । आला हज़रत रदीयल्लाहो तआ़ला अन्हो ने क्या ख़ूब फ़रमाया है... तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा ।
वोह क्या बहेक सके जो येह सुराग़ ले के चले ।।

लौडिस्पीकर के जाइज़ होने पर इज्मा

कुछ बेबाक आ़शिक़ाने लौडिस्पीकर जिन्हें इज्मा कहना भी नहीं आता "इस्मा" कहते है, बड़ी बे बाकी से येह कह देते हैं कि हर शहर में पाँच छे मस्जिदों को छोड़ कर बड़ी तादाद में नमाज़ में लौडिस्पीकर का इस्तेमाल हो रहा है जिससे साबित होता है कि लौडिस्पीकर के नमाज़ में जाइज़ होने पर इज्मा हो चुका है ।

जवाब : इस बेहुदा दलील के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ है कि येह इज्मा का सरासर ग़लत मतलब बयान किया गया है । यक़ीनन येह इज्मा नहीं "इस्मा" ही है जो नमाज़ों की बरबादी पर हो रहा है । इज्मा का हरगिज़ येह मतलब नहीं कि जिस तरफ़ दुनियादारों की बड़ी तादाद हो गई, इज्मा हो गया । इज्मा अ़व्वाम और जाहिलों का नहीं होता, कुरआन व तफ़्सीर, हदीस व फ़िक़ाह् के माहेरीन अहले इ़ल्म, अहले बसीरत, साहिबे फ़तवा व तक़्वा हज़रात का किसी मस्अले पर शरई तौर पर इत्तेफ़ाक़ व हिमायत कर देना इज्मा कहलाता है । हम ने जिन कुरआन व तफ़्सीर, हदीसो फ़िक़ाह के जलीलुल क़द्र माहेरीन, साहिबे इल्मो तक़्वा अकाबिरीन का इज्मा बयान किया है, येह है इज्मा व इत्तेफ़ाक़ । अगर हौसला हो तो अपने इज्मा की ताईद में हदीसो फ़िक़ाह्, कुरआनो तफ़्सीर के ऐसे अकाबिर ओ़लमा जैसे हम ने बयान किये है उसी पाये के ज़्यादा नहीं तो सिर्फ़ दो चार ओ़लमा के ही नाम बता दिजिये ?

इज्मा क्या बच्चों का खेल है कि बे पढ़े लिखों की भीड़ एखट्टा करली और हो गया इज्मा ! अगर ऐसे ही इज्मा होने लगे तो फिर कोई येह भी कहने लगेगा कि फ़िल्मे देखने पर इज्मा है, कि अब दो चार घरों को छोड़ कर घर घर में टी.वी. है । कल कोई मॉडर्न मौलवी येह भी फ़तवा दे सकता है कि दाढ़ी मुन्ड़ाना, कोट टाई पहेन कर नमाज़ पढ़ना, नाचना गाना, जाइज़ है कि अब दो चार लोगों को छोड़ कर सारा ज़माना यही सब कुछ कर रहा है । आप अन्दाज़ा लगाईये कि अगर मुसलमानों की अक़्लो फ़हेम का यही दिवालीयापन रहा तो फिर इस्लाम व शरीअ़त का अल्लाह की हाफ़िज़ है ।

ओलमा-ए-देवबन्द के नज़दीक लौडिस्पीकर का हुक्म !

तअ़ज्जुब की बात है कि ओ़लमा-ए-देवबन्द के नज़दीक भी लौडिस्पीकर पर नमाज़ ना जाइज़ व हराम है । हालाँकि हक़ तो येह हैं कि बग़ैर लौडिस्पीकर के भी उन की कोई नमाज़ क़ाबिले कुबूल नहीं क्योंकि उन पर नमाज़ फ़र्ज़ नही, बल्कि पहले गुस्ताख़ी-ए-अल्लाह व रसूल से तौबा व

तजदीदे ईमान (दोबारा ईमान लाना) फ़र्ज़ है ।

तजुर्बा येह है कि ओलमा-ए-देवबन्द अक्सर ऐसे मसाईल को जाइज़ बताने में जल्द बाज़ी से काम लेते हैं लेकिन तअ़ज्जुब है कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ के ना जाइज़ होने के वोह भी क़ाएल है । चुनानचे..."फ़तावा-ए-देवबन्द" में ओलमा-ए-देवबन्द का मुत्तफ़ेका फैसला नक़्ल है कि.....

"नमाज़ में लौडिस्पीकर का इस्तेमाल इमाम की तकबीरों और क़िर्अत को आ़म मुक़्तदियों तक पहुँचाने के लिये करना ना जाइज़ हैं और जो लोग लौडिस्पीकर की आवाज़ पर नमाज़ के अरकान अदा करेंगे उनकी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी"। (फ़तावा-ए-देवबन्द, जिल्द 8, सफ़ा नं. 70)

इसके इलावा मौलवी अशरफ़ अली थानवी, मौलवी हुसैन अहमद टान्ड़वी और मौलवी मुहम्मद शफ़ी देवबन्दी वग़ैरा के भी फ़तावे लौडिस्पीकर के नमाज़ में ना जाइज़ होने के मुतअ़ल्लिक़ छप चुके हैं । बल्कि मौलवी अशरफ़ अली थानवी तो लौडिस्पीकर पर जुम्अ व ईदैन का खुतबा भी जाइज़ नहीं मानते । हवाले के लिये देखिये "फ़तावा-ए-दारूल ऊलूम देवबन्द" जिल्द 5, सफ़ा 175, और एक दूसरी किताब "किफ़ाया" सफ़ा नं. 200, वग़ैरा ।

लौडिस्पीकर फितने का सबब

येह बात हक़ीक़त और तजुर्बात की हद तक साबित हो चुकी है कि जब तक किसी मस्जिद में लौडिस्पीकर का इस्तेमाल नहीं किया जाता उस वक़्त तक वहाँ कोई फ़ितना व फ़साद नहीं होता है । लोग बग़ैर किसी आपसी इख़्तिलाफ़ के नमाज़ अदा करते हैं, लेकिन जैसे ही लौडिस्पीकर की बला नमाज़ में दाख़िल की जाती है.... अब उसी मस्जिद में आपसी झगड़े, फ़ितना व फ़साद का सिलसिला शुरू हो जाता है । जमातियों में गुरूप बन्दी शुरू होने लगती है । एक गिरोह कहता है कि हम नमाज़ में लौडिस्पीकर लगने नहीं देंगे । दूसरा गिरोह चैलेन्ज करता हैं कि नमाज़ में हम लौडिस्पीकर लगा कर ही दम लेंगे चाहे इस के लिये हमें कुछ भी करना पड़े ! फिर सियासी चाले, मक्र व फ़रेब का सिलसिला शुरू ...... नतीजा...... आपसी दुशमनी, दिलों

में रंजिशें, ख़ून ख़राबे की नौबत और न जाने क्या क्या !

हम पूछते हैं ! इस गिरोह बन्दी, आपसी इन्तिशार, इख़्तिलाफ़ और फ़ितना व फ़साद का सबब कौन है ? आख़िर येह फ़ितना व फ़साद कौन बरपा कर रहा है ?.... इस फ़साद के ज़िम्मेदार क्या वोह लोग है जो अपने माडर्न सनदयाफ़्ता पीरों की अँधी तक़लीद में नमाज़ जैसी अहेम ईबादत में नमाज़ से ख़ारिज चीज़ "लौडिस्पीकर" को दाख़िल करना चाहते है...या... वोह लोग ज़िम्मेदार है जो आपने आक़ा व मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत व उनके सहाबा-ए-किराम के तरीक़े पर अ़मल करके मुकब्बिर रख कर नमाज़ें पढ़ना चाहते है !! ज़रा दयानतदारी से बताईये ! फ़सादी कौन लोग हैं ? क्या फ़सादी वोह हैं जो इस तरक़्क़ीयाफ़्ता (Modern) ज़माने में रहने के बावजूद भी रसूलुल्लाह और सहाबा-ए-किराम के साड़े चौदा सौ (1450) साल पुराने अ़मल को आज भी छोड़ना नहीं चाहते !... या फ़सादी वोह है जो रसूल व सहाबा की सुन्नत "मुकब्बिर" को छोड़ कर अंग्रेज़ों की इजाद लौडिस्पीकर को अल्लाह की फ़र्ज़ करदा ईबादत में शामिल करके तरक़्क़ीयाफ़्ता और मॉडर्न कहलाना चाहते है !!?

अल्लाह आप को हिदायत दें ! अगर अब तक आपकी अक़्ल व होश ने आप का साथ नहीं छोड़ा है तो आप यही कहेंगे कि फ़ितना व फ़साद का सबब लौडिस्पीकर है । क्योंकि नमाज़ में लौडिस्पीकर लगाने से पहले कोई इन्तिशार, कोई फ़साद नहीं था, जैसे ही येह कमबख़्त नमाज़ में इमाम से आगे आ कर खड़ा हुआ फ़ितना व फ़साद शुरू हो गया । अब हर बाशऊर इन्सान समझ सकता है कि लौडिस्पीकर इत्तेहाद का दुशमन है, और जो मुसलामनों के इत्तेहाद को ख़त्म करे उसे ही ख़त्म कर देना अक़लमन्दी और समझदारी है ।

आयत अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त इरशाद फ़रमाता हैं.......

तर्जमा	आयत
तर्जमा :- और अल्लाह की रस्सी (दीने इस्लाम) को सब मिल कर थाम लो और आपस में बट न जाना ।	وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيعًا وَّلَا تَفَرَّقُوا..... الخ

(कुरआने करीम, पारा 4, सूरए आले ईमरान, आयत 103)

एक अहेम आखरी बात

आख़िर में हम फिर एक बार येह बयान कर दे कि नमाज़ियों की तादाद ज़्यादा होने पर मुकब्बिर रखना रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम की सुन्नत है और लौडिस्पीकर मुकब्बिर की अज़ीम सुन्नत को मिटा रहा है। अब ऐसे माहोल में जब कि आज लौडिस्पीकर के शैदाईयों ने हर मस्जिद में लौडिस्पीकर को नमाज़ में मुसल्लत करने का बिड़ा उठा रखा है, जो लोग आज भी अपने नबी की मुकब्बिर रखने की सुन्नत को ज़िन्दा रखे हुए है और अपने आक़ा व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत व उनके सहाबा के तरीक़े के मुताबिक़ अपनी नमाज़ों को अदा करते हैं उन के लिये अल्लाह रब्बुल ईज़्ज़त की तरफ़ से येह इन्आम है ....

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِـهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوَارِثُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ط هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

तर्जमा :- और वोह लोग जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं यही लोग वारिस है कि जन्नतुल फ़िरदोस में अपना हक़ पाएँगे, वोह इस में हमेशा रहेंगे। (कुरआने करीम, पारा 18, सूरए मोमेनून, आयत 9-10-11)

और प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ख़ूशख़बरी देते हुए इरशाद फ़रमाते हैं...............

من تمسك بسنتى عند فساد امتى فله اجر مائة شهيد .

"मेरी उम्मत के बिगाड़ के वक़्त जिस ने मेरी सुन्नत को मज़बूती से थामे रखा उसके लिये हज़ार शहीदों के बराबर सवाब है"।

(बयहक़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ, जिल्द 1, हदीस नं. 166, सफ़ा नं. 58)

एक तरफ़ नबी की सुन्नत "मुकब्बिर" है जिस पर अ़मल करने में नमाज़ों के क़ुबूल होने की ज़मानत, हज़ार शहीदों का सवाब, जन्नत की विरासत, और कामयाबी है, और दूसरी तरफ नबी की सुन्नत को ख़त्म करने वाला फ़ित्ना "लौडिस्पीकर" है जिसे नमाज़ में इस्तेमाल करने में सवाब तो दूर, उल्टा ना जाइज़ व हराम का गुनाह। और ज़िम्मे पर फ़र्ज़ नमाज़ जैसे के वैसे

बाक़ी । या कम अज़ कम नमाज़ के कुबूल न होने का ख़तरा ज़रूर । अब फ़ैसाला आप को करना है !...... अगर इतनी वज़ाहत के बाद अब भी कोई लौडिस्पीकर पर अपनी जान फ़िदा करने के लिये बेजैन हो और लौडिस्पीकर नामी लैला का मजनू बने रहना चाहता हो तो उसे आला हज़रत रदीयल्लाहो तआला अन्हो की ज़बान में ....

शर्म नबी ख़ौफ़े खुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं !

के सिवा क्या कहा जा सकता है !

याद रखिये ! बरोज़ें महशर हर किसी को अपनी नमाज़ों का जवाब ख़ूद देना है । कोई येह कह कर अल्लाह की सख़्त पकड़ से बच नहीं जाएगा कि हज़ारों लोग लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ रहे थे इसलिये मैं भी उन में शामिल हो गया । मुसलमान की हरगिज़ येह शान नहीं कि दुनिया के पीछे चले और दुनिया में जो कुछ होता देखे नक़लची बंदर की तरह वैसे ही ख़ूद भी करने लगे । हकीक़ी मुसलमान दुनिया से मुतास्सिर नहीं होता उसे दुनिया के तरीक़े से ज़्यादा रसूलुल्लाह व बुजुर्गाने दीन का अ़मल पसंद होता है ।

ज़मीमा (इज़ाफ़ा शुदा)

हक़ीर सगे रज़ा मुहम्मद फ़ारूक खाँ रज़वी अर्ज़ करता है कि हम ने येह किताब सितम्बर 2001 ई. में मुकम्मल की थी । उस वक़्त हुज़ूर उम्दतुल मोहक़्क़ेक़ीन हज़रत अल्लामा मुफ़्ती गुलाम मुहम्मद खाँ साहब रहमतुल्लाह अलैह हयाते ज़ाहिरी में थे । चुनाँचे उस वक़्त हम ने इस किताब को क़ल्मी सूरत में हज़रत की ख़िदमत में पेश किया जिसे पढ़ कर हज़रत इन्तेहाई मसरूर हुए और अपनी ख़ास इनायतों व दुआओं के साथ तस्दीक़ व तक़रीज़ अ़ता फरमाई, जो इस किताब के शुरू में मौजूद है । लेकिन दीगर कुछ दुनियावी व दीनी मसरूफ़ियात के सबब येह किताब उस वक़्त हम मन्ज़रे आ़म पर न ला सके । अब जब कि हज़रत अपने रब की रहमतों के साये में अपनी क़ब्रे अन्वर में आराम फ़रमा है । "उर्से सय्यदी आलाहज़रत" के मौक़े पर अप्रिल सन 2005 ई. में हम इसे मन्ज़रे आ़म पर ला रहे है । चुंकि उस वक़्त लौडिस्पीकर के मुतअ़ल्लिक़ जनाब इल्यास क़ादरी साहब और शरई कौन्सल वाला मस्अला नहीं था लिहाज़ा इसे अब हम हज़रत की तस्दीक़ के बग़ैर अपनी ज़िम्मेदारी पर ज़मीमे के तहेत शाए कर रहे है ।

दावते इस्लामी और लौडिस्पीकर !

आज से चन्द साल पहले की बात है कि कुछ अहबाब के ज़रिये येह ख़बर मिली कि सरबराहे दावते इस्लामी जनाब मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी साहब ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाना शुरू कर दिया है । सुनकर तअ़ज्जुब हुआ कि दुनिया भर में सुन्नतों को आ़म करने का डँका पिटने वाले जनाब इल्यास क़ादरी साहब ने मुकब्बिर की "मीठी मीठी" "प्यारी प्यारी" सुन्नत को छोड़ कर "कड़वी कड़वी" "बद सूरत" लौडिस्पीकर की बिदअ़त को नमाज़ में कैसे शुरू कर दिया ! बात चुंकि सुनी सुनाई थी इस लिये यक़ीन करना ज़रूरी नहीं समझा । लेकिन फिर बाद में ग़ालेबन मार्च 2003 में एक मरतबा हुज़ूर क़ायदे अहले सुन्नत हज़रत अ़ल्लामा सय्यद मुहम्मद हुसैनी अशरफ़ी मिस्बाही साहब क़िबला मद्दज़िल्लाहु के दौलतकदे पर ज़ियारत की गरज़ से हाज़िर हुआ तो हज़रत ने इस ख़बर की तस्दीक़ फ़रमाई और एक ख़त (जो उनके पास तक़रीबन छे सात महीने पहले का था) अ़ता फ़रमाया जो पाकिस्तान के बुज़ुर्ग आ़लिमे दीन ख़लीफ़ा-ए- हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द, मोहक़्क़ीके अहलेसुन्नत हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद हसन अली रज़वी साहब क़िबला मद्दज़िल्लाहु का था (जो कि ख़ूद दावते इस्लामी के सरप्रस्तों में से थे, अब मौजूदा सूरते हाल क्या है इसकी इस हक़ीर को इत्तेला नहीं) ख़त हुज़ूर ऊमदतुल मोहक़्क़क़ीन हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती गुलाम मुहम्मद ख़ाँ साहब अलैहिर्रहमा (जो कि उस वक़्त ज़ाहिरी हयात में थे) और हुज़ूर क़ायदे अहलेसुन्नत के नाम तहरीर था । उस ख़त में जनाब इल्यास क़ादरी साहब के लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाने का तज़केरा था, और हुज़ूर उम्दतुल मोहक़्क़ेक़ीन से इल्यास साहब को समझाने की गुज़ारिश थी । (उस ख़त की फ़ोटो कापी अब भी इस हक़ीर के पास मौजूद है)

इस ख़त के हासिल होने के कुछ अ़र्से बाद ही रज़ा एकाड़मी मुम्बई से एक किताब हासिल हुई जिसे ख़ूद रज़ा एकाड़मी ने छापा था इस किताब का नाम "लौडिस्पीकर पर नमाज़ मअ़ तहक़ीक़ाते अकाबिरे अहलेसुन्नत" है । येह किताब हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद हसन अली साहब क़िबला की लिखी हुई है जो कि सरबराहे दावते इस्लामी जनाब इल्यास क़ादरी साहब के लौडिस्पीकर

पर नमाज़ पढ़ाने के रद्द में है। "मीठे मीठे" अमीरे दावते इस्लामी के मुतअल्लिक हम अपनी तरफ़ से कुछ कहें, बेहतर है कि हज़रत अल्लामा मुहम्मद हसन अली साहब क़िबला की उस किताब के चन्द इक़्तेबासात (हिस्से) यहाँ बयान कर दें जो जनाब इल्यास क़ादरी साहब और उनके लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाने की बिदअ़त को समझने के लिये काफ़ी है ।

चुनाँचे हज़रत अल्लामा मुहम्मद हसन अली साहब क़िबला अपनी उस किताब की इब्तिदा में लिखते है कि ....

"हमारी हैरत और मलाल की उस वक़्त इन्तेहा न रही जब हम मअ़मूल के मुताबिक़ अक्तूबर 2000 ई. के दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे आ़लमी इज्तेमा में मुलतान शरीफ़ हाज़िर हुए और वहाँ नमाज़ों में मीठी मीठी प्यारी प्यारी सुन्नत मुकब्बिरीन की बजाए लौडिस्पीकर इस्तेमाल होते देखा"।

(लौडिस्पीकर पर नमाज़ ...., सफ़ा 5)

इस के बाद की दास्तान मुख़्तसर येह है कि हज़रत अल्लामा मुहम्मद हसन अली साहब क़िबला अपने घर तशरीफ़ लाए और आराम की ग़र्ज़ से सो गए, फिर उसके बाद क्या हुआ उन्हीं की ज़बानी सुनिये......लिखते है......

"आँख लगी तो हुज़ूर सय्यदना सरकार शहज़ाद-ए-आ़ला हज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, शेखुश शुयूख़े आ़लम, मुफ़्ती-ए-आज़म, आईना-ए-जमाले ग़ौसे आज़म, मुहम्मद आलुर्रहमान अबूल बरकात, (शबीहे) मोहिय्युद्दीन जीलानी अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ रज़ा नूरी रज़वी बरेलवी कद्दासा सिर्रहुल अज़ीज़ जलाल व मलाल के आ़लम में तशरीफ़ लाए, फ़रमाया मौलवी मुहम्मद इल्यास को ख़त लिखो और लाओ मैं दस्तख़त करता हूँ । उसको मुबारकपूर वाले (मौलाना निज़ामुद्दीन) ने वरग़लाया है । (लौडिस्पीकर पर नमाज़......., सफ़ा 6)

इस ख़्वाब के बाद हज़रत अल्लामा ने जनाब इल्यास क़ादरी साहब को ख़त लिखा....उस में ख़्वाब का तज़केरा किया और हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द और चन्द दूसरे अकाबिर ओ़लमा के नमाज़ में लौडिस्पीकर के इस्तेमाल पर ना जाइज़ के फ़तवो का ज़िक्र फ़रमाया ।..........

हज़रत अल्लामा के ख़त के जवाब में इल्यास साहब ने जो ख़त लिखा उस में लौडिस्पीकर के मुतअ़ल्लिक़ कोई ज़िक्र नहीं था । अलबत्ता घूमते घूमाते, झूमते झूमाते, और चूमते चूमाते सलाम के साथ हज़रत

अल्लामा मुहम्मद हसन अली साहब के लिये दुआए थी और अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ येह एलान ज़रूर था कि......"इस से पहले कि मैं हुज़ूर सय्यदी आला हज़रत रदीयल्लाहो तआला अन्हो के मुबारक मस्लक से बाल बरार भी बहर्कूं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला मुझे मदीना मुनव्वरा में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा, जलवा-ए-महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम में शहादत अता फ़रमा दे"।

(बहवाला लौडिस्पीकर पर नमाज़....., सफ़ा 7)

आप ग़ौर फ़रमायें । जनाब इल्यास साहब से पूछा लौडिस्पीकर के बारे में जा रहा है लेकिन उनके मीठे दिमाग़ की दाद दीजिये कि उन्होंने बड़े "मीठे अन्दाज़" में लौडिस्पीकर की बात को हवा में उड़ा कर मदीना मुनव्वरा में शहादत की तमन्ना ज़हिर कर दी । ऐसा महसूस होता है कि ग़ालेबन मतलब यानी कि....उन्हें येह ड़र था कि अब पाकिस्तान के एक ज़िम्मेदार बुजुर्ग आलिमे दिन ने उनके लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाने के मुतअल्लिक़ पूछताछ शुरू कर दी है, कहीं ऐसा न हो कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाने के जुर्म में उन्हें कोई पाकिस्तान में ही क़त्ल न करदे, चुनोंचे उन्हों ने फ़ौरन इस पूछ ताछ के अचानक नाज़िल होने पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ की "अए अल्लाह अगर लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाने के जुर्म में मौत मिलनी ही है तो मुझे गुम्बदे ख़ज़रा में अता फ़रमा" !

तअज्जुब है कि "मीठे मीठे" मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी साहब जिन के इर्द गिर्द हमेशा "मीठे मीठे" इस्लामी भाईयों के "मीठे मीठे" ख़्वाबो की बारात मौजूद रहती है, आख़िर उन्हों ने अपनी ही तहरीक के एक हमदर्द, हामी व सरप्रस्त, जय्यद आलिमे दीन हज़रत अ़ल्लामा हसन अली साहब क़िबला के उस "मीठे मीठे" ख़्वाब पर एतेमाद क्यों नहीं किया जो उन्होंने "मीठी मीठी नींद" में हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द का देखा था । हमारा ख़्याल है कि ग़ालेबन इल्यास साहब ने एतेमाद करना इस लिये ज़रूरी नहीं समझा कि .... उस ख़्वाब में हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द ने "अमीरे अहलेसुन्नत" कहने की बजाए "मौलवी इल्यास" फ़रमाया था, जब कि तजुर्बा है कि "मीठे मीठे" गुमनाम, बे पता इस्लामी भाई जो भी ख़्वाब देखते हैं उसमें आज तक किसी भी बुजुर्ग ने उन्हें "मौलवी इल्यास" कह कर मुख़ातिब नहीं किया, हमेशा "अमीरे अहलेसुन्नत" या "हज़रत साहब" कह कर ही

ख़िताब किया है । और फिर एक बात येह भी है कि उस ख़्वाब में येह हिस्सा भी नहीं था जो दूसरे "मीठे मीठे" ख़्वाबों का ख़ास जुज़ होता है कि "मौलाना इल्यास क़ादरी को हमारा सलाम कहना" ! बल्कि हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द उस ख़्वाब में जलाल व मलाल के आलम में थे, और फ़रमा रहे थे कि मौलवी इल्यास को वरग़ला दिया गया है । अब बताईये जिस ख़्वाब में इतनी कोताहिया हो, इतनी कमीयाँ हो, भला वोह ख़्वाब कैसे एतेबार के लाएक़ हो सकता है !! (बाक़ी अल्लाह ही बेहतर जाने और फिर उसका रसूल)

आगे हज़रत अल्लामा हसन अली साहब क़िबला बयान करते है कि......."मौलाना (इल्यास साहब) ने इस मकतूबे गिरामी (यानी ख़त) के साथ ही जनाब मौलाना निज़ामुद्दीन साहब की एक किताब "लौडिस्पीकर का शरई हुक्म" भी इरसाल (रवाना) फ़रमाई.....मालूम होता है कि हज़रत मौलाना अत्तार क़ादरी सल्लमहु इसी किताब से मुतअस्सिर हुए हैं और ऐन (ख़ास तौर से) मुम्किन है कि वोह अपने दावते इस्लामी के हल्क़ा-ए-अहबाब के दबाओ से मजबूर होकर लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ने, पढ़ाने लगे हों..."।

(लौडिस्पीकर पर नमाज़....., सफ़ा 8)

हज़रत अल्लामा हसन अली साहब क़िबला, जनाब इल्यास क़ादरी और दावते इस्लामी के क़रीबी लोगों में से है येह उनके जुमले है कि....ऐन मुम्किन है कि वोह (यानी इल्यास क़ादरी साहब) अपने हल्क़ा-ए-अहबाब के दबाओ से मजबूर हो कर लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ने, पढ़ाने लगे हो.... .... हम सिर्फ़ इतना कहना चाहते है...."क्या अमीरे अहलेसुन्नत का मन्सब ऐसा ही होता है कि कोई भी दबाओं ड़ाल कर अपनी मर्ज़ी मनवाले" ! क्या इल्यास साहब किसी के भी दबाओं में आकर कुछ भी करने लग जाते है ! आख़िर क्या वजेह है कि जनाब इल्यास क़ादरी साहब ने सुन्नतों को दुनिया में आम करने के अपने दावे के बावजूद मुकब्बिर की "मीठी मीठी" सुन्नत छोड़ कर लौडिस्पीकर की "कड़वी कड़वी" बिदअत को अपनाया । आख़िर क्या वजेह है कि इल्यास क़ादरी साहब जो ख़ाने, पीने, उठने, बैठने, सोने जागने, मिस्वाक करने, लिबास पहनने.... ग़र्ज़ की हर हर बात पर सुन्नत, सुन्नत, की रट लगाते नहीं थकते, उन्हें लौडिस्पीकर की इतनी बड़ी ख़िलाफ़े सुन्नत बिदअत नज़र नहीं आई ? आख़िर क्या वजेह है कि अपने "मीठे मीठे"

इस्लामी भाईयों के बीच अमीरे अहलेसुन्नत कहलाने के बावजूद मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब की किताब को अपने बचाओ में पेश करने की ज़रूरत महसूस हुई ? आख़िर अमीर साहब ने अपनी ज़ाती तहक़ीक़ क्यों बयान न फ़रमा दी ? हमारे ख़्याल में होना तो येह चाहिये था कि जब अमीर साहब ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाना शुरू कर ही दिया था, तो ख़ूद तहक़ीक़ व दलाइल के ऐसे मज़बूत अम्बार लगा देते कि देखने वाले भी कह उठते कि "यक़ीनन येह गुफ़्तार के अमीरे अहलेसुन्नत नहीं बल्कि किरदार के भी अमीरे अहलेसुन्नत है" ।

हज़रत अल्लामा हसन अली साहब क़िबला ने अपनी उसी किताब में जो सवालात क़ायम किये है हम उन्हीं के हवाले से जनाब इल्यास क़ादरी साहब से पूछे बग़ैर नहीं रह सकते कि....."आप जो फ़रमाते है कि मैं मस्लके आला हज़रत से बाल बराबर भी बहकूँ इस से पहले मुझे मदीना मुनव्वरा में मौत आ जाए"......... ज़रा बताईये ....

१) लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाना मस्लके आला हज़रत है या न पढ़ाना ?

२) क्या मसलके आला हज़रत वोह है जो मौलाना निज़ामुद्दीन साहब समझते हैं या मस्लके आला हज़रत वोह है जो हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द समेत खुलफ़ा-ए-आलाहज़रत व अकाबिर ओलमा ने समझा ?

(लौडिस्पीकर पर नमाज़....., सफ़ा ४)

हलाँकि मामला येह है कि.... हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब शागिर्द है शारहे बुख़ारी हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ साहब अलैहिर्रहमा के और वोह शागिर्द है हुज़ूर मोहद्दिसे आज़म पाकिस्तान हज़रत अल्लामा अबूलफ़ज़ल मुहम्मद सरदार अहमद साहब रहमतुल्लाह तआला अलैह के और वोह शागिर्द है हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द मुस्तफ़ा खाँ रज़ा रहमतुल्लाह तआला अलैह के । इस तरह मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा के परपोते शागिर्द है । अब बताया जाए कि हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब और हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द में किस की हैसीयत इल्म व अमल के एतेबार से बड़ी है । जनाब इल्यास क़ादरी साहब और उनके मीठे मीठे इस्लामी भाई किस के फ़तवे को ज़्यादा अहमीयत देंगे..... हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द के फ़तवे को या मौलाना निज़ामुद्दीन साहब के फ़तवे को ?

हम अपनी इसी किताब में पहले येह बयान कर चुके है कि हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब ने जिन दलाइल पर लौडिस्पीकर के नमाज़ में इस्तेमाल को जाइज़ क़रार दिया था उन तमाम का रद्द हज़रत मुफ़्ती मुतीऊर रहमान साहब क़िबला 1990 ई. में अपनी किताब "क़ौले फ़ैसल" में कर चुके है। यानी इल्यास साहब के लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाने से 10 साल पहले। तअज्जुब है कि मौलवी इल्यास साहब ने उस किताब को बतौरे दलील पेश किया जो बहुत पहले रद्द की जा चुकी है।

अपनी गुफ़तगू ख़त्म करने से पहले हम हज़रत अल्लामा हसन अली साहब क़िबला का वोह मुतलबा ज़रूर तहरीर करना चाहेंगे जिस में वोह फ़रमाते हैं कि......... "मौलाना मुहम्मद इल्यास क़ादरी शहज़ादा-ए-आलाहज़रत व खुलफ़ा-ए-आला हज़रत के लौडिस्पीकर के मुतअल्लिक साफ़ व ज़ाहिर फ़तवों की मौजूदगी में जो लाखों नमाज़ियों की नमाज़ें बरबाद होने का वबाल अपने सर ले रहे है, तो वोह साबित करें कि ताजदारे अहलेसुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़मे हिन्द व दीगर अकाबिर ओलमा के फ़तवे ग़लत हैं, या साबित करें कि...... मौलाना इल्यास क़ादरी आज के जिन छोटे मोटे, औने पौने, मौलवियों के फ़तवों पर अमल कर रहे है वोह रज़वी सरकारों, रज़वी ताजदारों इमामे अहलेसुन्नत आलाहज़रत के प्यारों से बड़े आलिम व फ़ाज़िल, फ़क़ीह व मोहद्दिस हैं। (लौडिस्पीकर पर नमाज़....., सफ़ा 67)

हम जनाब इल्यास क़ादरी साहब और उनके मीठे मीठे "वकीलों" को मालूमात की ग़र्ज़ से येह भी बता दें कि उन्हीं के हल्क़े के एक मशहूर व मअरूफ़ आलिम, हामी व सरप्रस्ते दावते इस्लामी, साबिक़ मुनाज़िरे अहलेसुन्नत, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अब्दुल हलीम रज़वी अशरफी साहब क़िबला का फ़तवा लौडिस्पीकर पर नमाज़ के ना जाइज़ होने पर है। हमारी मालूमात की हद तक अब तक सरप्रस्ते दावते इस्लामी, अकाबिर ओलमा के लौडिस्पीकर पर नमाज़ के ना जाइज़ होने के इज्माई के फ़ैसले के हामी है और लौडिस्पीकर का नमाज़ में इस्तेमाल ना जाइज़ व गुनाह ही मानते हैं। चुनाँचे हामी-ए-दावते इस्लामी हज़रत मुफ़्ती अब्दुल हलीम साहब अपने एक हिकमतों से भरे फ़तवे में इरशाद फ़रमाते हैं ....

"…….नमाज़ में लौडिस्पीकर लगाना बिदअ़ते सय्याह् है जो सुन्नत को मिटाता है। सुन्नत येह है कि जब जमाअ़त कसीर हो तो मुकब्बिर मुतय्यन (यानी मुक़र्रर) किये जाए इसी पर तमाम ओ़लमा-ए-सलफ़ व ख़लफ़ का अ़मल रहा है, मुसलमानों को चाहिये कि नमाज़ में लौडिस्पीकर लगा कर अपनी नमाज़ों को ख़राब न करें बल्कि मुकब्बिर मुतय्यन करके मसनून तरीक़े पर अ़मल करें"। (वल्लाहो तआ़ला आ़लम)

सरप्रस्ते दावते इस्लामी का येह फ़तवा "जामेआ़ अ़रबिया" नागपूर. के दारूल इफ़्ता में फ़तवों के रजिस्टर में 1264 नम्बर के फ़तवे के तहेत मौजूद है। इसी फ़तवे को नागपूर की एक क़दीम तन्ज़ीम "सुन्नी इत्तेहादुल मुस्लेमीन" मोमिनपूरा, नागपूर ने इश्तेहार की शक्ल में छाप कर आ़म किया, जो हिन्दुस्तान की सैकड़ों मस्जिदों में फ़िरेम में लगा देखा जा सकता है।

हमारा ख़्याल है कि जनाब इल्यास क़ादरी साहब अपनी तहरीक के सरप्रस्त व ज़बरदस्त हामी-ए-दावते इस्लामी का फ़तवा ही क़ाबिले अ़मल जान लें तो काफ़ी है। जनाब इल्यास क़ादरी साहब और उन के वोह तमाम "मीठे मीठे" वकली साहेबान, जिन्हों ने बक़ौल हज़रत अल्लामा हसन अली साहब के इल्यास साहब पर लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाने के लिये इन्तेहाई ज़ोरदार अपने वज़न से भी ज़्यादा दबाओं ड़ाला है, उन्हें इस बात पर ग़ौर करना चाहिये कि……उनके ख़ास हामी व मद्दगार, क़रीबी, मोतेमद, सरप्रस्त बुजुर्ग आ़लिमे दीन हज़रत मुफ़्ती अब्दुल हलीम साहब क़िबला ने जब येह हुक्म बयान फ़रमा दिया कि ….."नामज़ में लौडिस्पीकर लगाना बिदअ़ते सय्याह है", तो अब किस तरह "मीठी मीठी" सुन्नत मुकब्बिर को छोड़ कर "कड़वी कड़वी" बिदअ़त लौडिस्पीकर, को नमाज़ जैसी अहेम ईबादत में शामिल किया जा सकता है। आख़िर इल्यास क़ादरी साहब पर ऐसा कितने पौन्ड़ वज़न का दबाओ है कि जिस से बचने के लिये वोह मीठे मीठे, इस्लामी भाईयों की नमाज़ों को बरबाद करने का गुनाह अपने सर पर उठाना ज़्यादा असान समझ रहे है ?

हम सरप्रस्ते दावते इस्लामी हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अब्दुल हलीम साहब क़िबला से जो हमारे अपने ही शहर में रहने के एतेबार से हम से

करीब भी है,.....गुज़ारिश करेंगे कि वोह इल्यास साहब को मीठे मीठे इस्लामी भाईयों की नमाज़ों को बरबाद करने से बचाए और उन्हें बिल्कुल ही मीठे मीठे अन्दाज़ में समझाए कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ बिदअ़ते सय्याह है और "बिदअ़ते सय्याह" शरीअ़त की इस्तेलाह् में गुमराही होती है । सरप्रस्ते दावते इस्लामी होने की हैसीयत से येह उनकी शरई ज़िम्मेदारी भी है कि ऐसी गुमराही के आलम में जनाब इल्यास साहब की रहनुमाई करें और उन्हें बिदअ़ते सय्याह से बचा कर "मीठी मीठी" सुन्नतों पर अ़मल पैरा करें, यही तहरीके दावते इस्लामी की हक़ीक़ी मअ़नों में सरप्रस्ती होगी ।

अल्लाह से हमारी दुआ है कि जनाब इल्यास क़ादरी साहब जो लाखों लोगों की नमाज़ों को बरबाद करने का वबाल अपने सर ले रहे है अल्लाह तआ़ला उन्हें इससे निजात अ़ता फ़रमाए और वोह सही मअ़नों में खुलूस नियत से मीठी मीठी तौबा करके लौडिस्पीकर की बिदअ़त को छोड़ दें और मुकब्बिर की "मीठी मीठी" सुन्नत को "मीठे मीठे" इस्लामी भाईयों में ख़ूब आ़म करें । अमीन

शरई कोन्सील का फैसला

पीछले दिनों लौडिस्पीकर के चन्द अक़ीदतमन्दों के ज़रिये येह ख़बर सुनने को मिली कि जानशीने मुफ़्ती-ए-आज़म, हज़रत अल्लामा अख़तर रज़ा खाँ साहब अज़हरी और हिन्दूस्तान के दूसरे मौजूदा बड़े ओ़लमा ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ने को जाइज़ क़रार दे दिया है और येह ख़बर एक सुन्नी अख़्बार "मुस्लिम टाइमस्" और महानामा "कन्जुल ईमाम" में छपी है ।

महानामा कन्जुल ईमान और मुस्लिम टाइमस् के उन शुमारों को देखा तो मालूम हुआ कि ख़बर की हैसीयत वोह नहीं है जिसे तोड़ मढ़ोड़ कर अक़ीदतमन्दाने लौडिस्पीकर लोगों में बयान कर रहे है ।

हक़ीक़त सिर्फ़ इतनी है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ हज़रत अल्लामा अज़हरी साहब क़िबला मद्दज़िल्लाहु ने चन्द मौजूदा ओ़लमा-ए-अहलेसुन्नत को लेकर एक बोर्ड क़याम किया है, जिसका नाम "शरई कोन्सील आफ़ इन्डिया"

है । इस कोन्सील का पहला फ़िक़ाही सेमीनार 3 सितम्बर 2004 को ख़ूद हज़रत अल्लामा अज़हरी साहब क़िबला की सदारत में बरेली शरीफ़ में हुआ । उस सेमीनार में दूसरे मसाइल के साथ साथ लौडिस्पीकर के मुतअ़ल्लिक़ भी चन्द बातें तय की गई और उस में सब से पहली बात जो तय हुई वोह येह ही है कि............. " लौडिस्पीकर की आवाज़ कहने वाले की अस्ल अवाज़ नहीं है, इस लिये सिर्फ़ लौडिस्पीकर से सुनाई देने वाली आवाज़ पर इक़्तेदा हम हनफ़ियों के नज़दीक सही नहीं है । बिलफ़र्ज़ येह आवाज़ अपनी हैसीयत के एतेबार से कहने वाले की आवाज़ भी हो तो भी हुक्मन येह अस्ल आवाज़ नहीं लिहाज़ा अब भी सिर्फ़ लौडिस्पीकर की आवाज़ पर इक़्तेदा दुरूस्त नहीं होगी" । (मफ़हुमन)

(बहवाला महानामा कन्जुल ईमान, शुमारा नवेम्बर 2004, सफ़ा 53)

अब बताईये इस के बाद किसी को येह कहने की गुनजाइश कहाँ रह जाती है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ समेत दूसरे बड़े ओ़लमा-ए-अहलेसुन्नत ने लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दे दी है ।

उस कोन्सील की एक क़रारदाद येह भी है कि........

"जहाँ कहीं नमाज़ में लौडिस्पीकर के इस्तेमाल पर लोग जब्र करें (यानी ज़ोर ज़बरदस्ती करें), वहाँ मुकब्बिरीन का भी इन्तेज़ाम किया जाए और मुक़तदियों को मस्अले की सूरत से आगाह करते हुए हिदायत की जाए की वोह लौडिस्पीकर की आवाज़ पर इक़्तेदा न करके मुकब्बिरीन की आवाज़ पर इक़्तेदा करें । और कहीं मुकब्बिर मुक़र्रर करने की भी सूरत न बने तो इमाम मस्अला बता दे वोह इस बिना पर इमामत से मुस्तफ़ी न हो (यानी लौडिस्पीकर की वजेह से इमामत से इस्तेफ़ा देकर मस्जिद न छोड़ दे) ।

इस क़रादाद से साफ़ ज़ाहिर है कि येह हुक्मे शरआ़ नहीं है बल्कि इमाम के लिये हालते मजबूरी में सिर्फ़ एक मशवरा है, हुक्मे शरआ़ तो यही है कि "लौडिस्पीकर पर नमाज़ दुरूस्त नहीं" । अब रहा इमाम को मशवरा देना कि महेज़ लौडिस्पीकर लगाने की कम इल्म लोगों की ज़िद पर मस्जिद न छोड़े, तो इस के लिये अर्ज़ है कि ...... वोह "इज़तेरार" के मस्अले की तरह है । जैसे किसी की भूक से जान जा रही हो तो ऐसी सूरत में हराम

लुक़मा खा सकता है । इसी तरह जहाँ मस्जिद का वहाबियों से बचाना माईक पर मौकूफ़ हो जाए वहाँ इमाम मस्जिद न छोड़े । क्योंकि येह भी देखा गया है कि फ़ित्तीन क़िस्म के लौडिस्पीकर के शैदाई नमाज़ में लौडिस्पीकर लगाने पर ब ज़िद रहते है और सुन्नी इमाम के इन्कार पर उसे हटा देते हैं और जब कोई सुन्नी इमाम लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाने के लिये राज़ी न होतो वहाबी इमाम तक ले आते हैं, और यूँ सुन्नीयों की मेहनत से हलाल रूपयों से बनाई गई मस्जिद, आसानी से वहाबियों के हाथों में चली जाती है ।

अब इस इज़्तेरार (शरई मजबूरी) को लौडिस्पीकर के जाइज़ होने की दलील समझ लेना और उसको हुज़ूर अल्लामा अज़हरी साहब क़िबला मद्दज़िल्लाहु से मन्सूब कर देना हुज़ूर अल्लामा अज़हरी साहब पर सरीह् बोहतान है ।

अब रह गया येह की लौडिस्पीकर भी रखें और मुकब्बिर भी रखें, तो हम इस की ख़ामियों, और नुक़सानात हज़रत मदनी मियाँ के बाब में तफ़्सील से बयान कर चुके है उसे एक बार फिर ग़ौर से पढ़ लिया जाए ।

येह बात ग़ौर तलब है कि हज़रत अल्लामा मदनी मियाँ साहब ने जो मुकब्बिर और लौडिस्पीकर साथ साथ रखने का हुक्म बयान किया है वोह मुतलक़न जाइज़ मान कर बयान किया है, जब कि ओलमा-ए-शरई कोन्सील ने पहले साफ़ फ़रमा दिया कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ दुरूस्त नहीं, कम इल्म अव्वाम की तरफ़ से ज़ोर ज़बरदस्ती होने पर, शरई मजबूरी के तहेत इमाम इस्तिफ़ा न दे कि, अब रूख़सत है । येह नहीं कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ पढ़ाना अब जाइज़ हो गया ! इस लिये आगे येह भी कहा गया कि...अव्वाम को मस्अला पुरज़ोर अन्दाज़ में समझाये कि लौडिस्पीकर पर नमाज़ जाइज़ नहीं । लिहाज़ा ज़ाहिर है कि येह मस्अला इज़्तेरार का है न की जाइज़ होने का । शरई मजबूरी में रूख़सत का होना और है, और ना जाइज़ काम को जाइज़ कहना और समझ लेने और है !

मौला तआला हमें अपने महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमारी नमाज़ों को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़ुबूलियत अ़ता फ़रमाए । आमीन !